चिंतन

डिलीवरी बॉयज की सुरक्षा को प्राथमिकता दें कंपनियां

इंटर्नल के स्वामित्व वाली इकाई ब्लिंकिट ने पहले दावा किया था कि वह 10 मिनट में सामान पहुंचाएगी। अब कंपनी ने डिलीवरी कर्मियों के कल्याण से जुड़ी बढ़ती चिंताओं के बीच सभी मंच से अपना '10 मिनट में' डिलीवरी का दावा हटा लिया है। कंपनी ने अपनी टैग-लाइन को 10 मिनट में 10,000 से अधिक उत्पाद पहुंचेंगे से बदलकर अब 30,000 से अधिक उत्पाद आपके दरवाजे पर पहुंचेंगे कर दिया है। हालांकि यह फैसला कर्मचारियों की हड़ताल और केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया के हस्तक्षेप के बाद लिया गया है। सरकार डिलीवरी कर्मियों की सुरक्षा को लेकर चिंतित थी। चूंकि 10 मिनट में डिलीवरी से राइडर्स की सुरक्षा को खतरा पैदा हो रहा था। इतने कम समय में सामान डिलीवर करने के लिए उन्हें तेज रफ्तार से बाइक चलानी होती है। इससे सड़क हादसों के कारण उनकी जान को खतरा हो रहा था। इसके अलावा उपभोक्ता से मिले ओटीपी के बाद ही उनका सामान डिलीवर माना जाता है। समय पर डिलीवरी न होने से राइडर्स की रैंक प्रभावित होती है। उत्तर भारत में जारी भीषण सर्दी और कोहरे के बीच ब्लिंकिट के फैसले से हजारों डिलीवरी बॉयज को बड़ी राहत मिलेगी। बता दें कि इस समय भीषण ठंड के कारण लोग घरों से बाहर निकलना ठीक नहीं समझते। ऐसे में वे घर का सामान ऑनलाइन मंचों से अधिक मंगाते हैं। इसके कारण डिलीवरी बॉयज पर समय पर सामान पहुंचाने की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। इतना कम समय होने के कारण सुबह-शाम ऑफिस के समय और रात को गिग वर्कर्स को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। ऐसे में कर्मचारियों पर भारी दबाव था, क्योंकि समय पर डिलीवरी नहीं होने से कर्मचारियों की परफॉर्मेंस प्रभावित होती थी। उन्हें अच्छी रैंक तभी मिलती थी, जब वे समय पर डिलीवरी कर उपभोक्ता के मोबाइल पर आने वाले ओटीपी को कंपनी के एप पर सेंड करते थे। ब्लिंकिट के बाद अब स्विगी और जेप्टो जैसे अन्य 'क्विक कॉमर्स' मंच भी इस कदम का अनुसरण कर सकते हैं। यह एक बड़ा बदलाव होगा, जो ऐसे कर्मचारियों को सुरक्षा प्रदान करेगा। दस मिनट में डिलीवरी के वादे के कारण गिग वर्कर्स ने देशव्यापी हड़ताल की थी, जिसने कर्मचारियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और आय की ओर ध्यान आकर्षित किया। हाल में 'एक्स' पर इटर्नल ग्रुप के सीईओ दीपिंदर गोयल ने लिखा था कि 10 मिनट में डिलीवरी का वादा सामान पहुंचाने वालों पर दबाव नहीं डालता है और न ही असुरक्षित ड्राइविंग का कारण बनता है, क्योंकि उन्हें एप पर 10 मिनट का टाइमर नहीं दिखाया जाता है। उन्होंने यह भी कहा था कि 10 मिनट में या उससे तेज डिलीवरी मुख्य रूप से स्टोर ग्राहकों के करीब होने के कारण होती है, न कि सड़क पर तेज रफ्तार से गाड़ी चलाने के कारण। यह फैसला डिलीवरी कर्मियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देता है, जो अक्सर अपनी जान जोखिम में डालकर डिलीवरी करते हैं। यह गिग वर्कर्स के अधिकारों को मजबूत करेगा, जो अक्सर अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं। कुल मिलाकर, ब्लिंकिट का '10 मिनट में डिलीवरी' का दावा हटाने का फैसला एक महत्वपूर्ण कदम है, जो डिलीवरी कर्मियों की सुरक्षा और उनके अधिकारों को प्राथमिकता देता है। इस फैसले से यह संदेश जाता है कि कंपनियों को अपने कर्मियों की सुरक्षा और अधिकारों को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि सिर्फ मुनाफे को। यह फैसला अन्य कंपनियों के लिए भी एक उदाहरण हो सकता है, जो अपने कर्मियों की सुरक्षा और अधिकारों को नजरअंदाज कर रहे हैं।

पर्व

डॉ. बलवीर आचार्य

उत्तरायण का मकर संक्रांति से प्रारम्भ

जब सूर्य की गति उत्तर की ओर होती है तब उत्तरायण (उत्तर+अयन) कहलाता है और जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर होती है तब दक्षिणायन (दक्षिण+अयन) कहलाता है। भारतीय संस्कृति में उत्तरायण केवल खगोलीय घटना नहीं, अपितु आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है। इसीलिए उत्तरायण को देवयान मार्ग, उत्तम मार्ग, प्रकाश का मार्ग कहा गया है। ऋतु का आधार कहा गया है। देवताओं का दिन-रात भी सूर्य की गति से जोड़ा गया है। मकर संक्रान्ति महज पतंग उड़ाने या पकवान खाने का दिन नहीं है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है और जब हम प्रकृति के साथ लयबद्ध होते हैं तो हमारा जीवन आनन्द और आरोग्य से भर जाता है।

जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक 'सौर वर्ष' कहते हैं और कुछ लम्बी वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथ्वी परिभ्रमण करती है, उसको 'क्रान्तिवृत्त' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं और उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गए हैं। प्रत्येक भाग व आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तब उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। सूर्य सिद्धान्त (1.12) में कहा गया है- "राश्यन्तरं यदा सूर्यः संक्रान्तिरिति कथ्यते" लोक में उपचार से पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छह मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छह मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवध को 'दक्षिणायन' कहते हैं। अयन का अर्थ होता है गति।

जब सूर्य की गति उत्तर की ओर होती है तब उत्तरायण (उत्तर+अयन) कहलाता है और जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर होती है तब दक्षिणायन (दक्षिण+अयन) कहलाता है। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखता है, उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है। उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क राशि की संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। प्राचीन भारत में उत्तरायण और मकर संक्रान्ति एक ही दिन होते थे। अयन चलन के कारण वे धीरे-धीरे अलग हुए। सामान्यतः मकर संक्रान्ति को उत्तरायण का आरम्भ माना जाता है।

खगोल विज्ञान के अनुसार सूर्य का उत्तरायण वह बिन्दु है, जब सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में अपनी अधिकतम स्थिति (मकर रेखा) से उत्तर दिशा की ओर लौटना प्रारम्भ करता है। यह घटना 21 या 22 दिसम्बर को घटित होती है। इसे शीत अयनान्त कहा जाता है। इसी दिन उत्तरी गोलार्ध में सबसे लम्बी रात होती है। यह घटना पृथ्वी के अक्षीय झुकाव (23.5°) तथा उसकी वार्षिक परिक्रमा का प्रत्यक्ष परिणाम है। इस दृष्टि से यही समय वास्तविक या खगोलीय उत्तरायण है। भारतीय पंचांग की निरयन पद्धति के अनुसार, जब सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है, तब मकर संक्रान्ति होती है। यह सामान्यतः 14 या 15 जनवरी को आती है। भारतीय ज्योतिष स्थिर नक्षत्रों को आधार मानता है। पृथ्वी की धुरी के धीमे झुकाव के कारण (अयन चलन), सूर्य का राशियों में प्रवेश क्रमशः आगे खिसकता रहता है। अयन चलन और दोनों तिथियों में अन्तर- पृथ्वी की धुरी में होने वाला अयन चलन लगभग 25,920 वर्षों में पूर्ण होता है। इसके कारण हर 72 वर्षों में लगभग 1 दिन का अन्तर पड़ता है। लगभग 1500–1700 वर्ष पूर्व मकर संक्रान्ति और शीतकालीन संक्रान्ति एक ही दिन पड़ते थे। वर्तमान में दोनों के बीच लगभग 23–24 दिनों का अन्तर है। इस परिवर्तन में लम्बा समय लगा है, परन्तु उत्तरायण का पर्व, मकर-संक्रान्ति के दिन ही मनाया जाता है। इससे सर्व साधारण की ज्योतिष-शास्त्र के प्रति अनभिज्ञता का कुछ

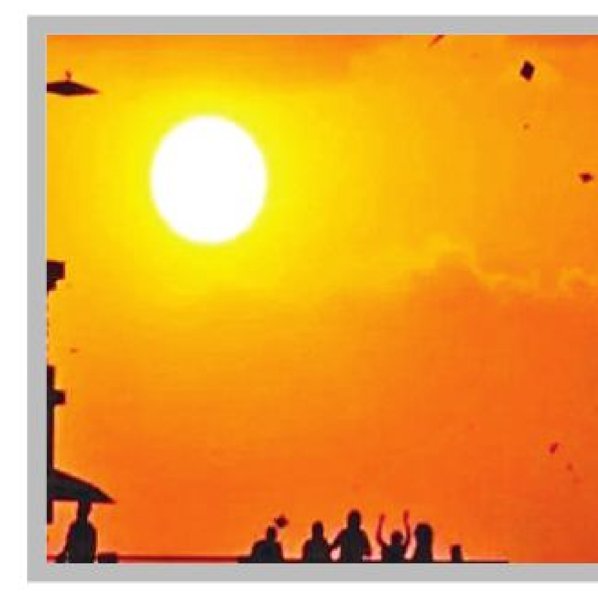

परिचय मिलता है। किन्तु शायद पर्व का महत्त्व बना रहे, यह मानकर मकर- संक्रान्ति के दिन ही पर्व मनाने की रीति चली आती हो। भारतीय संस्कृति में उत्तरायण केवल खगोलीय घटना नहीं, अपितु आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है। इसीलिए उत्तरायण को देवयान मार्ग, उत्तम मार्ग, प्रकाश का मार्ग कहा गया है। ऋतु का आधार कहा गया है। देवताओं का दिन-रात भी सूर्य की गति से जोड़ा गया है। यजुर्वेद और तैत्तिरीय संहिता में सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन को ऋतुओं के क्रम से जोड़ा गया है। छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषदों में उत्तरायण को- देवयान, ज्ञानमार्ग, प्रकाशमार्ग के रूप में वर्णित किया गया है। यहां सूर्य की गति को आत्मा की गति का रूपक बनाया गया है। गीता में भी उत्तरायण को देवयान मार्ग कहा गया है, जहां प्रकाश की दिशा में जाने वाले योगी मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

यह दर्शाता है कि उत्तरायण को- शुभ, उन्नत, और आध्यात्मिक रूप से अनुकूल समय माना जाता था। कृषि-चक्र में यह रबी फसलों की परिपक्वता का समय है। उत्तर भारत में यह संकरात, खिचड़ी, दक्षिण में पोंगल, गुजरात में उत्तरायण, पंजाब में लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व सूर्य-ऊर्जा के पुनरुत्थान का प्रतीक है। यह समय आत्म-साक्षात्कार, ध्यान और संकल्प सिद्धि के लिए सर्वोत्तम माना गया है। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दान, स्नान और जप करने का बहुत महत्व है-"मकर संक्रांतौ दानस्नानजपैः सहस्त्रगुणं फलम्"। इस दिन खिचड़ी, तिल, कम्बल और अन्न का दान किया जाता है। दान का अर्थ केवल वस्तु देना नहीं, बल्कि अपने भीतर के अहंकार का त्याग करना है। मकर संक्रान्ति के पर्व पर तिल और गुड़ का सेवन करने का भी महत्त्व है। सर्दियों के मौसम में तिल और गुड़ का मेल न केवल स्वादिष्ट होता है, अपितु यह आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों की दृष्टि से एक सर्वोत्तम भोजन है। इनके सेवन से होने वाले प्रमुख लाभ और उनके पीछे के वैज्ञानिक कारण भी बताए गए हैं। हड्डियों की मजबूती, तिल कैल्शियम का खजाना है और गुड़ इसमें मैग्नीशियम प्रदान करता है। तिल में दूध से भी ज्यादा कैल्शियम होता है। हड्डियों के घनत्व को बनाए रखने के लिए कैल्शियम और फास्फोरस की आवश्यकता होती है, जो इन दोनों के मिश्रण में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह ऑस्टियोपोरोसिस जैसी समस्याओं से बचाने में मदद करता है। गुड़ आयरन का प्राकृतिक स्रोत है, जबकि तिल में कॉपर और आयरन दोनों होते हैं। गुड़ शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाता है।

तिल में मौजूद कॉपर आयरन के अवशोषण में मदद करता है, जिससे शरीर में नया खून बनता है और थकान या कमजोरी दूर होती है। इन दोनों की प्रकृति गर्म होती है, जो शरीर को आन्तरिक गर्माहट देती है। तिल में मौजूद जिंक और सेलेनियम जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। गुड़ शरीर के श्वसन तन्त्र को साफ करने में मदद करता है, जिससे सर्दी-खांसी और संक्रमण का खतरा कम हो जाता है। गुड़ पाचन एंजाइमों को सक्रिय करता है, जिससे कब्ज की समस्या दूर होती है। तिल में मौजूद फाइबर आंतों की सफाई करने में सहायक होते हैं। तिल में 'सेसमिन' और 'सेसमोलिन' नामक तत्व पाए जाते हैं।

ये तत्व शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने और ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने में मदद करते हैं। मकर संक्रान्ति महज पतंग उड़ाने या पकवान खाने का दिन नहीं है। यह सूर्य की भान्ति तेजस्वी बनने और गुड़ के समान मधुर वाणी बोलने का संकल्प है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है और जब हम प्रकृति के साथ लयबद्ध होते हैं तो हमारा जीवन आनन्द और आरोग्य से भर जाता है।

(लेखक प्रोफेसर एमडीयू रोहतक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

दीपस्तंभ

मुरारी गुप्ता

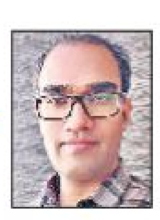

भारतीय दर्शन से ही विश्व कल्याण संभव

विश्व के हर कोने में आज अशांति का वातावरण बना हुआ है। कई देश आपस में युद्ध में उलझे हुए हैं। कथित शक्तिशाली देश दूसरे कमजोर मुल्कों पर उनके संसाधनों के लालच में बलात कब्जा करने की मंशा पाले हुए हैं। अमेरिका और वेनेजुएला का प्रकरण पूरे विश्व के सामने है। दुर्भाग्य से पूरा विश्व, संयुक्त राष्ट्र संघ और तमाम बड़े अंतरराष्ट्रीय संगठन इस पर चुप हैं। ईरान में वहां की जनता 1979 की तथाकथित इस्लामिक क्रांति के विरुद्ध बिगुल बजाए हुए है और अपनी मूल पहचान पर गर्व कर रही है। सोशल मीडिया पर ईरानी महिलाएं अपनी पहचान को खुल कर स्वीकार कर रही हैं। उधर, बांग्लादेश में वहां का अल्पसंख्यक हिंदू समूह राजनीतिक संरक्षण प्राप्त चरमपंथियों का शिकार बन रहा है। तथाकथित अमन और शांति के पैरोकार इस वक्त खामोश हैं। पश्चिम की कथित लिबरल नीतियों ने संयुक्त अरब अमीरात के शासकों को भी भयभीत कर रखा है। वे अपने छात्रों को ब्रिटेन और यूरोप के विश्वविद्यालयों में अध्ययन के लिए भेजने से डरने लगे हैं कि कहीं उनके छात्र यूरोप के विश्वविद्यालयों में लिबरल नीतियों के कारण संरक्षण पा रही जेहादी मानसिकता के शिकार नहीं हो जाएं। आज की वैश्विक परिस्थितियां यह प्रश्न खड़ा करती हैं कि क्या केवल राजनीतिक क्रांतियां, सत्ता परिवर्तन या वैचारिक कट्टरता मानव समाज को स्थायी शांति और समानता की ओर ले जा सकती हैं। ईरान में इस्लामी शासन के विरुद्ध उठती आवाजें, महिलाओं के समान अधिकारों की मांग, धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध असंतोष और सामाजिक स्वतंत्रता की आकांक्षा इस बात का प्रमाण हैं कि जब कोई विचारधारा मानव स्वभाव, विविधता और गरिमा के विपरीत जाती है, तो अंततः उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया जन्म लेती है। ईरान की वर्तमान स्थिति केवल राजनीतिक असंतोष का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक बेचैनी को भी दर्शाती है। कट्टर धार्मिक व्याख्याओं के कारण व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश, महिलाओं के अधिकारों पर प्रतिबंध, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दमन और आधुनिक जीवन मूल्यों के साथ टकराव, इन सबने समाज में असंतोष को जन्म दिया है। महिलाएं केवल वस्त्रों या बाहरी आचरण के प्रश्न पर नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व, सम्मान और समान अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह संघर्ष इस बात को रेखांकित करता है कि कोई भी व्यवस्था, जो समानता और मानवीय गरिमा को नकारती है, लंबे समय तक स्थिर नहीं रह सकती। भारत का सनातन दर्शन मूलतः "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्वमसि" जैसे सूत्रों के माध्यम से प्रत्येक जीव में एक ही चेतना को देखता है। यहां स्त्री और पुरुष के बीच मौलिक स्तर पर कोई भेद नहीं, बल्कि दोनों को सृजन के पूरक रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक काल से लेकर उपनिषदों तक गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियां इस बात का प्रमाण हैं कि ज्ञान, संवाद और आध्यात्मिक विमर्श में स्त्रियों की भूमिका केंद्रीय रही है। इसके विपरीत जब किसी धर्म या विचारधारा की संकीर्ण व्याख्या स्त्री को द्वितीय श्रेणी में धकेल देती है, तो वह समाज को भीतर से कमजोर करती है। ईरान में चल रहा संघर्ष इसी असंतुलन का परिणाम है। कट्टरता मानव का मूल स्वभाव नहीं है। मानव का मूल स्वभाव सबका साथ और सबका विश्वास और सबका कल्याण है। आज पूरा यूरोप आतंकवाद से पीड़ित है। धार्मिक उग्रवाद और वैचारिक कट्टरता ने वहाँ की सामाजिक संरचना, सुरक्षा और सांस्कृतिक संतुलन को चुनौती दी है। दूसरी ओर अमेरिका की विदेश नीति पर अक्सर यह आरोप लगता रहा है कि वह दूसरे देशों पर प्रभुत्व या नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करता है, जिससे वैश्विक असंतुलन और संघर्ष बढ़ते हैं। इसके विपरीत भारत का इतिहास देखें तो भारत ने कभी भी विस्तारवादी आक्रमण की नीति नहीं अपनाई। योग, आयुर्वेद, बौद्ध दर्शन, उपनिषद, भगवद्गीता और संत परंपरा के माध्यम से भारत का दर्शन पूरे विश्व में फैला है। आज जब विश्व वैचारिक ध्रुवीकरण और संघर्ष के दौर से गुजर रहा है, तब भारत का सनातन दर्शन एक दीपस्तंभ की तरह मार्गदर्शन करता है। ईरान की सामाजिक उथल-पुथल, यूरोप की आतंकवाद से पीड़ा और अमेरिका की प्रभुत्ववादी नीतियों के बीच भारत यह स्मरण कराता है कि शांति का मार्ग हिंसा, कट्टरता या वर्चस्व में नहीं, बल्कि समानता, सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व में है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल भारत की विरासत नहीं, बल्कि विश्व का भविष्य है। यदि मानवता को वास्तव में शांति और कल्याण की ओर बढ़ना है, तो उसे भारत के इसी सनातन दर्शन की ओर लौटना होगा, जहां सबका अस्तित्व सुरक्षित हो और सबका कल्याण सुनिश्चित हो।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

छोटे- छोटे संकल्प आत्मविश्वास बढ़ाते हैं

संकलित

दर्शन

जिस प्रकार किसी भी पूजा को प्रारंभ करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प लिया जाता है उसी प्रकार किसी भी कार्य को करने के लिए उसे करने का संकल्प लिया जाता है। बगैर संकल्प हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। संकल्प लेने के लिए इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। संकल्प के पश्चात प्रयास प्रारंभ होते हैं। जब संकल्प दृढ़ होता है तो प्रयास को हिम्मत मिलती है, विजय की राह आसान हो जाती है। हमारी सफलता हमारे संकल्प पर निर्भर करती है। हम जितना भरोसा अपने संकल्प पर करेंगे उसी अनुपात में हमें सफलता प्राप्त होगी। यदि हमारा संकल्प विजय का है तो हमारी सफलता भी निश्चित है। संकल्प सकारात्मक ऊर्जा के रूप में सह प्रेरक का काम करता है। जीवन में छोटे-छोटे संकल्प लेते रहना चाहिए। जब हम छोटे-छोटे संकल्पों को पूर्ण करते हैं तो आत्मविश्वास और हमारी क्षमता में वृद्धि होती है। दृढ़ संकल्प में असीम शक्ति होती है, जो व्यक्ति को किसी भी प्रकार की बाधाओं से जूझने में सक्षम बनाती है। हालांकि, संकल्प लेकर उन्हें भूलना भी आम बात है। अक्सर हम देखते हैं कि नशे के आदी लोग रोज संकल्प लेते हैं कि वे अब आगे से नशा नहीं करेंगे, किंतु वे ऐसा नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उनके संकल्प में दृढ़ता की कमी होती है। दृढ़ संकल्प शक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करने का मूल मंत्र है। जो संकल्प के साथ जीता है वह साधक होता है। कहते हैं कि एक सफल और असफल व्यक्ति के बीच में न तो योग्यता का अंतर होता है और न ही ज्ञान का, बल्कि अंतर है तो केवल दृढ़ संकल्प का और यही निर्णायक सिद्ध होता है।

भगवान या भाग्य को दोष नहीं देना चाहिए

संकलित

प्रेरणा

एक बूढ़ी महिला गौतम बुद्ध के पास पहुंची। उस महिला की बुद्ध के लिए गहरी आस्था थी। दरअसल, उस महिला के बेटे की मृत्यु हो गई थी। महिला बहुत दुखी थी और उसने बुद्ध से कहा कि आप मेरे बच्चे को जीवित कर दीजिए। महिला को लग रहा था कि बुद्ध उसके बेटे का जीवन बचा सकते हैं। बुद्ध ने महिला की बात सुनी और कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा कि ठीक है, मैं ऐसा कर दूंगा, लेकिन तुम्हें किसी ऐसे घर से मुट्ठी भर सरसों के दाने लेकर आना है, जहां कभी किसी की मौत न हुई हो। जिस परिवार ने किसी की मृत्यु का दुख नहीं देखा है, वहां से सरसों ले आओ। महिला ने सोचा कि ये तो छोटा सा काम है। बूढ़ी महिला गांव की ओर चल दी और एक-एक घर में जाकर पूछने लगी। महिला जिस घर में जाती, वहां कहती कि अगर आपके घर में कभी किसी की मृत्यु न हुई हो तो एक मुट्ठी सरसों के दाने दे दीजिए। गांव के सभी लोगों का यही जवाब रहता था कि हमारे घर में मृत्यु तो हुई है। कुछ लोगों की बढ़ी उम्र में हुई है तो किसी की असमय हुई। जब सभी घरों से ऐसे ही उत्तर मिल रहे थे तो महिला समझ गई कि बुद्ध ने मुझे जरूर कुछ सोचकर ही भेजा है। जब वह लौटकर बुद्ध के पास पहुंची, तब तक वह जान चुकी थी कि एक दिन मौत सबको आनी है। उसका शोक लंबे समय तक नहीं मनाना चाहिए।

अंतर्मन

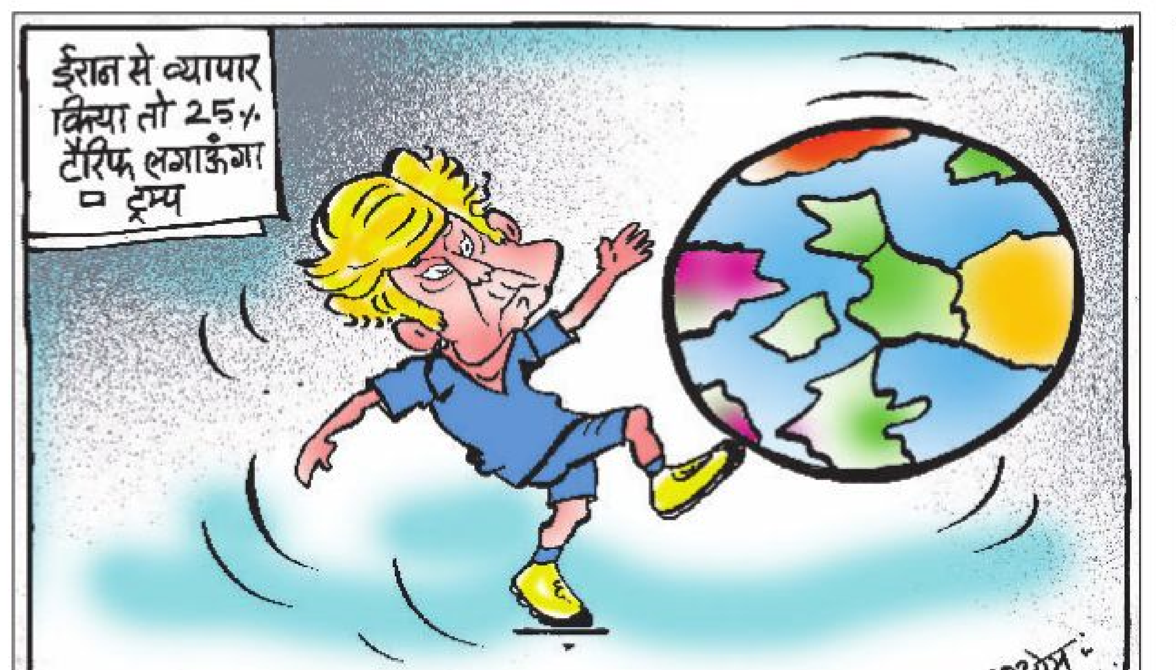

आज की पाती

बेटियों की लोहड़ी भी जरूर मनाएं

भारत का प्रसिद्ध त्योहार लोहड़ी हमें बुराई और अनैतिक कामों की राह पर न जाने का संदेश देता है। लोहड़ी से जुड़ी एक कहानी यह भी है कि मुगल शासक अकबर के शासनकाल में पंजाब में दुल्ला भट्टी नाम का एक युवक था। इन्होंने लड़कियों की सुरक्षा के लिए काम किया था। पाकिस्तान में स्थित संदलबार क्षेत्र में लड़कियों की खरीद-फरोख्त उस वक्त होती थी। दुल्ला भट्टी ने इस घटिया कारोबार का भांडा फोड़ा था और लड़कियों की रक्षा की थी। दुल्ला भट्टी के इस महान काम के कारण इसे नायक की उपाधि भी दी गई। इसलिए लोहड़ी के दिन दुल्ला भट्टी को याद किया जाता है। बहरहाल, आज जरूरत इस बात की है कि संकीर्ण सोच छोड़कर बालिकाओं का सम्मान किया जाए।

- सुरेश ठाकुर, बिलासपुर

X ट्रेंड

इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात बढ़ा

2025 में इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया, जिससे रोजगार सृजित हुए और विदेशी मुद्रा का प्रवाह बढ़ा। 2026 में भी यह गति जारी रहेगी क्योंकि चार सेमीकंडक्टर संयंत्र व्यावसायिक उत्पादन शुरू कर देंगे।

- अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय सूचना मंत्री

सीएसपीओसी की मेजबानी

समृद्ध संसदीय लोकतंत्र का गौरवशाली प्रतीक भारत, 14 से 16 जनवरी 2026 तक राष्ट्रमंडल के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के 28वें सम्मेलन (सीएसपीओसी) की मेजबानी करने जा रहा है।

- ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

ड्रेनेज व्यवस्था विकसित

दिल्ली में जलभराव की दशकों पुरानी समस्या को लेकर दिल्ली सरकार का काम सिर्फ बरसात के दिनों तक सीमित नहीं है। सालभर, लगातार और सिस्टम के साथ एक मजबूत ड्रेनेज व्यवस्था विकसित की जा रही है। इसी दिशा में 4 बड़े ट्रंक ड्रेनों का निर्माण युद्धस्तर पर चल रहा है।

- रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली

बजट पूर्व चर्चा

नारी शक्ति ही प्रदेश की प्रगति का आधार है। हमारी सरकार इसी विजन को विकास की धुरी बना रही है। इसी विजन को लेकर आज मुख्यमंत्री कार्यालय में आगामी बजट के संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों से आई महिला प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व चर्चा की।

- भजनलाल, सीएम, राजस्थान

करंट अफेयर

सिंगापुर में दुर्लभ हिमालयी गिद्ध को बचाया गया

सिंगापुर में एक राजमार्ग से 'जल्द ही संकटग्रस्त होने वाली' श्रेणी में शामिल एक दुर्लभ हिमालयी गिद्ध को बचाया गया है और उसे छोड़ने से पहले स्वस्थ अवस्था में लाया जा रहा है। यहां एक पशु कल्याण समूह ने यह जानकारी दी। एनिमल कंसर्न्स रिसर्च एंड एजुकेशन सोसाइटी (एसीआरईसी) ने 11 जनवरी को परेशान हालत में दिखे प्रवासी पक्षी को बचाया था। समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कलई वनन बालकृष्णन ने यह जानकारी दी। फिलहाल एसीआरईसी की पशु चिकित्सा टीम गिद्ध की देखभाल कर रही है। टीम ने गिद्ध के पूरी तरह स्वस्थ होने और फिर उसे जंगल में छोड़े जाने की उम्मीद जताई है। 'द स्ट्रेट्स टाइम्स' ने सोमवार को एक खबर में बालकृष्णन के हवाले से कहा, 'शरीर में पानी की कमी, कमजोरी और लंबी यात्रा के कारण थकान जैसी शुरुआती स्वास्थ्य समस्याएं गिद्ध में दिख रही हैं।' उन्होंने कहा कि 11 जनवरी की दोपहर को एक व्यक्ति ने एसीआरईसी को गिद्ध के बारे में जानकारी दी थी, जिसके बाद तीन सदस्यीय बचाव टीम ने राजमार्ग पर घूम रहे गिद्ध को सुरक्षित पकड़ लिया। इससे पहले वह एक नहर में अटका हुआ था। हिमालय के ऊंचाई वाले इलाकों में आम तौर पर पाए जाने वाले हिमालयी गिद्ध सिंगापुर में बहुत कम देखे जाते हैं।

ऑफ बीट

बढ़ापे में दिमाग दुरुस्त रखने में जैविक घड़ी की अहम भूमिका

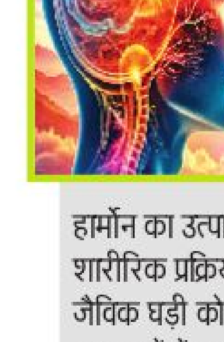

मानव शरीर में मौजूद 24 घंटे की जैविक घड़ी चुपचाप यह समन्वय करती है कि हम कब सोते हैं, जागते हैं, खाते हैं और आराम करते हैं। यह आंतरिक समय प्रबंधन प्रणाली अंगों और हार्मोन को तालमेल बैठाकर काम करने में मदद करती है। हालांकि, जब जैविक घड़ी अव्यवस्थित हो जाती है, तो इसके प्रभाव खराब गुणवत्ता वाली नींद से कहीं अधिक व्यापक हो सकते हैं और ढलती उम्र में दिमागी सेहत में गिरावट का कारण भी बन सकते हैं। बुजुर्गों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन लोगों की जैविक घड़ी अधिक व्यवस्थित होती है, उनके डिमेंशिया की चपेट में आने का जोखिम लगभग 50 फीसदी तक घट जाता है। जैविक घड़ी सोने का समय, हार्मोन का उत्पादन, हृदयगति और शरीर का तापमान सहित कई अन्य दैनिक शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाती है। व्यवस्थित जैविक घड़ी को अक्सर नींद की खराब गुणवत्ता से जोड़ा जाता है। विभिन्न अध्ययनों में खराब गुणवत्ता वाली नींद का डिमेंशिया और दिल की बीमारियों के बढ़ते जोखिम से सीधा संबंध पाया गया है। साल 2025 में किए गए अध्ययन में प्रतिभागियों की दिल की सेहत और रक्तचाप का भी विश्लेषण किया गया, जो अन्य कारकों के साथ-साथ नींद की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

खबर संक्षेप

बंगाल में फैला जानलेवा संक्रामक रोग

कोलकाता। कुछ वर्षों के आंकड़े देखें तो पता चलता है कि देश के विभिन्न हिस्सों में संक्रामक बीमारियों का प्रकोप तेजी से बढ़ा है। पिछले साल कई तरह के संक्रामक रोग अक्सर सुर्खियों में रहे। केरल में निपाह वायरस के मामलों ने खूब परेशान किया। अब पश्चिम बंगाल में भी निपाह का संक्रमण है। 70 फीसदी रोगियों की मौत होती है।

अब पॉलीट्रॉमा आईसीयू में पानी, 14 को निकाला

जयपुर। यहां के सवाई मानसिंह अस्पताल के पॉलीट्रॉमा आईसीयू के पास सोमवार देर रात को पाइप से पानी का रिसाव हो गया, जिससे पूरे आईसीयू में पानी भर गया। कर्मचारियों ने सूचना प्रशासन को दी। प्रशासन ने 14 गंभीर मरीजों को दूसरी जगह ट्रांसफर किया। इस अस्पताल में 3 महीने पहले न्यूरो आईसीयू में आग से 6 लोगों की मौत हो गई थी।

उपराष्ट्रपति ने नशामुक्त परिसर की शुरुआत की

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने नशीले पदार्थों के इस्तेमाल से बचाने,विकसित तथा आत्मनिर्भर भारत दृष्टियोजना साकार करने के निरंतर सामूहिक प्रयास की जरूरत पर जोर देते हुए मंगलवार को दिल्ली विश्वविद्यालय में नशामुक्त परिसर अभियान आरंभ किया। साथ ही ई-संकल्प मंच और मोबाइल एप्लिकेशन का भी शुभारंभ किया।

राज ठाकरे के बयान पर भड़के अयोध्यावासी

अयोध्या। यहां के साधु-संत और स्थानीय लोगों ने बताया कि राज ठाकरे को ऐसी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूरे देश में हिंदी भाषा बोली जाती है। जबरदस्ती किसी भी भाषा को नहीं बुलवाया जा सकता है। राज का बयान बेहद ही निंदनीय है और उनको माफी मांगनी चाहिए। अगर राज ऐसा करेंगे, तोमहाराष्ट्र के लोगों के साथ भी ऐसा होगा।

सलेम अंतरराष्ट्रीय अपराधी, 2 दिन पैरोल दें

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने मंगलवार को बंबई हाई कोर्ट को बताया कि 1993 के मुंबई बम धमाका मामले में दोषी गैंगस्टर अबू सलेम एक अंतरराष्ट्रीय अपराधी है। उसे पुलिस सुरक्षा के साथ केवल दो दिन की आपातकालीन पैरोल दी जा सकती है। सलेम ने अपने बड़े भाई की मृत्यु का हवाला देकर 14 दिन की पैरोल मांगी थी। इसी पर सवाल उठा है।

मराठी अस्मिता और गठबंधन के मुद्दे पर यहां गरमाई सियासत

प्रचार समाप्त, राजनीतिक पार्टियों के बीच आरोप-प्रत्यारोप सातवें आसमान पर पहुंचे, सभी बता रहे अपनी दावेदारी

एजेंसी ▶▶ मुंबई

महाराष्ट्र की राजनीति में नगर निगम चुनाव इस बार सत्ता की कठिन परीक्षा बन गया है। 15 जनवरी को राज्य की 29 नगर निगमों में मतदान होना है, जिसे लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष आमने-सामने हैं। मराठी अस्मिता, गठबंधन की मजबूती और बीएमसी की कुर्सी समेत कई मुद्दों को लेकर राजनीतिक पार्टियों के बीच आरोप-प्रत्यारोप सातवें आसमान पर पहुंच गया है। आज यानी मंगलवार को इस चुनावी अभियान के प्रचार-प्रसार का आखिरी दिन है। ऐसे में राजनीतिक पार्टियां चुनावी रण में अपनी-अपनी दावेदारी प्रबल बताने में लगी हुई हैं। प्रचार के आखिरी दौर में भी कई बड़े नेता मैदान में उतर चुके हैं, जिसके चलते सियासी तापमान अपने चरम पर है। बता दें कि मतदान को देखते हुए राज्य सरकार ने 15 जनवरी यानी गुरुवार को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है। वोटिंग सुबह 7:30 बजे से शाम 5:30 बजे तक होगी और नतीजे 16 जनवरी को आएंगे।

15 को मतदान 29 नगर निगमों में चुनाव

227 वार्डों में बीएमसी में मतदान, 1,700 उम्मीदवार मैदान में

7.30 बजे सुबह से होगी वोटिंग

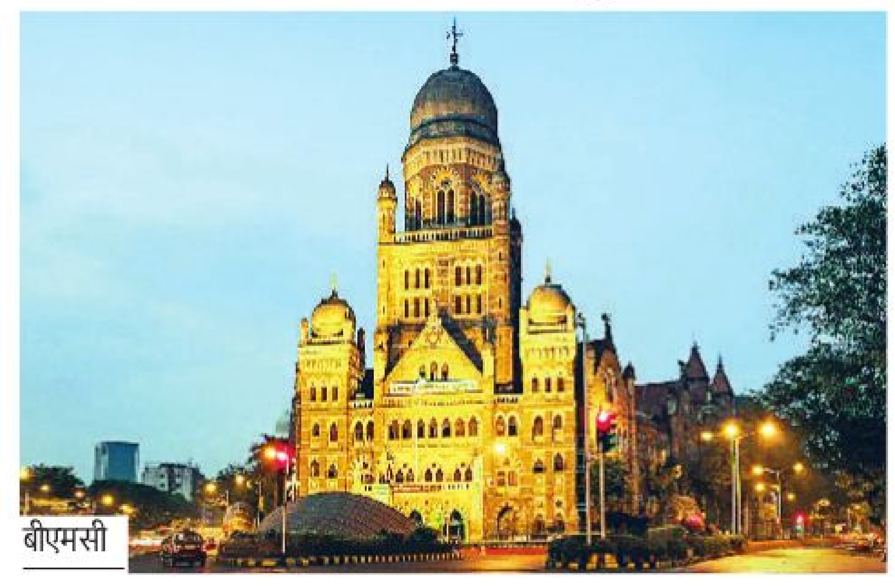

बीएमसी

बीएमसी में बड़ी लड़ाई

पहले महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई की बात करें तो मुंबई की सबसे बड़ी नगर निकाय बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के लिए मुकाबला काफी दिलचस्प है। यहां 227 वार्डों के लिए करीब 1,700 उम्मीदवार मैदान में हैं। बीएमसी चुनाव को सत्ता की सेमीफाइनल लड़ाई माना जा रहा है।

नागपुर में सीएम फडणवीस ने किया रोड शो

चुनाव प्रचार प्रसार के आखिरी दिन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नागपुर में जबरदस्त रोड शो किया। वे बुलेट बाइक पर सवार होकर रैली में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि चुनाव के बाद मुंबई में महायुति का मेयर बनेगा। सीएम फडणवीस ने साफ कहा कि बीएमसी की कमान मराठी हाथों में ही रहेगी। उन्होंने विपक्ष को जवाब देते हुए कहा कि मराठी समाज खतरे में नहीं है, बल्कि कुछ राजनीतिक दलों का अस्तित्व खतरे में है। उनका कहना था कि महाराष्ट्र किसी एक पार्टी का नहीं, बल्कि सभी मराठियों का है।

मराठी लोगों पर खतराः राउत

दूसरी ओर शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने फडणवीस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा की वजह से ही मराठी लोग खतरे में है। राउत ने कहा कि ठाकरे परिवार किसी भी चुनौती से निपटने में सक्षम है और उन्हें डराने की जरूरत नहीं।

पुणे में शिवसेना अकेले मैदान में

पुणे नगर निगम चुनाव में एकनाथ शिंदे गुट की शिवसेना भाजपा से सीटों पर सहमति नहीं बनने के कारण अकेले चुनाव लड़ रही है। पार्टी नेता नीलम गोर्हे ने दावा किया कि शिवसेना इतनी सीटें जीतेगी कि नगर निगम के फैसलों में उसकी अहम भूमिका होगी।

शाह ने गांधीनगर में 267 करोड़ की परियोजनाओं का उद्घाटन- शिलान्यास

सनातन धर्म को मिटाना आसान नहीं, ये सूरज और चांद की तरह सदैव अमर रहेगा

एजेंसी ▶▶ गांधीनगर

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि भारत के सनातन धर्म, संस्कृति, लोगों की आस्था को खत्म करना आसान नहीं है। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने सोमनाथ मंदिर के बीती सदियों में बार-बार तोड़े जाने और 16 बार पुनर्निर्माण का हवाला दिया। शाह ने कहा कि जिन लोगों ने सोमनाथ मंदिर पर हमले किए, वो मिट गए, लेकिन मंदिर आज भी उसी जगह पर पूरे गर्व के साथ खड़ा है। केंद्रीय गृह मंत्री शाह गुजरात दौरे पर हैं। मंगलवार को अमित शाह ने गांधीनगर में 267 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि 16 बार तबाह किए जाने के बावजूद सोमनाथ मंदिर 1000 साल बाद भी पूरे गर्व और सम्मान के साथ खड़ा है और इसके शीर्ष पर धर्मध्वजा लहरा रही है। गृह मंत्री शाह ने कहा कि ये पूरी दुनिया के लिए संदेश है कि भारत के सनातन धर्म, संस्कृति और लोगों की आस्था को मिटाना आसान नहीं है। यह चांद और सूरज की तरह शाश्वत और अमर है। सोमनाथ मंदिर भारत की आस्था, विश्वास और गर्व का प्रतीक है।

पीएम ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का शुभारंभ किया था

बीती 11 जनवरी को पीएम मोदी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का शुभारंभ किया था। यह पर्व सोमनाथ मंदिर पर महमूद गजनी के हमले और मंदिर के पुनर्निर्माण के 1000 हजार साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। महमूद गजनी ने साल 1026 में सोमनाथ मंदिर पर हमला किया था। केंद्रीय गृह मंत्री ने बताया कि पीएम मोदी के नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर के भव्य कॉरिडोर का निर्माण किया जाएगा। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व पूरे सालभर देश में मनाया जाएगा। इस दौरान कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे और लोगों को जागरूक किया जाएगा।

मंदिर पर नहीं हमारी आस्था पर किया था हमला

शाह ने कहा कि एक हजार साल पहले महमूद गजनी ने सोमनाथ मंदिर पर हमला किया और इसे तोड़ा। उसके बाद अन्य हमलावरों जैसे अलाउद्दीन खिलजी, अहमद शाह, महमूद बेगड़ा और औरंगजेब ने भी हमले किए, लेकिन हर हमले के बाद मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। हमलावर तबाही में विश्वास रखते थे और मंदिर बनाने वालों का विश्वास रचना में। आज 1000 साल बाद हमलावर मिट गए हैं, लेकिन सोमनाथ मंदिर अभी भी पूरे गर्व के साथ खड़ा है। शाह ने कहा कि सोमनाथ मंदिर पर हमला सिर्फ एक मंदिर पर हमला नहीं था बल्कि ये हमारी आस्था, विश्वास और आत्म सम्मान पर हमला था। हमले का जवाब दूसरा हमला नहीं हो सकता। इसका उत्तर आत्म-सम्मान में छिपा है।

यहां पर विश्वस्तरीय व्यवस्था होगी,अध्ययन की सुविधा भी

शाह ने कहा कि दुनिया भर की बीएसएल लैब्स का अध्ययन करके यह तैयार की जा रही है। यहां पशुओं से होकर मानव तक पहुंचने वाले रोगों का भी अध्ययन करने की विश्वस्तरीय व्यवस्था होगी। एक अध्ययन के अनुसार 60 से 70 प्रतिशत बीमारियां पशुओं से होकर इंसान तक पहुंचती हैं, इसलिए भारत ने वन हेल्थ मिशन के माध्यम से मानव और पशु दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का कार्यक्रम शुरू किया है।

गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर समग्र विकास का आधार बनेगा

शाह ने गांधीनगर में गुजरात बायोटेक्नॉलजी रिसर्च सेंटर की बीएसएल-4 बायो-कंटेनमेंट फैसिलिटी का शिलान्यास किया। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आज गुजरात की धरती से हम भारत की स्वास्थ्य सुरक्षा, बायो सेफ्टी और बायोटेक विकास के एक नए युग की शुरुआत कर रहे हैं। गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर में बीएसएल-4 बायो-कंटेनमेंट फैसिलिटी के शिलान्यास से आगामी दिनों में समग्र भारत के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र का एक मजबूत सुरक्षा कवच बनकर उभरेगा।

पुणे के बाद भारत की दूसरी उच्च स्तरीय लैब होगी

शाह ने कहा कि पुणे की वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट के बाद यह भारत की दूसरी उच्च स्तरीय लैब होगी। परंतु, किसी राज्य सरकार द्वारा बनाई जा रही यह पहली लैब है, जिसका श्रेय गुजरात को जाता है। एक विशाल कॉम्प्लेक्स में 362 करोड़ की लागत से 11 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में देश की जैविक सुरक्षा का एक मजबूत किला बनने जा रहा है। हम दुनिया में हो रहे अत्याधुनिक रिसर्च से कई साल तक पिछड़े हुए थे, लेकिन बीएसएल-4 बायो-कंटेनमेंट फैसिलिटी से बायो-टेक्नॉलजी क्षेत्र में काम करने वाले युवाओं को नए मौके मिलेंगे और भारत इस क्षेत्र में आगे निकल पाएगा।

'जन नायकन' रोकने का प्रयास हो रहा

प्रधानमंत्री तमिल जनता की आवाज को नहीं दबा सकते

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

थलापति विजय की आखिरी फिल्म मानी जा रही है 'जन नायकन' रिलीज से पहले ही विवादों में फंसी है। अपने सेंसर सर्टिफिकेट को लेकर फिल्म के मेकर्स अब सुप्रीम कोर्ट पहुंच चुके हैं। इस बीच विजय की फिल्म को तमिल सिनेमा के तमाम कलाकारों का समर्थन मिल रहा है। अब इस मामले में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस पार्टी के सांसद राहुल गांधी ने भी प्रतिक्रिया दी है। राहुल ने विजय की 'जन नायकन' की रिलीज अटकने पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। राहुल ने इसको लेकर अपने एक्स पर एक पोस्ट की है। इस पोस्ट में राहुल ने पीएम मोदी का जिक्र किया है। पोस्ट में राहुल ने लिखा कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा 'जन नायकन' को रोकने का प्रयास तमिल संस्कृति पर हमला है। पीएम मोदी आप तमिल जनता की आवाज को दबाने में कभी सफल नहीं होंगे।

पिछले हफ्ते मद्रास हाईकोर्ट ने दिया था यह आदेश

'जन नायकन' की रिलीज का मामला अब सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर पहुंच चुका है। इससे पहले पिछले सप्ताह मद्रास हाईकोर्ट ने फिल्म को यूए सर्टिफिकेट जारी करने के निर्देश दिए थे। अदालत ने साफ किया था कि सीबीएफसी के चेयरपर्सन का फिल्म को रिवाइजिंग कमेटी के पास भेजने का अधिकार अवैध था। कोर्ट के मुताबिक, जब चेयरपर्सन ने सिफारिश की थी कि सर्टिफिकेट कट के बाद जारी किया जाएगा, तब उनका ये अधिकार खत्म हो गया था। निर्माताओं ने सर्टिफिकेट देने की मांग के साथ अदालत का रुख किया था।

अब सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामला

अब मद्रास हाईकोर्ट के इस फैसले को चुनौती देते हुए मामला सुप्रीम कोर्ट में पहुंच गया है। उच्चतम न्यायालय में इस चुनौती के पीछे मुख्य दलील ये है कि फिल्म को रिलीज करने से पहले सभी प्रॉसेस का पालन करना जरूरी है। साथ ही किसी भी तरह के सर्टिफिकेट जारी करने या रोकने के फैसले पर रिव्यू की संभावना बनी रहनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल मामले की सुनवाई के लिए तारीख तय नहीं की है, लेकिन इस कदम ने फिल्म के रिलीज को लेकर अनिश्चितता बढ़ा दी है।

नितिन नबीन 20 जनवरी को संभालेंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार

भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नबीन 19 जनवरी को अध्यक्ष पद के लिए भरेंगे नामांकन

युवा नेता नबीन वर्तमान अध्यक्ष जेपी नड्डा की जगह बनेंगे पार्टी अध्यक्ष

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन आगामी 20 जनवरी को जेपी नड्डा की जगह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद संभाल सकते हैं। पार्टी सूत्रों का कहना है कि नबीन 19 जनवरी को राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद हेतु नामांकन दाखिल करेंगे। इसके अगले दिन उनकी राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर नियुक्ति हो जाएगी। नबीन के निर्विरोध चुने जाने की प्रबल संभावना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस अवसर पर खासतौर पर मौजूद रहेंगे। इस मौके पर भाजपा के वरिष्ठ राष्ट्रीय पदाधिकारी, केंद्रीय मंत्रियों, भाजपा शासित राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री भी मौजूद

रहेंगे।

सूत्रों का कहना है कि अध्यक्ष पद के लिए तीन सेट में नामांकन दाखिल किए जाएंगे। एक सेट पर 20 से अधिक निर्वाचित प्रदेश अध्यक्षों के हस्ताक्षर होंगे। दूसरे सेट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राजनाथ सिंह, अमित शाह और जेपी नड्डा के हस्ताक्षर होंगे। तीसरा सेट भाजपा राष्ट्रीय परिषद के सदस्यों का होगा। यदि केवल एक ही नामांकन आता है, तो उसी दिन अध्यक्ष की घोषणा कर दी जाएगी। इस बीच, भाजपा अध्यक्ष चुनाव की तैयारियों को लेकर जेपी नड्डा की अध्यक्षता में एक अहम बैठक भी हुई। बैठक में नितिन नबीन के साथ बी एल संतोष, सुनील बंसल, अरुण सिंह और तरुण चुघ मौजूद रहे।

भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन अगले हफ्ते पार्टी अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन दाखिल कर सकते हैं। बिहार से पांच बार के विधायक नितिन नबीन को पिछले साल 14 दिसंबर को भाजपा का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। सूत्रों के मुताबिक, नितिन नबीन 19 जनवरी को नामांकन दाखिल करेंगे और 20 जनवरी को उनके निर्विरोध चुने जाने की संभावना है। कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त होने के बाद से नबीन अलग-अलग राज्यों का दौरा कर रहे हैं। वह लगातार पार्टी के कार्यकर्ताओं से मिल रहे हैं। नबीन पहले पार्टी में कई अहम संगठनात्मक पदों पर रह चुके हैं। इसमें भारतीय जनता युवा मोर्चा के बिहार अध्यक्ष का पद भी शामिल है।

पार्टी सूत्रों के मुताबिक, उनके निर्विरोध चुने जाने की पूरी संभावना है, क्योंकि किसी अन्य नेता के मैदान में उतरने की संभावना बेहद कम है।

लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने संसदीय शिष्टमंडल से की भेंट

भारत आए दक्षिण अफ्रीका और कैरीबियाई देश ग्रेनेडा के संसदीय शिष्टमंडल से की चर्चा

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने 28वें कॉमनवेल्थ स्पीकर्स एंड प्रेसाइडिंग ऑफिसर्स कॉन्फ्रेंस के अवसर पर भारत आए दक्षिण अफ्रीका और कैरीबियाई देश ग्रेनेडा के संसदीय शिष्टमंडल से भेंट की।

बिरला ने दक्षिण अफ्रीकी संसद की नेशनल काउंसिल ऑफ प्रोविंसेज के डेप्युटी चेयरपर्सन एल. गोवेंडर, उपाध्यक्ष डॉ. एनेली लॉट्रिएट और ग्रेनेडा की सीनेट अध्यक्ष डॉ. डेसिमा विलियम्स के नेतृत्व में आए शिष्टमंडल का आत्मीय स्वागत किया। शिष्टमंडल ने बिरला के साथ पारंपरिक रूप से लोहड़ी पर्व मनाया और अग्नि पूजन की परंपरा निभाई। बिरला ने भारतीय संस्कृति और पर्वों की महत्ता बताते हुए कहा कि भारतीय त्योहार और सांस्कृतिक संवाद विश्वबंधुत्व, आपसी सम्मान और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं। बैठक में भारत-दक्षिण अफ्रीका के बीच सौहार्द्रपूर्ण द्विपक्षीय संवाद हुआ, जिसमें लोकतांत्रिक मूल्यों, संसदीय सहयोग, आपसी समझ को और मजबूत करने पर चर्चा की। दोनों पक्षों ने ऐतिहासिक मैत्रीपूर्ण संबंधों और रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

बिरला ने कहा कि महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला की विरासत दोनों देशों को लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समावेशन के मूल्यों से जोड़ती है। ब्रिक्स और जी20 जैसे बहुपक्षीय मंचों पर भारत–दक्षिण अफ्रीका सहयोग को दोनों लोकतंत्रों के बीच विश्वास और साझेदारी की मजबूत नींव बताया गया। संसदीय शिष्टमंडलों के नियमित आदान-प्रदान और विधायी सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने पर भी सहमति व्यक्त की।बैठक में भारतीय संसद की प्राइड संस्था के माध्यम से सांसदों और संसदीय अधिकारियों के प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई। बिरला ने ग्रेनेडा की सीनेट अध्यक्ष डॉ. डेसिमा विलियम्स से भी मुलाकात की। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संसदीय वार्ता में कई महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श हुआ।

राजोरी के पास फिर दिखे ड्रोन सेना ने बरसाई गोलियां तो भागे

एजेंसी ▶▶ राजोरी

जिले में नियंत्रण रेखा से सटे इलाकों में मंगलवार शाम को एक बार फिर पाकिस्तानी ड्रोन देखे गए। सेना ने ड्रोन पर गोलीबारी की तो वे गायब हो गए। माना जा रहा है कि गोली से, ड्रोन या तो कहीं गिरे हैं या फिर पाकिस्तान की तरफ वापस चले गए। रविवार शाम को राजोरी, पुंछ और सांबा जिले में पाकिस्तानी ड्रोनों की घुसपैठ हुई थी। शाम 7 बजे से साढ़े सात बजे के बीच पहले राजोरी के केरी सेक्टर के डूंग गाला और उसके बाद टंडीकस्सी में ड्रोन देखे गए। केरी के डूंगा गाला में दो से तीन ड्रोन दिखते ही सेना ने उनपर गोलियां दागीं। इसके बाद ड्रोन गायब हो गए।

पुंछ के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ट्रेकिंग, हाईकिंग और कैंपिंग पर बैन

पुंछ जिले के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की ट्रेकिंग, हाईकिंग और कैंपिंग जैसी गतिविधियों पर मंगलवार को तत्काल रोक लगा दी गई है। ये आदेश अगले दो महीने तक लागू रहेंगे। डीसी कार्यालय पुंछ से जारी आदेश में का गया है कि सुरक्षा व खूफिया एजेंसियों की तरफ से सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए कहा गया है कि जिले की सीमा में कुछ ऊंचाई वाले स्थानों पर किसी की व्यक्तिगत व दलों की आवाजाही जनसुरक्षा के लिए खतरा बन सकती है।

भाजपा ने घटनाक्रमों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ममता पर साधा निशाना

टीएमसी अब 'डेमोक्रेसी' से हटकर 'मोबोक्रेसी' के रास्ते पर चलेगीः भाजपा

टीएमसी ने कई बार यह प्रमाणित किया है कि उसका स्वभाव लोकतंत्र के अनुकूल नहींः तुहिन सिन्हा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नई दिल्ली

भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस पर बार बार लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कुचलने का आरोप लगाया है। पार्टी ने आईपैक पर ईडी की रेड रोकने की कोशिश, बीएलओ की आत्महत्या, उत्तरपारा गैंगरेप और महिला आयोग की सदस्य को धमकाने जैसी घटनाएं का जिक्र करते हुए कहा टीएमसी अब एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि अपराधियों को संरक्षण देने वाला माफिया तंत्र बन चुकी है, जहां लोकतंत्र की जगह 'मोबोक्रेसी' ने ले ली है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता तुहिन सिन्हा ने नई दिल्ली स्थित पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए ये बातें कही। सिन्हा ने कहा कि ममता बनर्जी ने पिछले गुरुवार को ईडी की पूरी प्रक्रिया को बाधित करते हुए जिस तरह हिंसक रास्ता चुना, उससे उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को एक बहुत स्पष्ट संदेश दे दिया है कि टीएमसी अब 'डेमोक्रेसी' से हटकर 'मोबोक्रेसी' के रास्ते पर चलेगी। टीएमसी को जमीनी हकीकत का पूरा अंदाजा है कि किस तरह लोगों में आक्रोश है और किस तरह एंटी-इन्कम्बेंसी चरम पर पहुंच चुकी है।

सिन्हा ने कहा कि बीते कुछ वर्षों में टीएमसी ने कई बार यह प्रमाणित किया है कि उसका स्वभाव आधुनिक लोकतंत्र के अनुकूल नहीं है। जिस तरह टीएमसी ने बार-बार लोकतांत्रिक प्रक्रिया को रौंदने का प्रयास किया है, उसी क्रम में पिछले 24 घंटों के दौरान दो-तीन बड़ी घटनाएं सामने आई हैं, जो टीएमसी की हिंसात्मक प्रवृत्ति को भी दर्शाते हैं और यह दिखाते हैं कि किस प्रकार टीएमसी एक आधुनिक लोकतंत्र के लिए खतरा बनती जा रही है? यह 6 दिनों से लगातार चल रहा है और इसमें एक-एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब ईडी ने आईपैक के दफ्तर में रेड की। टीएमसी स्वयं आईपैक को अपना पॉलिटिकल आर्म बताती रही है और कई वर्षों से आईपैक टीएमसी के लिए इलेक्शन मैनेजमेंट का काम देख रही थी। ऐसे में जब आईपैक के ऑफिस में रेड हुई और इस बात की जांच शुरू हुई कि कोल घोटाले में सक्रिय मनी लॉन्ड्रिंग नेटवर्क से क्या आईपैक को भी नेटवर्क का हिस्सा थी? इसी जांच के तहत ईडी कार्रवाई कर रही थी। इसी दौरान ममता कार्रवाई को रोकने का प्रयास करती हैं। सिन्हा ने कहा कि रेड के दौरान ममता वहां से कुछ फाइलें लेकर बाहर निकलती हैं, जो वर्ष 2022 की थीं, लेकिन आरोप यह लगा रही हैं कि उनके खिलाफ रेड इसलिए कराई गई ताकि 2026 के चुनाव की उनकी तैयारियों को भांपा और समझा जा सके। जबकि हकीकत यह थी कि जिन फाइलों को वे साथ लेकर निकली थीं, वे 2022 की थीं। पिछले 48 घंटों के भीतर कुछ ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जो टीएमसी की मंशा पर गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं। अब दो बड़े विषय सामने आए हैं। पहला,मुर्शिदाबाद का है, जहां एक बीएलओ ने आत्महत्या कर ली।ॉ टीएमसी ने इस मामले में भी यह आरोप लगाया कि उस बीएलओ पर वर्क प्रेशर बहुत ज्यादा था और इलेक्शन कमीशन के दबाव के कारण उसे मजबूरन आत्महत्या करनी पड़ी। लेकिन जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस दावे के बिल्कुल विपरीत हैं। हमीमुल इस्लाम बीएलओ अधिकारी के रूप में कार्यरत था। टीएमसी के एक स्थानीय नेता बुलेट खान ने उससे 20 लाख रुपए उधार लिए और बार-बार मांग करने के बावजूद पैसे वापस नहीं कर रहा था। ऐसी स्थिति में हमीमुल इस्लाम गंभीर वित्तीय दबाव और उत्पीड़न में था, और उसी दबाव के चलते उसने आत्महत्या जैसा कदम उठाया।

खबर संक्षेप

डॉलर के मुकाबले रुपया चार पैसे गिरकर 90.21 पर बंद

मुंबई। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों, मजबूत अमेरिकी मुद्रा और विदेशी कोषों की लगातार निकासी के दबाव में मंगलवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले चार पैसे गिरकर 90.21 (अस्थायी) के भाव पर बंद हुआ। विश्लेषकों ने कहा कि भू-राजनीतिक तनाव और कमजोर शेयर बाजारों ने भी भारतीय मुद्रा पर दबाव डाला।अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 90.24 पर खुला और कारोबार के दौरान 90.30 के निचले स्तर तक फिसल गया।

सरकार ने शोल्डर वायर पर गुणवत्ता नियंत्रण हटाया

नई दिल्ली। सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक्स और वाहन समेत कई उद्योगों में इस्तेमाल किए जाने वाले 'फ्लक्स कोर्ड शोल्डर वायर' पर गुणवत्ता नियंत्रण आदेश (क्यूसीओ) को वापस ले लिया है। इस उत्पाद के लिए यह आदेश सितंबर, 2023 में जारी किया गया था। उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने एक अधिसूचना में कहा, 'भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 2016 की धारा 16 की शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए केंद्र सरकार का यह मत है कि जनहित में ऐसा करना आवश्यक है।'

एआई लंबी दूरी के लिए ड्रीमलाइनर करेगी तैनात

नई दिल्ली। एयर इंडिया फरवरी से लंबी दूरी की अंतरराष्ट्रीय सेवाओं के लिए अपना नया बोइंग 787-9 विमान तैनात करेगी। एयर इंडिया के निजीकरण के बाद विमान बेड़े में शामिल होने वाला पहला ड्रीमलाइनर है। एयर इंडिया ने सात जनवरी को अमेरिका के सिएटल में बोइंग की एवरेट फैक्ट्री में पहले 'लाइन फिट ड्रीमलाइनर'' का टाइटल हस्तांतरण पूरा किया और एयरक्राफ्ट 11 जनवरी को दिल्ली में उतरा। आम तौर पर, लाइन फिट का मतलब होता है एक खास एयरलाइन के लिए खास तौर पर बनाया गया एयरक्राफ्ट।

बीएसई, एनएसई के बाद अब आएगा एमएसई, भारत को मिलेगा नया स्टॉक एक्सचेंज

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

भारत का शेयर बाजार लंबे समय से दो बड़े नामों के इर्द गिर्द घूम रहा है। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने इक्विटी और डेरिवेटिव्स ट्रेडिंग पर लगभग पूरा दबदबा बना रखा है। निवेशक, ब्रोकर्स और लिस्टेड कंपनियां सभी को इन्हीं दो प्लेटफॉर्म पर निर्भर रहना पड़ता है। अब इसी दो एक्सचेंज के वर्चस्व को तोड़ने की तैयारी हो रही है। मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज (एमएसई) जल्द फुल ऑपरेशनल होकर भारत का तीसरा बड़ा स्टॉक एक्सचेंज बनने वाला है। बाजार में यह एंट्री सिर्फ एक नई कंपनी की शुरुआत नहीं है बल्कि पूरे ट्रेडिंग इकोसिस्टम में कॉम्पिटिशन का नया दौर शुरू करने वाला कदम है। नया एक्सचेंज आते ही सीधा दबाव मौजूदा दिग्गजों पर पड़ेगा। ट्रेडिंग फीस, लिस्टिंग चार्ज और टेक्नोलॉजी अपग्रेड जैसे क्षेत्रों में ज्यादा प्रतिस्पर्धा देखने को मिल सकती है। लंबे समय में यह कॉम्पिटिशन पूरे मार्केट की एफिशिएंसी बढ़ा सकता है। इसके अलावा एसएमई सेगमेंट और नई कंपनियों के लिस्टिंग के लिए भी एक नया प्लेटफॉर्म खुलेगा। इससे छोटे और मिड साइज बिजनेस को पूंजी जुटाने के और विकल्प मिलेंगे। किसी भी नए स्टॉक एक्सचेंज के लिए सबसे बड़ी चुनौती लिक्विडिटी लाना होता है। ट्रेडर्स वहीं जाते हैं जहां ज्यादा वॉल्यूम और बेहतर प्राइस डिस्कवरी मिलती है। यही वजह है कि नए प्लेटफॉर्म पर भरोसा बनाना आसान काम नहीं होता।

मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज जल्द शुरू होने जा रहा

एमएसई पहले से मौजूद प्लेटफॉर्म है

मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज पहले से मौजूद एक प्लेटफॉर्म है जो कई सालों से सीमित सेगमेंट में काम कर रहा था। शुरुआती दौर में यह मुख्य रूप से करेंसी डेरिवेटिव्स तक सीमित रहा। हाल के समय में इसे फुल स्टॉक एक्सचेंज के रूप में काम करने का लाइसेंस मिला है। अब यह इक्विटी, फ्यूचर्स, ऑप्शंस और कमोडिटी डेरिवेटिव्स जैसे सभी बड़े सेगमेंट में ट्रेडिंग शुरू करने की तैयारी कर रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सेबी से अंतिम मंजूरी मिलने के बाद अगले कुछ महीनों में इसका फुल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म लाइव हो सकता है।

क्यों जरूरी माना जा रहा नया प्रतिस्पर्धी

आज भारत के शेयर बाजार में लगभग पूरा मार्केट शेयर दो ही एक्सचेंज के पास है। यही वजह है कि ब्रोकरेज फीस, एक्सचेंज चार्जेस और टेक्नोलॉजी स्टैंडर्ड लगभग एक तय पैटर्न पर चलते हैं। जब विकल्प सीमित होते हैं तो इनोवेशन और कॉस्ट कटिंग की रफ्तार भी सीमित रहती है। मेट्रोपॉलिटन स्टॉक एक्सचेंज का दावा है कि वह कम फीस, बेहतर टेक्नोलॉजी इंफ्रास्ट्रक्चर और नए सेगमेंट अप्रोच के साथ एंट्री करेगा। अगर यह मॉडल सफल होता है तो ब्रोकर्स की लागत कम हो सकती है। निवेशकों को बेहतर एक्जीक्यूशन और नए प्रोडक्ट्स मिल सकते हैं।

घरेलू कीमतों में भारी गिरावट आई है, अनिश्चितता की वजह से निर्यातकों के भुगतान में देरी

ईरान में अशांति से भारतीय बासमती चावल के निर्यात पर असर पड़ा : उद्योग संगठन

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

ईरान में जारी नागरिक अशांति का असर भारत के बासमती चावल के निर्यात पर पड़ना शुरू हो गया है जिससे घरेलू कीमतों में भारी गिरावट आई है। निर्यातकों को भुगतान में देरी और बढ़ती अनिश्चितताएं इसकी मुख्य वजह है। उद्योग संगठन ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन (आईआरईएफ) ने निर्यातकों से ईरानी अनुबंधों पर जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन करने और भुगतान के सुरक्षित तरीके अपनाने का आग्रह किया। साथ ही ईरानी बाजार के लिए जरूरत से ज्यादा भंडार रखकर जोखिम नहीं लेने को कहा है।

- भुगतान के सुरक्षित तरीके अपनाने का आग्रह

घरेलू मंडियों पर पड़ रहा असर

व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 के अप्रैल-नवंबर के दौरान ईरान को 468.10 अमेरिकी डॉलर का बासमती चावल निर्यात किया जिसकी कुल मात्रा 5.99 लाख टन थी। ईरान भारत का सबसे बड़ा बासमती चावल निर्यातक है लेकिन मौजूदा अस्थिरता के कारण चालू वित्त वर्ष में ऑर्डर प्रवाह, भुगतान चक्र और निर्यात पर दबाव बढ़ रहा है। इसका असर अब घरेलू मंडियों में साफ तौर पर दिखाई दे रहा है।

ईरान, भारतीय बासमती चावल का एक प्रमुख बाजार

आईआरईएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेम गर्ग ने बयान में कहा, '' ईरान ऐतिहासिक रूप से भारतीय बासमती का एक प्रमुख बाजार रहा है। हालांकि, मौजूदा आंतरिक अशांति ने व्यापार माध्यमों को बाधित किया है, भुगतान में देरी की है और खरीदारों के विश्वास को प्रभावित किया है।''

प्रमुख किस्मों की कीमतों में भारी गिरावट

पिछले एक सप्ताह में ही बासमती की प्रमुख किस्मों की कीमतों में भारी गिरावट आई है जो खरीदारों की झिझक, अनुबंधों में देरी और निर्यातकों के बीच बढ़े हुए जोखिम के प्रति आशंका को दर्शाती है। बासमती चावल की किस्म 1121 की घरेलू कीमत पिछले सप्ताह के 85 रुपये प्रति किलोग्राम से घटकर 80 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। वहीं 1509 और 1718 किस्म की कीमत 70 रुपये प्रति किलोग्राम से घटकर 65 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है।

निर्यातकों को सावधानी बरतनी होगी

गर्ग ने कहा कि निर्यातकों को विशेष रूप से ऋण जोखिम और निर्यात समयसीमा के संबंध में अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। उद्योग संगठन ने कहा कि आयातकों ने भारत को मौजूदा प्रतिबद्धताओं को पूरा करने और भुगतान करने में असमर्थता व्यक्त की है जिससे निर्यातकों के लिए अनिश्चितता उत्पन्न हो गई है।

अमेरिकी शुल्क चिंता का विषय बना

गर्ग ने कहा, '' हम कोई चेतावनी नहीं दे रहे हैं बल्कि सावधानी बरतने का आग्रह कर रहे हैं। भू-राजनीतिक और आंतरिक अस्थिरता के दौर में व्यापार अकसर सबसे पहले प्रभावित होता है। निर्यातकों और किसानों दोनों की सुरक्षा के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।'' आईआरईएफ ने कहा कि अमेरिकी शुल्क भी चिंता का विषय बने हुए हैं।

भारतीय चावल निर्यात पर पहले ही 50 फीसदी शुल्क

उद्योग संगठन ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हालिया टिप्पणियों पर भी चिंता व्यक्त की जिसमें उन्होंने संकेत दिया था कि ईरान के साथ व्यापार जारी रखने वाले देशों को 25 प्रतिशत तक शुल्क का सामना करना पड़ सकता है। आईआरईएफ ने स्पष्ट किया कि अमेरिका को भारतीय चावल निर्यात पर पहले ही शुल्क 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया है।

चांदी ने 2.71 लाख रुपये प्रति किलो का नया शिखर छुआ

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में मंगलवार को चांदी की कीमतें 6,000 रुपये उछलकर 2,71,000 रुपये प्रति किलोग्राम के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं जबकि स्टॉकिस्टों की लगातार खरीदारी के बीच सोना 1,45,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के अपने उच्चतम स्तर पर जा पहुंचा। अखिल भारतीय सराफा संघ ने कहा कि चांदी ने लगातार तीसरे दिन अपनी बढ़त जारी रखी और 6,000 रुपये यानी 2.3 प्रतिशत उछलकर 2,71,000 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी करों समेत) पर पहुंच गई। सोमवार को चांदी 15,000 रुपये यानी छह प्रतिशत की जबर्दस्त उछाल के साथ 2,65,000 रुपये प्रति किग्रा के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। यह शुक्रवार को 2,50,000 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। मंगलवार की बढ़त के साथ चांदी पिछले तीन कारोबारी सत्रों में कुल 21,000 रुपये यानी 8.4 प्रतिशत की बड़ी छलांग लगा चुकी है। वर्ष 2026 में अब तक चांदी ने कुल 32,000 रुपये यानी 13.4 प्रतिशत की तेज बढ़त दर्ज की है। यह 31 दिसंबर, 2025 को 2,39,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही थी।

- सोना 1.45 लाख रुपए के रिकॉर्ड स्तर पर

कार्यालय नगर पंचायत लवन, जिला-बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)
cmolawan@gmail.com

क्रमांक / 219/ लोनिवि / नं.प. / 2025-26 लवन, दिनांक 12/01/2026

संशोधित ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना (चतुर्थ निविदा)

नगर पंचायत लवन द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु सक्षम क्षेणी में एकीकृत पंजीयन प्रणाली से पंजीकृत एजेंसी / फर्म से ई-प्रोक्योरमेंट टेंडर सिस्टम के माध्यम से आमंत्रित की गई हैं, जिसमें निविदा की अंतिम तिथियों में निम्नानसार संशोधन किया जाता हैं :-

क्र.	सिस्टम टेंडर	कार्य का नाम	लागत राशि (लाख में)	आनलाईन निविदा की अंतिम तिथि	फिजिकल दस्तावेज प्राप्त होने की अंतिम तिथि	निविदा खोले जाने की तिथि
1	2	3	4	5	6	7
1	182017	Desing, Construction, Testing, Commissioning of All The Components of Interception and Diversion Based Sewge Treatment Plant (STP) Work Including 05 Years of Operation and Maintenance of the Entire System in Nagar Panchayat Lawan under SBM 2.0	245.74 लाख	दिनांक 23.01.2026 समय- शाम 5.00 बजे तक	दिनांक 29.01.2026 समय- शाम 4.00 बजे तक	दिनांक 29.01.2026 समय- शाम 5.00 बजे से

नोट:- 1. निविदा संबंधी समस्त दस्तावेज, अमानत राशि व टेंडर प्रोसेसिंग फीस ऑन लाईन अपलोड करना अनिवार्य है। 2. अन्य शर्तें व विस्तृत जानकारियां संबंधित शाखा या विभाग से ई-प्रोक्योरमेंट वेब http://eproc.cgstate.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत लवन
जि.बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

''नगर पंचायत के करों का भुगतान समय सीमा में अवश्य करें''

संरचना 2026' एक्सपो में भारत की शिल्प परंपरा और कारीगरों की प्रतिभा को मिलेगा राष्ट्रीय मंच

नई दिल्ली। 'संरचना - इंडियन हैंडमेड एक्सपो 2026' का आयोजन 10 से 18 जनवरी 2026 तक हैंडलूम हाट, जनपथ, नई दिल्ली में करेगा। इस नौ दिवसीय एक्सपो का आयोजन देशभर से आए कारीगरों, बुनकरों और शिल्प समुदायों को एक साझा मंच प्रदान करेगा, जहाँ भारत की विविध शिल्प परंपराएँ, सांस्कृतिक पहचान और पीढ़ियों से संचित कौशल एक साथ प्रदर्शित होंगे। राजधानी के केंद्र में स्थित हैंडलूम हाट इस दौरान पारंपरिक शिल्प कौशल की जीवंत तस्वीर पेश करेगा, जहाँ भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत एक ही छत के नीचे देखने को मिलेगी। एक्सपो में हस्तशिल्प, हथकरघा वस्त्र, जूट उत्पाद, सांस्कृतिक विरासत से प्रेरित गृह सज्जा, उपयोगी उपहार और पारंपरिक परिधानों का व्यापक प्रदर्शन किया जाएगा, जो देश के अलग-अलग क्षेत्रों की शिल्प पहचान को दर्शाएगा। संरचना को केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक मंच के रूप में तैयार किया गया है, जहाँ शिल्प को वाणिज्य से आगे बढ़ाकर परंपरा, पहचान और आजीविका से जोड़ा गया है।

विदेशी पूंजी की निकासी से शेयर बाजार फिसला

मुंबई। विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली और वैश्विक स्तर पर शुल्क से जुड़ी चिंताओं के बीच प्रमुख शेयरों में मुनाफावसूली हावी रहने से मंगलवार को घरेलू शेयर बाजार नुकसान के साथ बंद हुए। सेंसेक्स में 250 अंक की गिरावट रही जबकि निफ्टी में 58 अंक की कमजोरी आई। कारोबारियों ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं से प्रभावित उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में तिमाही नतीजों की कमजोर शुरुआत से भी बाजार धारणा दबाव में रही। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 250.48 अंक गिरकर 83,627.69 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 615.38 अंक फिसलकर 83,262.79 के स्तर तक आ गया था। निफ्टी 57.95 अंक यानी 0.22 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,732.30 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से ट्रेंट, लार्सन एंड टूब्रो, रिलायंस इंडस्ट्रीज, इंटरग्लोब एविएशन, मारुति, आईटीसी, अदाणी पोर्ट्स और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं। दूसरी तरफ, इटर्नल, आईसीआईसीआई बैंक, टेक महिंद्रा, भारतीय स्टेट बैंक और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के शेयरों में बढ़त दर्ज की गई। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''ईरान के साथ कारोबार करने वाले देशों पर शुल्क लगाने की अमेरिकी चेतावनी से बाजार में चिंता नजर आई। इसके अलावा रुपये में कमजोरी, कच्चे तेल में तेजी, अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल में सुधार और विदेशी पूंजी की निकासी से निवेशक धारणा सतर्क बनी रही।''

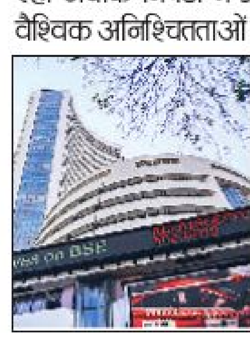

असम का रेल पुनर्जागरण: अमृत भारत स्टेशन योजना से पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार हुआ मजबूत

मालीगांव। असम, लंबे समय से भौगोलिक और रणनीतिक दोनों दृष्टिकोण से पूर्वोत्तर के गेटवे के रूप में जाना जाता है। दशकों तक, सीमित कनेक्टिविटी और इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी के कारण इस गेटवे का ठीक तरह से उपयोग नहीं हो पाया था। पिछले ग्यारह वर्षों में, यह वास्तविकता निर्णायक रूप से बदल गई है। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, असम के बदलाव और पूर्वोत्तर को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने में रेलवे एक मुख्य भूमिका निभा रहा है। केंद्र सरकार के विकास की सोच स्पष्ट और सतत रही है। कनेक्टिविटी को विकास की नींव माना गया है। इंफ्रास्ट्रक्चर को अवसरों को बढ़ावा देने के तौर पर उपयोग किया गया है। साथ ही, यह भी सुनिश्चित किया गया है कि विकास आखिरी छोर तक पहुँचे। केंद्र और राज्य के बीच मजबूत तालमेल वाले डबल इंजन गवर्नेंस मॉडल ने विकास की गति को काफी तेज किया है। नतीजतन, असम भारत के रेल विकास एजेंडे में हाशिये से केंद्र में आ गया है। यह बदलाव सार्वजनिक निवेश में तेजी से बढ़ोतरी के कारण हुआ है। असम और पूर्वोत्तर के लिए औसत सालाना रेल बजट आवंटन 2009-14 के दौरान 2,122 करोड़ रुपये से बढ़कर 2025-26 में 10,440 करोड़ रुपये हो गया है, जो लगभग पाँच गुना अधिक है।

उद्यान विभाग, हरियाणा
पुष्प एवं बीज उत्पादन तकनीकी उत्कृष्टता केन्द्र,
मुनीमपुर (झज्जर)-124105
ई-मेल: coemunimpur@gmail.com

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सूचना बारे

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि पुष्प एवं बीज उत्पादन तकनीकी उत्कृष्टता केन्द्र, मुनीमपुर, झज्जर पर निम्न प्रकार से पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाया जाना है:

क्र. सं.	दिनांक	प्रशिक्षण की अवधि (दिनों में)	प्रशिक्षण का विषय	प्रशिक्षणार्थियों की संख्या
1.	19.01.2026 से 23.01.2026	5	उन्नत तकनीकों द्वारा फूलों की खेती पर प्रशिक्षण	10

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण हेतु इच्छुक किसान अपना ऑनलाईन नामांकन बागवानी विभाग, हरियाणा की वेब साईट http:kaushal.hortharyana.gov.in पर करें। जो दस किसान सबसे पहले ऑनलाईन नामांकन के माध्यम से अपना नाम दर्ज करवाएंगे, उन्हें ही प्रशिक्षण में प्राथमिकता दी जाएगी। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक किसान डॉ. हेमन्त सैनी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (Mob No-8683801977) से सम्पर्क करें।

प्रशिक्षण हेतु ऑनलाईन नामांकन की प्रक्रिया निम्न प्रकार से है:-

1. प्रार्थी अपना ऑनलाईन आवेदन http:kaushal.hortharyana.gov.in पोर्टल पर दिनांक 16.01.2026 शाम 03:00 बजे तक कर सकता है।
2. प्रार्थी हरियाणा राज्य का स्थायी निवासी होना चाहिए।
3. आवेदनकर्ता अपने जरूरी कागजात जैसे कि आधार कार्ड व परिवार पहचान पत्र की फोटो प्रति प्रशिक्षण के दौरान अपने साथ लेकर आये।
4. चयनित किसानों के नाम बागवानी विभाग की वेबसाईट http:kaushal.hortharyana.gov.in पर दिनांक 16.01.2026 को शाम 03:30 बजे तक अपलोड कर दिये जाएंगे।
5. प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतू प्रार्थी की न्युनतम आयु 18 वर्ष व अधिकतम आयु 60 वर्ष होनी चाहिए।
6. प्रशिक्षण हेतु आवेदन एक परिवार पहचान पत्र (PPP) से एक सदस्य ही कर सकता है।
7. किसानों के भोजन की व्यवस्था निम्नहस्ताक्षरी कार्यालय के द्वारा की जायेगी।
8. प्रशिक्षण केन्द्र पर रात्रि ठहराव की व्यवस्था नहीं होगी।

हस्ता/-परियोजना अधिकारी कम विषय वस्तु विशेषज्ञ,
पुष्प एवं बीज उत्पादन तकनीकी उत्कृष्टता केन्द्र,
मुनीमपुर, झज्जर।

पीआरडीएच-1149/11/1023/2026/41999/88/7 दि. 13.01.26

राशिफल

मेष — मन प्रसन्न रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। भवन के रख-रखाव एवं साज-सज्जा के कार्यों पर खर्च बढ़ेंगे।

वृष — आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों से आय हो सकती है।

मिथुन — मन प्रसन्न तो रहेगा, परन्तु फिर भी आत्मसंयत रहें। रहन-सहन भी अव्यवस्थित रहेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। स्वाथ्य का ध्यान रखें।

कर्क — पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भाग-दौड़ बढ़ेगी। कारोबार के लिए विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। भाइयों का सहयोग रहेगा। यात्रा के योग बन रहे हैं।

सिंह — व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में सन्तुलित रहें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों पर ध्यान दें। व्यवधान आ सकते हैं। आय में कमी आ सकती है।

कन्या — अपनी भावनाओं को वश में रखें। नौकरी के लिए साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

तुला — पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। शैक्षिक एवं शोधादि कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। परिश्रम अधिक रहेगा। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक — व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में सन्तुलन बनाये रखें। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

धनु — मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। संयत रहें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। शैक्षिक कार्यों के सुखद-परिणाम मिलेंगे। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर — आत्मसंयत रहें। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी और आय के साधन भी बनेंगे। खर्च भी बढ़ेंगे। रुचि बढ़ेगी।

कुंभ — मन शान्त तो रहेगा। फिर भी धैयशीलता बनाये रखने का प्रयास करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धार्मिक संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है।

मीन — मन अशान्त तो हो सकता है। वाणी में मधुरता भी रहेगी। परिवार में शान्ति बनाये रखने के प्रयास करें। आय में कमी एवं खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है।

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

प्रमुख रक्षा अध्यक्ष ने एनसीसी गणतंत्र दिवस शिविर 2026 में भाग ले रहें युवा कैडेट को प्रेरित किया

नई दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने 13 जनवरी, 2026 को दिल्ली कैंट में आयोजित राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) गणतंत्र दिवस शिविर (आरडीसी) का दौरा किया। एनसीसी कैडेट और अधिकारियों को संबोधित करते हुए, सीडीएस ने लगातार चौथी बार आरडीसी शिविर में शामिल होने पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने कैडेट के उच्च मानकों और उत्साह की सराहना करते हुए कहा कि प्रत्येक साल उनमें ऊर्जा और देशभक्ति की भावना फिर से जागृत होती है। युवाओं के लिए दूरदृष्टि और दृढ़ संकल्प के महत्व पर बल देते हुए उन्होंने कहा, ''सही मार्ग चुनने पर आप सही मंजिल तक पहुंचते हैं। आज सही मार्ग चुनना महत्वपूर्ण है।'' अपने स्वयं के करियर की कहानी साझा करते हुए, सीडीएस ने कैडेट को सशस्त्र बलों में करियर बनाने और 2047 तक समृद्ध, सशक्त और सुरक्षित भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कैडेट से कहा, ''आप विकसित भारत के भावी नेता हैं।'' उन्होंने जनवरी को महत्वपूर्ण महीना बताया, इसमें स्वामी विवेकानंद जयंती मनाने वाला 12 जनवरी का राष्ट्रीय युवा दिवस, 14 जनवरी का वयोवृद्ध दिवस, 15 जनवरी का सेना दिवस, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती मनाने वाला 23 जनवरी का पराक्रम दिवस, संविधान को अंगीकृत किए जाने की याद में 26 जनवरी का गणतंत्र दिवस और 30 जनवरी का शहीद दिवस जैसे प्रमुख आयोजन शामिल हैं।

शब्द पहेली - 6108

बाएँ से दाएँ
1.शरीफ,नेकनीयत-5
4.जिसे सुनाई न दे-3
6.मां का भाई-2
7.एकमात्र,सिर्फ एक-3
8.अधिकार-2
10.सिर झुकाना-3
11.दुर्घटना-4
14.दूध फाड़कर बनाया जानेवाला पदार्थ-3
16.राजदार-4
17.राजा की पत्नी-2
18.वीज, वीर्य-2
19.मीठा पेय पदार्थ-4
21.पानी की बूंद-3
22.अवरोध,बाधा-4
24.मैला,अस्वच्छ-3
25.पानी,जल-2
27.पुत्र,लड़का-3
28.लाश,पार्थिव देह-2
29.थकावट-3
30.मन मोहने वाला-5

ऊपर से नीचे
1.समाजवाद को माननेवाला अनुयायी-5
2.अस्थमा-2
3.राज्य,सल्तनत-4
4.तन,काया,देह-3
5.रास्ता,मार्ग-2
7.नखरा,भुगतान-2
9.डोली उठाने वाले-3
12.बिजली,विद्युत रश्मि-3
13.भद्रता,नेकनियत -4
15.कमल,पंकज-3
16.बुखरा,ज्वर ताप-4
17.आराम,मदद-3
18.घना वन-3
20.मन को भाने वाला -2,3
21.कथा,गाथा-3
22.कहासुनी-4
23.मनन करना-3
24.शराब-2
26.घोड़ागाड़ी-2
28.बढ़ावा देना-2

शब्द पहेली-6107 का हल

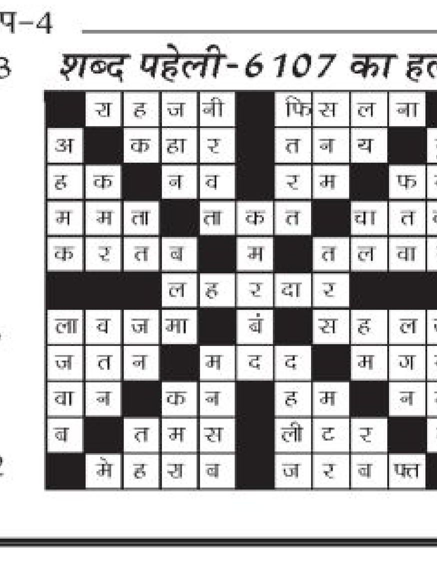

श्रमेव जयते

यह अच्छा हुआ कि केंद्र सरकार ने क्विक कामर्स कंपनियों से दस मिनट में डिलीवरी की व्यवस्था खत्म करने को कहा और वे कंपनियां इसके लिए तैयार भी हो गईं। कुछ कंपनियों ने तो तत्काल प्रभाव से सामान की डिलीवरी दस मिनट में करने के वादे अपने विज्ञापनों से हटा भी लिए। इस जल्दबाजी की कोई आवश्यकता नहीं थी। कंपनियां आपसी प्रतिस्पर्धा की होड़ में ऐसे वादे करने लगीं थीं। इससे काम के बदले भुगतान आधारित तंत्र के तहत सेवाएं देने वाले गिग वर्करों की परेशानी बढ़ने के साथ उनकी सुरक्षा का भी जोखिम बढ़ गया था। हालांकि क्विक कामर्स कंपनियों का यह तर्क था कि गिग वर्करों को आम तौर पर तीन किमी के दायरे में ही सामान पहुंचाना होता है, लेकिन अपने देश में ट्रैफिक की स्थिति किसी से छिपी नहीं। इसके अतिरिक्त कई बार डिलीवरी करने वालों को कालोनियों और बहुमंजिला भवनों के सुरक्षा गार्डों की पूछताछ का सामना करना पड़ता था। इसमें समय लगता था। निःसंदेह सरकार के ताजा फैसले से गिग वर्करों को राहत मिलेगी, लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं। सरकार को यह भी देखना होगा कि इन असंगठित कामगारों की कार्यदशाएं बेहतर हों और उन्हें उचित पारिश्रमिक भी मिले।

इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है कि एक बड़ी संख्या में गिग वर्कर थोड़े समय बाद काम छोड़ देते हैं। इसका कारण लंबी ड्यूटी, प्रतिकूल माहौल और जितने समय काम, उतना ही पैसा जैसे प्रविधान हैं। इसी के चलते पिछले दिनों गिग वर्करों ने हड़ताल पर जाने का फैसला किया था। इसी के बाद वह नया लेबर कोड चर्चा में आया, जिसमें यह कहा गया है कि गिग वर्करों को सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ उन्हें कुछ सुविधाएं भी प्रदान की जाएंगी। आज जब क्विक कामर्स कंपनियों के साथ आनलाइन कारोबार बढ़ रहा है और यह माना जा रहा है कि आने वाले समय में गिग वर्करों की संख्या में भारी वृद्धि होगी, तब फिर उनके हितों की चिंता करनी ही होगी। यह चिंता सरकार के साथ संबंधित कंपनियों को भी करनी होगी। उनका कारोबार गिग वर्करों के कारण ही बढ़ रहा है और वे मुनाफा भी कमा रही हैं। सच तो यह है कि असंगठित क्षेत्र के सभी कामगारों को सामाजिक सुरक्षा, बीमा, समय पर समुचित भुगतान आदि के दायरे में लाया जाना चाहिए। यह तब संभव होगा, जब सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि उसकी ओर से किए जा रहे उपायों पर सही तरह अमल हो रहा है या नहीं? यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि निजी सुरक्षा गार्डों के हितों की रक्षा को लेकर जो नियम-कानून बनाए गए थे, वे कागजों पर ही अधिक प्रभावी हैं। यह सही समय है कि असंगठित क्षेत्र के हर कामगार की सुधि ली जाए। इससे ही श्रमेव जयते का नारा सार्थक होगा।

गैंग्स्टरों पर नकेल

दिल्ली पुलिस द्वारा गैंग्स्टरों पर लगाम कसने के लिए की गई बड़ी कार्रवाई सर्वथा उचित है। दिल्ली पुलिस ने राजधानी के साथ ही पड़ोसी राज्यों के गैंग्स्टरों पर 48 घंटे तक लगातार कार्रवाई करते हुए इनके 4299 ठिकानों पर छापेमारी कर 690 केस दर्ज किए हैं। नौ हजार से अधिक पुलिसकर्मियों द्वारा की गई इस कार्रवाई में विभिन्न गिरोहों के 854 सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें से कुछ अंतरराष्ट्रीय गिरोहों के गुर्गे हैं और कई अन्य हथियारों व मादक पदार्थों की तस्करी में भी लिप्त रहे हैं।

> पुलिस को बड़े गैंग्स्टरों की गिरफ्तारी भी सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि दिल्लीवासियों में सुरक्षा का भाव पैदा हो सके

राष्ट्रीय राजधानी में गैंग्स्टरों का आतंक एक बड़ी चिंता की वजह रहा है। उगाही, अपहरण व हत्या के साथ ही कार्यालयों, प्रतिष्ठानों और घरों पर फायरिंग की आए दिन होने वाली घटनाओं के साथ ही गैंगवार भी पुलिस के लिए परेशानी का सबब रहा है। साथ ही, आतंकी घटनाओं के दृष्टिकोण से संवेदनशील दिल्ली में आतंकियों और गैंग्स्टरों का गठजोड़ होने की आशंका भी हमेशा बनी रहती है। ऐसे में दिल्ली पुलिस की ये कार्रवाई अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह समझा जाना चाहिए कि ऐसी एक या दो कार्रवाइयों से अपेक्षित नतीजे नहीं निकलेंगे। ऐसी कार्रवाइयां समय-समय पर करनी चाहिए, तभी इन गिरोहों को नियंत्रित किया जा सकता है। साथ ही पुलिस को बड़े गैंग्स्टरों की गिरफ्तारी भी सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि दिल्लीवासियों में सुरक्षा का भाव पैदा हो सके।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर के काम संभालने के बाद दोनों देशों के संबंधों में सुधार की उम्मीद है?

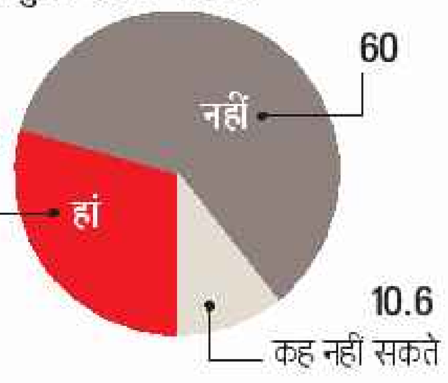

आज का सवाल

क्या कुछ एप्स पर 10 मिनट में डिलीवरी बंद कराने का सरकार का फैसला सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

दुनिया को अराजकता में झोंकते ट्रंप

विवेक काटजू

वेनेजुएला में ट्रंप के हमले से अगर चीन जैसे देश भी अपने ऐसे इरादे जताते हैं तो विश्व में अराजकता बढ़ना तय है

वेनेजुएला में अमेरिका की एकतरफा सैन्य कार्रवाई ने दुनिया को चौंकाने का काम किया। शायद ऐसा पहली बार देखने को मिला कि किसी देश के राष्ट्रपति को उनकी पत्नी सहित उनके आवास से उठाकर अगवा कर लिया गया। निकोलस मादुरो के साथ अमेरिका की लंबी खटपट थी, लेकिन तमाम देशों सहित संयुक्त राष्ट्र उन्हें वेनेजुएला के राष्ट्रपति के रूप में मान्यता देते रहे। भारत भी ऐसे देशों में शामिल रहा। अमेरिका और खासतौर से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी इस दादागीरी के पक्ष में सुविधाजनक दलीलें गढ़ी हैं। मादुरो पर अमेरिका में मादक पदार्थों की तस्करी को बढ़ावा देने का आरोप है। ऐसा कुछ भी हो, लेकिन इससे किसी शक्तिशाली देश को यह गुंजाइश नहीं मिल जाती कि वह ऐसे आरोपित को पकड़ने के लिए दूसरे देश में सैन्य छापेमारी वाली कार्रवाई करे। पाकिस्तान के एबटाबाद में दुर्दांत आतंकी ओसामा बिन लादेन को ठिकाने लगाने की कार्रवाई ऐसे मामलों में अपवाद की श्रेणी में आती है, लेकिन यही पैमाना मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोरेस पर नहीं लागू किया जा सकता।

बदली हुई परिस्थितियों में वेनेजुएला की उपराष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्स ने अंतरिम राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभाला है। अमेरिका ने उन पर दबाव डाला है कि उसकी मनमानी को मानती रहें और खासतौर से तेल एवं गैस के मामले में अमेरिकी निर्देशों का पालन हो। वेनेजुएला के पास पूरे दुनिया में तेल का सबसे बड़ा भंडार है। ट्रंप इसी भंडार पर नियंत्रण चाहते हैं। वे चाहते हैं कि केवल अमेरिकी और चुनिंदा यूरोपीय कंपनियों ही इस दक्षिण अमेरिकी देश के तेल बाजार के बड़े खेल की अहम खिलाड़ी बनी रहें। उन्होंने यही संकेत दिए हैं कि वे रूस और चीन को वेनेजुएला में किसी भी भूमिका से बाहर रखना चाहते हैं। वेनेजुएला में अमेरिका का हस्तक्षेप कुछ वर्षों पहले अफगानिस्तान और इराक में ऐसे ही दखल से काफी अलग है। स्पष्ट है कि अमेरिका ने अफगानिस्तान में विफलता और इराक में सामने आई दुश्वारियों से सबक सीखा है कि ऐसी गलतियों से बचा जाए। अमेरिका ने तालिबान और अलकायदा के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की। वैश्विक स्तर पर यह मान्यता थी कि अमेरिका के पास ऐसा करने का ठोस आधार है, क्योंकि तब उस पर एक भयावह आतंकी हमला हुआ था। सैन्य कार्रवाई से अफगानिस्तान में तालिबान का तो पतन हो गया, पर उसके और अलकायदा के बड़े आतंकी पाकिस्तान भागने में सफल रहे। तालिबान ने पाकिस्तान के समर्थन से अफगानिस्तान में आकार ले रही नई व्यवस्था के खिलाफ काम करना शुरू कर दिया। यह व्यवस्था अमेरिका और नाटो की सहायता से ही स्थापित हुई थी। अफगानिस्तान में स्थिरता के लिए संयुक्त राष्ट्र ने भी तब एक अंतरराष्ट्रीय बल के गठन की अनुमति दी थी। हालांकि अफगानिस्तान की नई व्यवस्था और अमेरिका मिलकर भी विरोधियों से पार नहीं पा सके। इस दौरान करीब 2,500 अमेरिकी सैनिकों की मौत हुई और लगभग एक ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर का बोझ अमेरिकी खजाने पर पड़ा। अंततः ट्रंप ने कड़वा घूंट गटकते हुए तालिबान के साथ एक समझौते पर सहमति बनाई। यह समझौता अफगानिस्तान में नई व्यवस्था पर आघात साबित हुआ। अमेरिका ने अफगानिस्तान से सेना वापस बुलाई तो अगस्त 2021 में तालिबान फिर काबुल की सत्ता पर काबिज हो गया। यानी बीस सालों के अंतराल में वक्त का पहिया वहीं लौट आया, जहां से चला था।

अवधेश राजपूत

इराक की बात करें तो उस पर विध्वंसक हथियारों की आड़ में हमला किया गया। जबकि अघोषित उद्देश्य सद्दाम हुसैन और उनके बाथिस्ट शासन को समाप्त कर एक 'लोकतांत्रिक सरकार' की स्थापना करना था। अमेरिकी सैनिकों ने सद्दाम हुसैन को पकड़ लिया। उन पर मुकदमा चला और उन्हें फांसी दे दी गई। इसके बाद इराक में अस्थिरता बढ़ती गई। अमेरिका को यहां भी अपने दखल की भारी कीमत चुकानी पड़ी। जब उसने इराक से अपने कदम पीछे खींचे तब तक वह अपने 4,500 सैनिक गंवाने के साथ ही दो से तीन ट्रिलियन डालर खर्च कर चुका था। जल्द ही यह देश आइएस जैसे आतंकी समूह की गिरफ्त में आ गया और अमेरिकी हस्तक्षेप के कोई सार्थक परिणाम नहीं निकले।

अफगानिस्तान और इराक के उलट वेनेजुएला में अमेरिकी हस्तक्षेप एकतरफा है। वहां जमीनी स्तर पर सैनिक भेजने का भी ट्रंप का कोई इरादा नहीं। अमेरिका ने वेनेजुएला की सामुद्रिक घेराबंदी कर दी है, जिससे वहां के तेल प्रवाह पर प्रभावी रूप से अपना नियंत्रण किया जा सके। इस पूरी कवायद में एक हवाई अभियान ही पर्याप्त हुआ और ट्रंप ने स्वयं कहा कि दूसरे किसी अभियान की आवश्यकता ही नहीं। जैसे ही ट्रंप ने यह एलान किया कि वहां सैनिक नहीं भेजे जाएंगे, वैसे ही तय हो गया कि वहां का शासन मादुरो के सहयोगियों द्वारा ही चलाया जाएगा जो कुछ और नहीं, बल्कि अमेरिकी कठपुतली की तरह ही काम करेंगे। इस तरह किसी औपचारिक घोषणा के बिना ही वेनेजुएला प्रभावी रूप से अमेरिका का एक उपनिवेश बन जाएगा।

जहां इराक और अफगानिस्तान में अमेरिका ने अपने सैनिक गंवाए, वहीं वेनेजुएला अभियान में कोई सैनिक हताहत नहीं हुआ। अफगानिस्तान और इराक पर लाखों करोड़ डालर खर्च करने के उलट वेनेजुएला से अमेरिका को केवल कमाई की ही आस है। अमेरिका ने वेनेजुएला की जो सामुद्रिक नाकेबंदी की है, वह उसकी अर्थव्यवस्था को बेदम करने के लिए पर्याप्त है। अमेरिकी नियंत्रण का प्रभाव ऐसा हो जाएगा कि वहां कोई भी समूह उसके खिलाफ जाने की जुर्रत नहीं करेगा। हां, अमेरिका के सहयोगियों से लेकर प्रतिद्वंद्वी तक इसे लेकर जो चाहे शिकायतें करते रहें, लेकिन उसके हितों के विरुद्ध कोई कुछ नहीं करेगा। अब तो असल मुद्दा यही है कि भले ही चीन जैसे देश के पास अमेरिका जैसी असाधारण सैन्य क्षमताएं न हों, लेकिन क्या वह अमेरिकी नक्शेकदम पर ही चलने की सोचेगा। अगर ऐसा होता है तो दुनिया में अराजकता बढ़ेगी। शक्तिशाली देश अपनी सुविधा से कमजोर देशों पर हावी होते रहेंगे।

(लेखक पूर्व राजनयिक हैं)

response@jagran.com

असहमति की अति से त्रस्त देश

राजीव सचान

यदि पक्ष-विपक्ष के बीच किसी भी मुद्दे पर आम सहमति नही बनती तो भारत का विकसित बनना कठिन ही है

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर पांच सौ प्रतिशत टैरिफ लगाने वाले जिस सैंक्शनिंग रशिया बिल को सहमति प्रदान की, उसके पारित होने के आसार हैं। यदि ऐसा होता है तो भारत की समस्या और अधिक बढ़ जाएगी, जो पहले से ही 50 प्रतिशत ट्रंप टैरिफ का सामना कर रहा है। यह भी अब 75 प्रतिशत हो गया है, क्योंकि ट्रंप ने ईरान से व्यापार करने वाले देशों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया। जैसे रूस से तेल खरीदने वाले देशों में भारत प्रमुख है, वैसे ही ईरान से व्यापार करने वाले देशों में भी। हालांकि ईरान से भारत का व्यापार अधिक नहीं है, लेकिन ट्रंप के इस कदम से हमारा संकट और बढ़ना ही है। ट्रंप के इस फैसले की तो विपक्षी डेमोक्रेट पार्टी के कई सांसदों ने कड़ी निंदा की है, लेकिन वे रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर पांच सौ प्रतिशत टैरिफ लगाने वाले बिल पर उनके साथ हैं। वैसे तो सत्तारूढ़ रिपब्लिकन और विपक्षी डेमोक्रेट एक-दूजे को फूटी आंख नहीं सुहाते, लेकिन कुछ मुद्दों पर दोनों दलों के सांसद एकजुट भी हो जाते हैं। ताजा उदाहरण प्रस्तावित सैंक्शनिंग रशिया एक्ट है। इसे रिपब्लिकन सीनेटर लिंडसे ग्राहम और डेमोक्रेटिक सीनेटर रिचर्ड ब्लूमेंटथल ने संयुक्त रूप से पेश किया है। इसीलिए इसे द्विपक्षीय बिल कहा जा रहा है। यह वही रिचर्ड ब्लूमेंटथल हैं, जिन्होंने चंद दिनों पहले वेनेजुएला में ट्रंप की सैन्य कार्रवाई को अवैध आक्रमण कहते हुए एक लापरवाही भरी हरकत करार दिया था।

डेमोक्रेट रिचर्ड ब्लूमेंटथल पहले भी कुछ मुद्दों पर ट्रंप की तीखी आलोचना कर चुके हैं, लेकिन उन्हें रूस से तेल खरीदने वाले देशों को टैरिफ लगाकर दंडित करने का विचार इतना भाया कि वे उनके साथ खड़े हो गए। भारत में इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। इसका एक कारण तो यह है कि भारत में सांसद अपने-अपने दल की नीति के हिसाब से ही चलते हैं और दूसरा यह कि उन्हें व्हिप का पालन करना पड़ता है। अमेरिका में ऐसा नहीं है। इसीलिए वहां रिपब्लिकन और डेमोक्रेट सांसद एक साथ भी खड़े दिखते रहते हैं। एक समय अपने देश में भी कुछ मुद्दों पर संसद के

आम सहमति की राजनीति का बढ़ता अभाव ● फाइल

भीतर-बाहर पक्ष-विपक्ष व्यापक राष्ट्रीय हित में एकमत होता रहता था, पर आज यह अकल्पनीय है। बहुत दिन नहीं हुए जब सत्तापक्ष आम सहमति की राजनीति करने की बातें करता था और विपक्ष उसे रचनात्मक सहयोग देने का वादा करता था, लेकिन अब दूर-दूर तक ऐसा कुछ भी नहीं हैं। संसद सत्र के पहले होने वाली सर्वदलीय बैठकें हों या अन्य कोई मंच, हर कहीं पक्ष-विपक्ष के बीच घोर असहमति ही दिखती है।

मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से असहमति की अति सी हो गई हो। मोदी के शासनकाल में न्यायिक नियुक्ति आयोग संबंधी विधेयक एकमात्र ऐसा बिल था, जिस पर सभी दलों की सहमति कायम हुई थी। त्रासदी यह रही कि इस विधेयक के कानून बनते ही सुप्रीम कोर्ट ने उसे असंवैधानिक करार दिया। फिर जीएसटी संबंधी विधेयकों पर उल्लेखनीय आम सहमति देखने को मिली, लेकिन बाद में राहुल गांधी जीसएटी को गब्बर सिंह टैक्स बताने लगे। इसके उपरांत आर्थिक रूप से विपन्न लोगों को 10 प्रतिशत आरक्षण और विधायिका में महिलाओं के 33 प्रतिशत आरक्षण से जुड़े विधेयकों पर भी पक्ष-विपक्ष का सुर एक ही रहा, लेकिन इसका कारण सहमति की राजनीति नहीं, बल्कि वोट बैंक की राजनीति थी। इसके बाद से किसी भी विषय पर आम सहमति के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं। यह असहमति की अति की पराकाष्ठा ही थी कि पहलगाम आतंकी हमले और आपरेशन सिंदूर को लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष में जो एकजुटता दिखी, वह इस सैन्य अभियान खत्म होने के पहले ही इतनी बुरी तरह बिखर गई कि कांग्रेस ने विदेश मंत्री एस. जयशंकर पर पाकिस्तानी आतंकियों को बचाने का आरोप मढ़ने में भी संकोच नहीं किया। उस समय विपक्षी नेताओं के कई बयानों को पाकिस्तान ने अपने पक्ष में भुनाया।

2026 के आगमन के साथ ही विकसित भारत के लक्ष्य को पाने में अब 21 वर्ष ही शेष रह गए हैं। 2047 तक देश को विकसित बनाने का लक्ष्य आसान नहीं। यदि पक्ष-विपक्ष के बीच किसी भी मुद्दे पर आम सहमति की राजनीति का परिचय नहीं दिया जाता तो यह लक्ष्य और अधिक कठिन हो जाएगा। निःसंदेह हर मुद्दे पर सत्तापक्ष और विपक्ष में सहमति की आशा नहीं की जानी चाहिए। लोकतंत्र में तो विपक्ष का दायित्व ही है सत्तापक्ष की कमियों पर निगाह रखना एवं संसद के भीतर-बाहर उसे घेरना। सत्तापक्ष को यह आभास होते ही रहना चाहिए कि उसकी रीति-नीति पर विपक्ष की निगाह है। उसे उसकी आलोचना पर सहिष्णु भी होना चाहिए। इसी के साथ विपक्ष को भी यह समझना होता है कि शासन चलाने का अधिकार सत्तापक्ष का ही होता है। आज स्थिति यह है कि इधर कोई विधेयक संसद से पारित होता है, उधर उसके खिलाफ विपक्षी नेता सुप्रीम कोर्ट में खड़े दिखते हैं। आखिर इसमें क्या समस्या है कि पक्ष-विपक्ष शिक्षा, स्वास्थ्य, आतंकवाद, पर्यावरण, महिला सुरक्षा आदि मुद्दों पर एकजुटता दिखाएं? यदि पक्ष-विपक्ष के नेता एक सुर में यह कहने लगें कि सार्वजनिक स्थलों पर सफाई सुनिश्चित करना और इसके प्रति सतर्क रहना हर देशवासी की जिम्मेदारी है कि महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों, विदेशी पर्यटकों आदि के साथ किसी तरह का दुर्व्यवहार न होने पाए तो क्या आफत आ जाएगी?

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

विचारों की शक्ति

विचार हमारे व्यक्तित्व को आकार देने में आधार की भूमिका निभाते हैं। विचारों में महान शक्ति होती है। अगर हम दिन की शुरुआत ही अच्छे विचारों से करते हैं तो मन दिन भर सकारात्मक रह सकता है। सोने के ठीक पहले और उठते ही जो विचार हमारे मन में होते हैं, वे प्रायः हमारे दिनभर की कार्ययोजना बनाते हैं और जीवन के प्रति हमारा जैसा विचार या दृष्टिकोण होता है, हम वैसे ही बनते जाते हैं। जैसे सूर्य न केवल प्रकाश देता है, बल्कि दिन के आरंभ का भी संकेतक होता है, वैसे ही विचार न केवल मार्ग दिखाता है, बल्कि नई संभावनाओं के द्वार भी खोलता है।

जब सुकरात ने कहा कि 'अपनी अज्ञानता को जानना ही ज्ञान की शुरुआत है' तब विचार ने आत्मबोध की एक दुनिया खोजी। इसने आगे चलकर प्लेटो और अरस्तू के सोच को जन्म दिया। उनके चिंतन ने यूरोप के बौद्धिक आत्मा को आकार दिया। जब महात्मा बुद्ध ने बोधि वृक्ष के नीचे आंखें खोलीं, तो यह केवल आत्मज्ञान का क्षण नहीं था, बल्कि मानव पीड़ा के रहस्य की खोज थी। उनके विचार ने एक ऐसी दुनिया बनाई, जहां करुणा, संयम और आत्मानुशासन मानवता का आधार बने।

वस्तुतः, विचार सोच ही नहीं, अपितु चेतना की वह अवस्था है जिससे सभ्यताएं गढ़ी जाती हैं। विचार में सृजन की अनंत शक्ति निहित है। विचार एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को पशुता से देवत्व की ओर ले जाती है। उसने आग की खोज से लेकर इंटरनेट की सृष्टि तक का सफर तय किया है। हर युग में विचार ने किसी नई दुनिया को जन्म दिया है। कभी धर्म के रूप में, कभी विज्ञान के रूप में तो कभी कला के रूप में। यह विचार ही है जो अंधेरे में दीपक की तरह जलता है और जब एक दीपक जलता है तो लाखों दीये और जगमगाने लगते हैं। विचार मनुष्य में सत्य की भूख जगाता है। विचार मनुष्य को गढ़ता भी है, क्योंकि उसमें सृजन की प्यास है।

कैलाश मांजू बिश्नोई

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सही दिशा में शिक्षा संबंधी सुधार

'शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण की चुनौती' शीर्षक से लिखे आलेख में बद्री नारायण ने मोदी सरकार के कार्यकाल के दौरान उठाए गए अनेक कदमों सहित शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नवाचारी पहल का उल्लेख किया है। वास्तव में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। इनमें से कुछ कदमों से शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त उस जड़ता को तोड़ने में मदद मिलेगी, जिसके कारण पीढ़ियां अपनी विरासत और उसमें विद्यमान अकूत क्षमताओं को विस्मृत कर चुकी थीं। पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था के प्रति मोह उत्पन्न हो गया था। भारतीयता के प्रति घृणा का भाव व्याप्त होने लगा था, जबकि अधिकांश शिक्षाविदों का यह विचार था कि कम से कम प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। इससे शोध एवं नवाचार के प्रति समावेशी रुझान विकसित होंगे। दूसरी बात यह है कि हमारे अनेक शैक्षणिक संस्थानों ने विदेश में अपना विस्तार करना शुरू कर दिया है। किसी भी क्षेत्र का विकास एक सतत प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया सदैव जारी रहनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू हुए पांच वर्ष बीत चुके हैं, मगर उसके अनुरूप पर्याप्त पुस्तकें अभी तक उपलब्ध नहीं कराई जा सकी हैं। यद्यपि शिक्षा पर खर्च में वृद्धि की गई है। नए केंद्रीय विश्वविद्यालय, आइआइटी, प्रबंधन संस्थान स्थापित किए गए हैं, तथापि गुणवत्ता आधारित प्रतिस्पर्धा प्रोत्साहन के लिए अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधारों की दिशा तो सही है, लेकिन उनकी गति बढ़ानी होगी, तभी दशा सुधरेगी।

मुकेश कुमार मनन, पटना

अय्यर का बयान सनातन विरोधी

कांग्रेस अपने निर्माण से ही हिंदुत्व का विरोध करती आई है। विरोध करने का तरीका बदला है। कभी हिंदुत्व को आतंकवाद बताकर, कभी राम मंदिर विरोध करके, तो कभी राम को एक कल्पना बताकर तो कभी राम सेतु को प्राकृतिक बताकर। हिंदुत्व को बदनाम करने के लिए ऐसा ही एक बयान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर ने दिया है। जिसमें कहा है कि हिंदू धर्म हिंदुत्व में अंतर है। हिंदुत्व हिंदू धर्म का विकृत रूप है। हिंदुत्व बहुसंख्यक हिंदुओ के मन मे डर का वातावरण पैदा करता है। 80 प्रतिशत हिंदुओ को 14 प्रतिशत मुसलमान डराता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि गांधीजी का हिंदू धर्म अहिंसा सत्य और सह अस्तित्व पर आधातित है, जबकि सावरकर का हिंदुत्व आक्रमकता तथा टकराव को महत्व देता है। हिंदू एक जीवन जीने का आध्यात्मिक मार्ग है, जबकि हिंदुत्व राजनीतिक सिद्धांत के रूप कार्य करता है। अय्यर के इस वक्तव्य से उनकी मानसिकता का पता लगता है। कोई मानसिक रूप से विकृत व्यक्तित ही हिंदू धर्म और हिंदुत्व में अंतर कर सकता है। समझने की बात है कि हिंदू धर्म और हिंदुत्व में अंतर कैसे हो गया। हिंदू धर्म में जो भी रीति-रिवाज है,उनको मानने का तरीका, पूजा पद्धति इत्यादि सभी हिंदुत्व ही तो हैं। जिस प्रकार सूर्य और प्रकाश में अंतर नहीं कर सकते, उसी प्रकार हिंदू और हिंदुत्व में अंतर कैसे कर सकते हैं। अय्यर का बयान सनातन में फूट डालने का एक योजनात्मक प्रयास है।

ललित शंकर, हरिद्वार

अस्पतालों में दलालों से परेशानी

दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में मरीजों का इलाज के लिए बढ़ता इंतजार केवल संसाधनों चिकित्सकों और स्टाफ की कमी का नतीजा तो है। इसके साथ चिकित्सकों के पास स्टाफकर्मियों और दलालों की अवैध घुसपैठ, सिफारिशी एंट्री और स्टाफ की दादागिरी इसे और गंभीर बना रही है। जिनके सिफारिश या पहचान है उनका इलाज जल्द हो जाता है। जिसका खामियाजा गरीब मरीजों और तीमारदारों को भुगतना पड़ता है। कुछ कर्मचारी परिचितों, दलालों या 'पहचान वालों' को कतार तोड़कर आगे कर देते हैं। विरोध करने पर मरीज या तीमारदार को धमकाना, फाइल रोक देना या अपमानित करना आम बात है जिस कारण मरीज को इलाज कराने में इंतजार बढ़ता रहता है। साथ गंभीर मरीजों की इलाज में देरी होने के कारण हालत बिगड़ जाती है। कुव्यवस्था की जानकारी अस्पताल प्रशासन को है किंतु उनके उपेक्षित रवैये की शिकायत कहां करे? हताश परेशान मरीज व तीमारदार मजबूरी में अस्पताल के बाहर खुले आसमान के नीचे झुलसती गर्मी, हाड़ कंपाती सर्दी तथा बारिश में अगले दिन का इंतजार करते हैं। इलाज में देरी अगर कुव्यवस्था के कारण है तो अस्पताल प्रशासन तथा सरकार को मरीजों के इलाज में पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही सख्ती से लागू करनी होगी जिससे स्टाफ की दादागिरी व निरंकुश दलालों पर पर लगाम लगाई जा सके। उम्मीद है राजनीति इच्छाशक्ति से इस कुव्यवस्था को दूर किया जाएगा ।

सच्चिदानंद सिंह, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली

पोस्ट

भारत स्टारलिंक को व्यावसायिक मंजूरी पर फिलहाल रोक लगाए और ऐसी तकनीकी क्षमता विकसित करे, जिससे उसे जाम किया जा सके, ताकि इसका उपयोग पूर्वोत्तर भारत या जम्मू-कश्मीर में भारत-विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने के औजार के रूप में न किया जा सके।

नवरूप सिंह@TheNavroopSingh

जनता ने सीटें जीरो और वोट शेयर 1.5 प्रतिशत कर दिया, लेकिन आज भी राज ठाकरे यूपी-बिहार और दक्षिण भारतीयों पर ही भड़ास निकालते हैं। किसी को पीटकर, गाली देकर ही जो नेता चर्चा में आ सकता हो, सोचिए वह राजनीति में कितना बड़ा नाकारा होगा।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

चीन और ब्राजील के बाद रेयर अर्थ के तीसरे सबसे बड़े भंडार भारत के पास हैं, इसलिए अमेरिका चाहता है कि भारत उसकी पैक्स-सिलिका पहल का हिस्सा बने। इसका उद्देश्य भारतीय संसाधनों को अपने प्लांट में प्रोसेस कर, फिर वही उत्पाद भारत को बेचना है। इसलिए आवश्यक है कि भारत अपनी प्रसंस्करण क्षमताएं अविलंब विकसित करे। अरविंद@aravind

जनपथ

मरने को तैयार है जनता-ए-ईरान,
खामेनेई हैं पड़े रुई ठूंस कर कान।
रुई ठूंस कर कान बनो मत इतने जिद्दी,
बिगड़ रहे हालात छोड़कर भागो गद्दी।
इंकलाब कह लोग सड़क पर लगे उतरने,
नहीं सकोगे मार उसे जो निकला मरने!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी

दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 180

● फोटो : फ्रीपिक

जाब के नाम पर ठगी

विदेश में नौकरी झांसे से बचें

इनदिनों विदेश में नौकरी दिलाने के बहाने युवाओं से ठगी के खूब मामले देखे जा रहे हैं। नौकरी के नाम पर किसी भी झांसे या फिरौती से सावधान कैसे रहें। ऐसी नौकरियों के लिए सुरक्षित और सही रास्ता क्या अपनाएं, जानें एक्सपर्ट से...

बीते दिनों भारतीय युवाओं को जाब दिलाने के बहाने ईरान बुलाकर उनसे या उनके परिवार से फिरौती मांगने के कई मामले सामने आने के बाद विदेश मंत्रालय को इस संबंध में एडवाइजरी जारी करनी पड़ी। एडवाइजरी में फर्जी जाब के वादों/प्रस्तावों से सावधान रहने की सलाह दी गई। ईरान का प्रकरण तो सिर्फ एक उदाहरण है। बेरोजगारी की चुनौतियों के बीच देश के युवाओं को विदेश में नौकरी दिलाने का सपना दिखाकर तमाम फर्जी एजेंट/नियोक्ताओं ने इसी तरह अपना मायाजाल फैलाया हुआ है।

अशोक सिंह
करियर कंसल्टेंट

हाल ही में कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में भी इसी तरह की खबर सामने आई है, जिसमें साइबर ठग फेक नियोक्ता बनकर लिंक्डइन जैसे प्लेटफार्म से लोगों की जानकारी लेकर उन्हें जाब आफर के बहाने फोन/मेल करते हैं और फिर ठगी करने की कोशिश करते हैं। इन साइबर ठगों ने देश-विदेश में नौकरी दिलाने के नाम पर झांसा, अपहरण, साइबर ठगी और फिरौती का ऐसा खतरनाक ट्रेंड शुरू कर दिया है कि भारतीय विदेश मंत्रालय (एमईए) को समय-समय पर इस संबंध में अलर्ट जारी करना पड़ रहा है। फिर भी ऐसी घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं।

ठगी का नया ट्रेंड : इस नए लुभावने ट्रेंड में ये जालसाज, नौकरी का झूठा आफर देकर पहले युवाओं को विदेश बुलाते हैं। शुरू में सब कुछ लीगल और आकर्षक दिखाया जाता है, जिसमें जाब आफर लेटर, फ्री वीजा, रहने-खाने की सुविधा और मोटा पैकेज आदि होते हैं। युवाओं के विदेश पहुंचते ही उनका पासपोर्ट और फोन तक जब्त कर लिया जाता है। कई मामलों में तो बंधक बनाकर परिवार से फिरौती तक मांगने की घटनाएं सामने आई हैं। इतना ही नहीं, युवाओं से अवैध काम करवाने या साइबर क्राइम में धकेलने जैसी कई रिपोर्ट का भी खुलासा हुआ है।

ठगी के अलग-अलग तरीके: ये ठग बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से युवाओं को फंसाते हैं। आमतौर पर इंटरनेट मीडिया और व्हाट्सएप पर आकर्षक विज्ञापन दिए जाते हैं। इस जाल में फंसने वाले युवाओं का विश्वास जीतने के लिए ये साइबर अपराधी नकली आफर लेटर, कंपनी वेबसाइट और ईमेल आदि से उन्हें भ्रमित कर देते हैं। उन्हें सोचने- समझने का मौका नहीं मिले, इसलिए सीमित सीटें, आज आखिरी मौका जैसे मनोवैज्ञानिक दबाव के बहाने बार-बार काल या मैसेजेज करते हैं। इतना ही नहीं, नकली वीडियो काल इंटरव्यू भी करवाया जाता है। इस तरह से युवाओं से सर्विस फीस या अन्य प्रकार के खर्चों का हवाला देते हुए अच्छी-खासी रकम ऐंठ ली जाती है। कई बार फोन पर ही फर्जी इंटरव्यू कराकर उन्हें फेल कर दिया जाता है। इसके बाद किसी दूसरी नौकरी का आफर देकर विदेश भेजने के बहाने फिर से उनसे पैसे ऐंठे जाते हैं।

लुभावने वादे: आमतौर जो प्रलोभन दिए जाते हैं, उनमें बिना अधिक शैक्षिक योग्यता के बहुत अधिक वेतन और कम काम करना, फ्री वीजा, फ्री टिकट, फ्री रहना-खाना, बिना अनुभव के नौकरी, 7–10 दिनों में ज्वाइनिंग, परिवार को साथ ले जाने का वादा आदि का जिक्र किया जा सकता है।

टारगेट कौन: अमूमन ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्र के युवा ऐसे विज्ञापनों के प्रति तुरंत आकर्षित हो जाते हैं। इनके अलावा, आइटीआइ, डिप्लोमा, ग्रेजुएट बेरोजगार भी ऐसे सपनों को सच समझ बैठते हैं। यही नहीं, विदेश में नौकरी पाने के लिए कुछ भी कर गुजरने की लालसा रखने वाले तमाम युवा इस मकड़जाल में फंस भी जाते हैं।

ऐसे करें सही-गलत की पहचान: अब सवाल यह है कि सही और गलत विज्ञापनों को कैसे परखा जाए। इसके कई संकेत हो सकते हैं, जिनसे थोड़ा-बहुत आभास तो किया ही जा सकता है, जैसे- विज्ञापनदाता एजेंट की जांच कर लेनी चाहिए कि वह प्रोटेक्टर आफ एमिग्रैंट्स (पीओई) में पंजीकृत है या नहीं। पीओई/एजेंट सत्यापन के लिए वेबसाइट www.emigrate.gov.in देखी जा सकती है। यहां से एजेंट की वैधता, प्रत्येक देश के लिए सलाह और अलर्ट जैसी जानकारियां मिल जाती हैं। विदेश मंत्रालय या एमईए की वेबसाइट (www.mea.gov.in) से भी इस संबंध में जानकारियों और दावों की पुष्टि की जा सकती है। यह भी देखें कि क्या सभी आश्वासन लिखित अनुबंध के तौर पर दिए गए हैं? जो भी तथाकथित फीस या सर्विस चार्ज लिया जा रहा है, क्या वह भुगतान सरकारी नियमों के अनुसार है? वीजा की श्रेणी टूरिस्ट वीजा है या वर्क वीजा आदि? इनके अतिरिक्त सभी तरह के दावों का तार्किक विश्लेषण आपको खुद भी करना चाहिए, जैसे फ्री वीजा/पर्यटक वीजा पर जाब दिलाने का दावा कितना लीगल है? क्या फीस के तौर पर धनराशि निजी खाते में मांगी जा रही है?

ये वरतें सावधानी: विदेश में जाब दिलाने के नाम पर पैसा मांगे जाने पर तुरंत भुगतान बिलकुल नहीं करना चाहिए। एजेंट का पीओई नंबर लेकर सत्यापन कर लेना चाहिए। जाब आफर लेटर और कंपनी की जांच एमईए की वेबसाइट से करने में देरी नहीं करनी चाहिए। इस बारे में विदेश रोजगार कार्यालय या पुलिस से भी सलाह ले सकते हैं। समझदार व्यक्ति से भी सलाह लेनी चाहिए।

ठगे जाने पर क्या करें?: स्थानीय पुलिस में एफआइआर दर्ज करवा देनी चाहिए। साइबर क्राइम पोर्टल (cybercrime.gov.in) पर भी शिकायत रजिस्टर करनी चाहिए।

वातचीत : धीरेंद्र पाठक

हेल्पलाइन फोन नंबर (भारत)

एमईए हेल्पलाइन : 1800-11-3090 (मदद सेवा)
ओवरसीज इंडियन हेल्पडेस्क: +91-11-2688-5021
साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर: 1930

भारतीय विदेश मंत्रालय (एमईए) द्वारा जारी अलर्ट

- विदेश में नौकरी के नाम पर अनधिकृत एजेंटों और इंटरनेट मीडिया विज्ञापनों से सावधान रहें।
- केवल सरकारी पोर्टल और पंजीकृत रिक्रूटमेंट एजेंट के माध्यम से ही आवेदन करें।
- किसी भी देश के फ्री वीजा या तुरंत नौकरी जैसे दावों पर भरोसा नहीं करें।
- कुछ देशों में वर्क वीजा नियम सख्त हैं, वहां पर्यटक/फ्री वीजा पर काम करना गैरकानूनी है।

क्यूएस रैंकिंग में गलगोटिया विवि को 15वां स्थान

नोएडा स्थित गलगोटिया विश्वविद्यालय को इस बार क्यूएस रैंकिंग 2026 में पूरे देश में 15 वां स्थान मिला है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय ने निजी विश्वविद्यालयों में हासिल की है। वहीं देश के सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों में इसे 43 वीं रैंक मिली है। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के सीईओ डा. ध्रुव गलगोटिया और चांसलर सुनील गलगोटिया ने बीते दिनों प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उन्होंने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स और टाइम्स हायर एजुकेशन में विश्वविद्यालय के प्रभावशाली प्रदर्शन की सराहना की। विश्वविद्यालय के सीईओ डा. ध्रुव गलगोटिया ने कहा कि हमारा जी-स्केल लर्निंग इकोसिस्टम, सिंगापुर स्थित नानयांग टेक्नोलाजिकल यूनिवर्सिटी का माडल तथा एआइ, सेमीकंडक्टर और ड्रोन जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में की जा रही पहल हमें भविष्य-उन्मुख अकादमिक वातावरण के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ा रही है।

आइआइटी रोपड़ में नई छात्रवृत्ति की घोषणा

छात्रों और युवा पेशेवरों के बीच मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों को देखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ में बीते दिनों डा. ईशान अवधूत शिवानंद योगिक विज्ञान एवं समग्र विकास केंद्र का शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। यह एक बहुउद्देशीय हाल होगा, जो योग, ध्यान, जिमनास्टिक, एरोबिक्स और माइंडफुलनेस विधाओं सहित विविध कल्याण गतिविधियों को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है। समारोह की अध्यक्षता आइआइटी रोपड़ के निदेशक प्रो. राजीव अहुजा ने की। इस अवसर पर डा. ईशान शिवानंद प्रतिभाशाली युवा छात्रवृत्ति का अनावरण किया। इस छात्रवृत्ति के तहत वंचित पृष्ठभूमि के शैक्षणिक रूप से प्रतिभाशाली छात्रों के लिए दस पूर्ण-वित्तपोषित छात्रवृत्तियां प्रदान की जाएंगी। ये छात्रवृत्तियां समान रूप से पांच स्नातक और पांच स्नातकोत्तर छात्रों के लिए होंगी। आइआइटी रोपड़ के निदेशक के अनुसार, ये छात्रवृत्तियां यह सुनिश्चित करेंगी कि प्रतिभाशाली युवा वित्तीय बाधाओं की वजह से पीछे न रहें। यह भारत के भविष्य में एक निवेश है।

हेल्थकेयर का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है हास्पिटल मैनेजमेंट

काउंसलर
पूनम कामदार
councelor@nda.jagran.com

हास्पिटल मैनेजमेंट क्या करियर के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। कृपया मार्गदर्शन करें।

अजय कुमार

हास्पिटल मैनेजमेंट हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेशन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसका मुख्य उद्देश्य अस्पताल की सभी व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाना और मरीजों को बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराना है। इस क्षेत्र में संसाधनों का सही उपयोग, डाक्टरों और स्टाफ का प्रबंधन, नई तकनीक और उपकरणों की व्यवस्था, सुरक्षा और आपात स्थितियों की जिम्मेदारी के अलावा अस्पताल की वित्तीय योजना, कर्मचारियों की सुविधाएं और प्रशासनिक निर्णय भी आता है। हास्पिटल मैनेजमेंट में स्नातक पाठ्यक्रम के लिए विज्ञान वर्ग के साथ 12वीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक आवश्यक होते हैं। इसके बाद आप बैचलर आफ हास्पिटल मैनेजमेंट का यह कोर्स कर सकते हैं। फिर मास्टर आफ हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन और एमबीए इन हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन करने के बाद आगे की पढ़ाई जारी रखने के लिए डाक्टोरल डिग्री भी ले सकते हैं।

निजी हास्पिटल्स की बढ़ती संख्या को देखते हुए निश्चित रूप से यह क्षेत्र एक बेहतर करियर विकल्प हो सकता है।

लड़कियां एनडीए (नेशनल डिफेंस अकादमी) में कैसे प्रवेश कर सकती हैं? इसके लिए किस तरह से तैयारी करें, कृपया बताएं।

आदिति सिंह

भारत में अब लड़कियां भी एनडीए (नेशनल डिफेंस अकादमी) में प्रवेश कर अपने मातृभूमि की सेवा का ख्वाब पूरा कर सकती हैं, अगर वह भारतीय नागरिक हैं। आयु सीमा आमतौर पर 16 से 19 वर्ष के बीच होती है। शैक्षणिक योग्यता के रूप में आर्मी विंग के लिए किसी भी स्ट्रीम से 12वीं पास होना जरूरी है। नेवी और एयर फोर्स के लिए 12वीं में गणित और भौतिकी अनिवार्य है। एनडीए में प्रवेश के लिए यूपीएससी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा देनी होती है, जिसमें गणित और सामान्य अध्ययन के प्रश्न होते हैं। लिखित परीक्षा में सफल होने के बाद एसएसबी इंटरव्यू होता है, जो व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता और मानसिक मजबूती की जांच करता है। अंत में मेडिकल टेस्ट पास करना जरूरी होता है। इस परीक्षा में सफल होने पर सेना में कमीशंड अफसर के रूप में लेफ्टिनेंट के समतुल्य पद पर नियुक्ति मिलती है। इस परीक्षा के सिलेबस, पेपर पैटर्न और बीते वर्षों के प्रश्नपत्र के अनुसार फोकस्ड होकर छह माह में इसकी तैयारी की जा सकती है। साथ में रोजाना एक अखबार पढ़ें।

इस पेज के बारे में अपनी राय और सुझाव भेजें-feature@jagran.com

JAYPEE INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY
(Deemed to be University)
A-10, Sector 62, Noida, Gautam Buddh Nagar-201 309 (U.P.)
AICTE Approved | UGC Approved | NAAC and NBA Accredited | NIRF Ranked

ADMISSIONS 2026
STEP INTO THE FUTURE YOU'VE ALWAYS DREAMT ABOUT!

BTECH AND INTEGRATED MTECH
BTech
- AI&ML
- Biotechnology
- Biotech with specialization in Bioinformatics
- CSE
- CSE (Cyber Security)
- ECE
- Electronics and Computer Engineering
- Electronics Engineering (VLSI Design and Technology)
- Electronics and Communication (Advanced Communication Technology)
- IT
- Mathematics and Computing
- Robotics and Artificial Intelligence

Integrated MTech
Biotechnology, CSE and ECE

1st Top Engineering College in Uttar Pradesh by CSR (2025)
2nd Non Government Technical University (North Zone) by The Week (2025)
5th Non Government Technical University (All India) by The Week (2025)
9th Best Placement Amongst Private Universities in India by India Today(2024)

PLACEMENT MILESTONES
₹94.25 LPA Highest Package (by LinkedIn)
₹13.24 LPA Average Package

OTHER PROGRAMS
BSc | BCom | BA | BBA
BCA | MSc | MCom | MCA
MTech | MBA | MDes | PhD
Online MBA (2 Years) and
Online BBA (3 Years) (Visit www.jiitonline.com)

OUR PROMINENT RECRUITERS

APPLICATION FORMS AVAILABLE

JAYPEE EDUSPHERE | IGNITED MINDS INSPIRED SOULS
Apply Online: www.getadmissions.com
Contact: +91- 7428630800/600, +91 (120) 2594400/300
admission@jiit.ac.in www.jiit.ac.in
Apply Now

एक नजर में

बिहार सरकार सड़क दुर्घटना पर डेढ़ लाख तक कराएगी कैशलेस उपचार

पटना : बिहार सरकार राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य उच्चपथ के साथ ग्रामीण इलाकों की सड़कों पर भी दुर्घटना में घायलों के उपचार के लिए अस्पताल में डेढ़ लाख रुपये तक कैशलेस उपचार की सहायता देगी। साथ ही घायलों को अस्पताल ले जाने वाले मददगार राहवीरों को 25 हजार का पुरस्कार दिया जाएगा। परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने बताया कि दिल्ली में आयोजित एक सम्मेलन में इसकी सहमति बनी है। दुर्घटना की तिथि से सात दिन के अंदर अस्पताल से समन्वय कर इस सुविधा का लाभ दिया जाएगा। (राब्यू)

बिहार में बुजुर्गों को घर पर मिलेगी जमीन-फ्लैट रजिस्ट्री की सुविधा

पटना : बिहार में अब 80 वर्ष या उससे अधिक उम्र के जरूरतमंदों के लिए जमीन व फ्लैट की रजिस्ट्री की सुविधा उनके घर पर ही उपलब्ध कराई जाएगी। आनलाइन आवेदन के सात कार्य दिवसों के अंदर रजिस्ट्री की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाएगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को अपने एक्स हैंडल पर इस आशय की जानकारी साझा की। इस व्यवस्था को एक अप्रैल 2026 के प्रभाव से लागू करने का निर्देश संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिया गया है। (राब्यू)

लश्कर-ए-तैयबा में दरार, विद्रोह के संकेत

- कई मसलों पर पाक सेना से नहीं बैठ रहा लश्कर का तालमेल
- आपरेशन सिंदूर के बाद खला पाक एस्टैब्लिशमेंट का व्यवहार

नई दिल्ली, आइएएनएस: पाकिस्तान के लंबे समय से आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा में गंभीर आंतरिक फूट के संकेत मिले हैं। भारतीय खुफिया एजेंसियों के अनुसार, संगठन एक बड़े विभाजन की ओर बढ़ रहा है, जिससे पाकिस्तान की आंतरिक सुरक्षा स्थिति और अधिक अस्थिर हो सकती है। पाक खुफिया एजेंसी, आइएसआइ व पाकिस्तानी सेना की लाइन पर चलने वाले लश्कर में यह पहली बार है जब खुलकर असंतोष सामने आया है।

खुफिया अधिकारियों के मुताबिक, हाल के महीनों में लिए गए कुछ फैसलों को लेकर लश्कर के कई शीर्ष नेता नाराज हैं। आपरेशन सिंदूर के दौरान संगठन के ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा, जिसके बाद पुनर्गठन की प्रक्रिया कठिन हो गई। इस दौरान कई कैडरों ने यह महसूस किया कि आइएसआइ और पाकिस्तानी सेना उन्हें पर्याप्त सुरक्षा देने में विफल रही। आइएसआइ ने शुरुआती मतभेद सुलझाने की कोशिश की, पर सेना और खुफिया एजेंसियों द्वारा लश्कर को तालिबान, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान और बलूचिस्तान नेशनलिस्ट आर्मी के खिलाफ इस्तेमाल करने के फैसले ने संगठन के भीतर व्यापक नाराजगी पैदा कर दी है। लश्कर खुले तौर पर तालिबान का समर्थक रहा है, ऐसे में पाकिस्तान सेना द्वारा अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ कार्रवाई ने असंतोष और बढ़ा दिया है।

हाल ही में लश्कर कमांडर मोहम्मद अशफाक राणा का एक वीडियो बहुप्रसारित हुआ, जिसमें वह प्रधानमंत्री और आसिम मुनीर की आलोचना करते नजर आता है। खुफिया सूत्रों का कहना है कि लश्कर प्रमुख हाफिज सईद का लंबे समय से सार्वजनिक रूप से नजर न आना भी इस बात का संकेत है कि संगठन और एस्टैब्लिशमेंट के बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि लश्कर के कैडर खुले तौर पर विद्रोह करते हैं या टीटीपी जैसे संगठनों में शामिल होते हैं, तो यह पाकिस्तान के लिए बेहद खतरनाक स्थिति पैदा कर सकता है।

सांप ने डसा तो उसे लेकर अस्पताल पहुंचा शख्स

जागरण संवाददाता, मथुरा : जिला अस्पताल में सोमवार को एक शख्स हाथ में डेढ़ फीट लंबा सांप लेकर इमरजेंसी वार्ड में इलाज कराने जा पहुंचा। सांप को देख तीमारदार, मरीज और डाक्टर घबरा गए। डाक्टर ने सांप को छोड़कर आने को कहा तो उसने हंगामा कर दिया। ई-रिक्शा सड़क पर खड़ा कर जाम लगा दिया। मथुरा जिले के शिवाजी नगर के ई-रिक्शा चालक दीपक को सांप ने डस लिया। दीपक उसे पकड़कर सीधे अस्पताल पहुंच गया। उसने जिद पकड़ ली कि पहले उसे इंजेक्शन लगाया जाए, तभी वह रास्ते से हटेगा। पुलिस के दबाव पर उसने सांप को एक डिब्बे में बंद किया और दोबारा अस्पताल गया। वहां चिकित्सकों ने उसे तत्काल एंटी स्नेक वेनम का इंजेक्शन लगाया।

सांप को पकड़कर जाम लगा रहे शख्स को समझाते पुलिसकर्मी ● वीडियो ग्रैब

सांप पकड़कर रील बनवा रहे शिक्षक को सांप ने डंसा

जासं, पुरनहिया (शिवहर) : बिहार में शिवहर जिले के बसंतपट्टी गांव में सांप को पकड़ने के बाद रील बनवाने के चक्कर में मध्य विद्यालय बराही जगदीश बालक के शिक्षक 51 वर्षीय नवल किशोर सिंह की मौत हो गई। सांप ने उन्हें डस लिया। उपचार के लिए मुजफ्फरपुर ले जाते समय रास्ते में उन्होंने दम तोड़ दिया। नवल किशोर सांपों के जानकार थे।

बेअंत सिंह के हत्यारे की याचिका पर सुनवाई दो सप्ताह के लिए टली

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के हत्यारे जगतार सिंह हवारा की याचिका पर सुनवाई मंगलवार को दो सप्ताह के लिए टाल दी। याचिका में हवारा ने दिल्ली की तिहाड़ जेल से पंजाब की किसी भी जेल में स्थानांतरण की मांग की है। बब्बर खालसा का आतंकी हवारा बेअंत सिंह की हत्या मामले में उम्रकैद की सजा भुगत रहा है।

जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस एन. कोटिस्वर सिंह की पीठ ने सुनवाई को स्थगित कर दिया क्योंकि सालिसिटर जनरल तुषार मेहता उपलब्ध नहीं थे। पिछले वर्ष 27 सितंबर को, सुप्रीम कोर्ट ने हवारा की याचिका पर केंद्र सरकार, चंडीगढ़ प्रशासन और दिल्ली तथा पंजाब सरकारों को नोटिस जारी किए थे। हवारा 31 अगस्त 1995 को चंडीगढ़ स्थित सिविल सचिवालय के प्रवेश द्वार पर हुए विस्फोट में बेअंत सिंह की हत्या से संबंधित मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है। याचिका में कहा गया है कि उसे तिहाड़ जेल से पंजाब की किसी अन्य जेल में स्थानांतरित किया जाना चाहिए क्योंकि उसके खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी में कोई मामला लंबित नहीं है। पंजाब की जेल में स्थानांतरण के अनुरोध का एक कारण यह है कि हवारा की बेटी पंजाब में है।

कोल ब्लाक घोटाले से जुड़े मामले में कंपनी निदेशक समेत तीन को सजा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : कोल ब्लाक आवंटन घोटाले से जुड़े एक मामले में विशेष सीबीआइ अदालत ने एसकेएस इस्पात एवं पावर लिमिटेड और उसके निदेशक दीपक गुप्ता समेत अन्य को दोषी ठहराया है। यह कोल ब्लाक घोटाले के मामलों में 20वीं सजा है। अदालत ने दोषी दीपक गुप्ता को तीन वर्ष की सश्रम कारावास और 10 लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है।

अदालत ने कंपनी के अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता सत्य नारायण द्विवेदी को दो वर्ष की जेल और 20 हजार रुपये जुर्माना और अमृत सिंह को एक वर्ष की कैद और 10 हजार रुपये जुर्माने की सजा दी है। वहीं, एसकेएस इस्पात एंड पावर लिमिटेड पर 50 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। यह मामला मध्य प्रदेश के रावनवारा नार्थ कोल ब्लाक के आवंटन से जुड़ा है। सीबीआइ ने आरोप लगाया था कि कंपनी के निदेशक व अधिकृत हस्ताक्षरकर्ताओं ने आवेदन और फीडबैक फार्म में कंपनी की वित्तीय स्थिति, उत्पादन क्षमता और पर्यावरणीय स्वीकृतियों को लेकर गलत जानकारियां दी थीं, ताकि कोल ब्लाक हासिल किया जा सके।

सीबीआइ ने चार अगस्त 2014 को मुकदमा दर्ज किया था और जांच के बाद 31 अगस्त 2016 को एसकेएस इस्पात लिमिटेड, उसके निदेशक दीपक गुप्ता, सत्य नारायण द्विवेदी और अमृत सिंह के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल किया गया। मुकदमे की सुनवाई पूरी होने के बाद अदालत ने सभी आरोपितों को दोषी ठहराते हुए सजा सुनाई।

शराब घोटाले के मुकदमे को स्थानांतरित करने की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई

नई दिल्ली, प्रेट्र: सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को छत्तीसगढ़ के कथित शराब घोटाले से संबंधित मुकदमे को स्थानांतरित करने की याचिका पर सुनवाई की। इस घोटाले में छत्तीसगढ़ व उप्र दोनों जगहों पर प्राथमिकी दर्ज की गई हैं। चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जे.बागची व जस्टिस विपुल एम पंचोली की पीठ ने घोटाले के आरोपितों में शामिल छत्तीसगढ़ सरकार के रिटायर्ड अधिकारी निरंजन दास की ओर से पेश वकील रोहतगी व शोएब आलम की दलीलें सुनीं। दास ने उप्र में दर्ज प्राथमिकी के आधार पर मुकदमे को छत्तीसगढ़ स्थानांतरित करने की मांग की। अदालत ने कहा कि उप्र में भी मामले के सह-आरोपित हैं, मामला स्थानांतरित करने से उन पर बुरा असर पड़ सकता है। अदालत ने आदेश दिया कि तीनों संबंधित मामले एक साथ जोड़े जाएं व 19 जनवरी को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किए जाएं।

मजीठिया की सुरक्षा में चूक हुई तो अफसर होंगे जिम्मेदार : हाई कोर्ट

राज्य ब्यूरो, जागरण ● चंडीगढ़: पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री बिक्रम मजीठिया की सुरक्षा को लेकर पंजाब सरकार को कड़े और स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं। अदालत ने कहा कि मजीठिया की सुरक्षा सुनिश्चित करना राज्य सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है और इसमें ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कोर्ट ने दो टूक शब्दों में चेतावनी दी कि यदि मजीठिया की सुरक्षा व्यवस्था में कोई भी चूक मिली, तो इसकी सीधी जिम्मेदारी एडीजीपी (जेल) और नाभा जेल के अधीक्षक की होगी। अदालत ने स्पष्ट किया कि ऐसी स्थिति में संबंधित अफसरों के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से कार्रवाई की जा सकती है।

अदालत ने कहा कि हिरासत में बंद किसी भी व्यक्ति की सुरक्षा केवल औपचारिक दायित्व नहीं बल्कि कानून के शासन का मूल तत्व है। कोर्ट ने पंजाब सरकार को निर्देश दिया कि मजीठिया की सुरक्षा के संबंध में किए गए सभी इंतजामों की नियमित समीक्षा हो और सुनिश्चित किया जाए कि उन्हें किसी भी प्रकार का खतरा न हो। अदालत को अवगत कराते हुए मजीठिया के वकील ने एडीजीपी इंटेलिजेंस के हालिया पत्र का हवाला दिया, जिसमें बताया गया है कि मजीठिया को जेल के भीतर भी एक आतंकी संगठन से खतरा है।

एक नजर में

दिसंबर में वनस्पति तेल आयात आठ प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली: पिछले वर्ष दिसंबर में भारत का वनस्पति तेल आयात आठ प्रतिशत बढ़कर 13.83 लाख टन तक रहा है। साल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन (एसईए) के अनुसार, यह वृद्धि सोयाबीन और सूरजमुखी तेल के ज्यादा आयात के कारण हुई है। दिसंबर 2024 में 12.75 लाख टन वनस्पति तेल खरीदा था। इसमें खाद्य और गैर-खाद्य तेल शामिल हैं। पिछले महीने पाम तेल आयात 20 प्रतिशत घटकर 5.07 लाख टन रहा है, जो पिछले वर्ष समान अवधि में 6.32 लाख टन था। सूरजमुखी तेल का आयात 32.19 प्रतिशत बढ़कर 3.49 लाख टन रहा है। (प्रेट्र)

वेनेजुएला के घटनाक्रम का तेल कीमतों पर असर नहीं

नई दिल्ली: रेटिंग एजेंसी क्रिसिल रेटिंग्स ने मंगलवार को कहा कि वेनेजुएला के हालिया घटनाक्रम का कच्चे तेल की कीमतों पर निकट भविष्य में कोई खास असर पड़ने की संभावना नहीं है। इसका कारण यह है कि वैश्विक आपूर्ति में इस लैटिन अमेरिकी देश की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत कम है। क्रिसिल ने एक नोट में कहा कि अगर स्थिति बिगड़ती है और वेनेजुएला में कच्चे तेल उत्पादन में बाधा आती है, तो भी वैश्विक तेल कीमतों पर इसका असर सीमित रहने की संभावना है। (प्रेट्र)

चौथी तिमाही में 2.6% से कम रहेगी उपभोक्ता महंगाई

नई दिल्ली: यूनियन बैंक आफ इंडिया ने ताजा रिपोर्ट में कहा है कि चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2026) के दौरान औसत उपभोक्ता या खुदरा महंगाई 2.6 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। यह आरबीआइ के अनुमान 2.9 प्रतिशत से कम है। रिपोर्ट में अपने उस अनुमान को भी बरकरार रखा है जिसमें फरवरी या अप्रैल 2026 में रेपो रेट में 25 आधार अंक की कटौती की संभावना जताई गई थी। बता दें कि दिसंबर 2025 में खुदरा महंगाई दर 1.33 प्रतिशत रही है जो नवंबर 2025 की 0.71 प्रतिशत से ज्यादा है। (एएनआइ)

2025 में 44.90 लाख यात्री वाहनों की थोक बिक्री

जीएसटी सुधारों के कारण कीमतों में कमी ने यात्री वाहनों की थोक बिक्री को उच्च स्तर पर पहुंचाया

नई दिल्ली, प्रेट्र: जीएसटी सुधारों के कारण कीमतों में कमी से त्योहारों के दौरान वाहन बिक्री में मजबूती रही है। इसकी बदौलत कैलेंडर वर्ष 2025 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री अब तक के उच्चतम स्तर पर रही है। उद्योग संगठन सोसायटी आफ इंडिया आटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स (सियाम) के अनुसार, पिछले कैलेंडर वर्ष में यात्री वाहनों की कुल थोक बिक्री पांच प्रतिशत वृद्धि के साथ 44,89,717 लाख इकाई रही है, जो 2024 में 42,74,793 इकाई थी। कंपनियों से डीलरों को होने वाली आपूर्ति को थोक बिक्री कहा जाता है।

सियाम के डाटा के अनुसार, पिछले वर्ष यूटिलिटी वाहनों की डिलीवरी 29,54,279 इकाई रही है जो 2024 में 27,49,932 इकाइयों की तुलना में सात प्रतिशत अधिक है। यात्री कारों की थोक बिक्री में मामूली वृद्धि हुई और यह 13,79,884 इकाइयों पर पहुंच गई, जबकि वैन की डिलीवरी में पिछले वर्ष 2024 की तुलना में एक प्रतिशत की वृद्धि हुई। तीन पहिया और वाणिज्यिक वाहन खंडों ने भी 2025 में अब तक की सबसे अधिक डिलीवरी देखी।

तीन पहिया वाहनों की थोक बिक्री 2025 में 7,88,429 इकाई रही है, जो 2024 की 7,28,670 इकाई की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक है। इसी प्रकार, वाणिज्यिक वाहनों की थोक बिक्री 10,27,877 इकाई रही है। यह 2024 में 9,54,051 इकाई की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक है। दो पहिया वाहनों की बिक्री पिछले वर्ष 2,05,00,639 इकाई रही है, जो 2024 की 1,95,43,093 इकाई की तुलना में पांच प्रतिशत अधिक है।

सियाम के प्रेसिडेंट शैलेश चंद्र का कहना है कि 2025 भारतीय आटो उद्योग के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष रहा है। वर्ष की शुरुआत सुस्ती के साथ रही और और उद्योग ने आपूर्ति पक्ष की चुनौतियों का सामना करना जारी रखा। आयकर राहत, लगातार रेपो दर में कटौती और जीएसटी 2.0 के कार्यान्वयन जैसे कई संरचनात्मक नीति सुधारों ने सकारात्मक मांग की नींव रखी। जीएसटी दरों में कमी ने वाहनों को अधिक सुलभ बनाया और क्षेत्र में नई गति का संचार किया। वर्ष के दौरान सभी खंडों में व्यापक वृद्धि रही, जिसमें यात्री वाहन, वाणिज्यिक वाहन और तीन पहिया वाहनों ने अब तक की सबसे अधिक बिक्री दर्ज की और दोपहिया वाहनों ने कैलेंडर वर्ष में दूसरी सबसे अधिक बिक्री की। 2025 में सभी वाहन खंडों में निर्यात में दो अंकों की वृद्धि देखी गई। उम्मीद है कि यह गति 2026 में भी जारी रहेगी।

5 प्रतिशत बढ़ी पिछले कैलेंडर वर्ष में यात्री वाहनों की कुल थोक बिक्री

29,54,279 यूटिलिटी वाहनों की डिलीवरी की कंपनियों ने डीलरों को

2,05,00,639 इकाई रही दोपहिया की थोक बिक्री पिछले कैलेंडर वर्ष में

10,27,877 इकाई रही वाणिज्यिक वाहनों की डिलीवरी वर्ष 2025 में

तीसरी तिमाही में रही रिकार्ड थोक बिक्री

नई दिल्ली, आइएएनएस: चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर 2025) के दौरान आटोमोबाइल उद्योग का प्रदर्शन बेहतर शानदार रहा है। त्योहारी मांग और नीतिगत मदद के कारण बीती तिमाही में सभी प्रमुख वाहन श्रेणी में अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री रही है। तीसरी तिमाही में यात्री वाहनों की बिक्री 20.6 प्रतिशत बढ़कर 12.76 लाख इकाई रही है, जो अब तक की सबसे अच्छी तिमाही बिक्री है।

दिसंबर में 39% बढ़ी दोपहिया की बिक्री

दिसंबर 2025 के दौरान यात्री वाहनों की थोक बिक्री में 27 प्रतिशत की वृद्धि रही है। सियाम के डाटा के अनुसार, पिछले महीने कंपनी ने डीलरों को 3,99,216 यात्री वाहनों की आपूर्ति की है, जो दिसंबर 2024 में 3,14,934 इकाई थी। यह यूटिलिटी वाहनों की मजबूत मांग के कारण हुआ है। पिछले महीने दोपहिया की थोक बिक्री 39 प्रतिशत बढ़कर 15,41,036 इकाई रही है, जो दिसंबर 2024 में 11,05,565 इकाई थी। तीन पहिया वाहनों की कुल थोक बिक्री पिछले महीने 61,924 इकाई रही है जो दिसंबर 2024 में 52,733 इकाइयों की तुलना में 17 प्रतिशत अधिक है।

अब 2.71 लाख रुपये किलो के नए उच्च स्तर पर चांदी

- दिल्ली में दो दिन में 21 हजार रुपये किलो बढ़ी सफेद धातु
- सोना 1.45 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के नए उच्च स्तर पर पहुंचा

नई दिल्ली, प्रेट्र: स्टाकिस्ट की ओर से लगातार खरीदारी के कारण घरेलू बाजार में सोना और चांदी की कीमतों में तेजी जारी है। आल इंडिया सराफा एसोसिएशन के अनुसार, मंगलवार को राजधानी दिल्ली में चांदी की कीमतों में छह हजार रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई। अब इसका मूल्य 2.71 लाख रुपये प्रति किलो के नए उच्च स्तर पर पहुंच गया है। सोमवार को चांदी 15 हजार रुपये बढ़कर 2.65 हजार रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई थी।

इसी तरह, सोने के मूल्य में 400 रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई है और यह 1.45 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के नए उच्च स्तर पर पहुंच गया है। कैलेंडर वर्ष 2026 में अब तक चांदी 32 हजार रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई है। 31 दिसंबर 2025 को चांदी का मूल्य 2.39 लाख रुपये प्रति किलोग्राम था। बीते दो सत्रों में ही चांदी की कीमत 21 हजार रुपये बढ़ गई है।

कारोबारी इस तेजी की वजह बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच सुरक्षित संपत्तियों की लगातार मांग को बता रहे हैं। वैश्विक बाजारों की बात करें तो सोने में 10.93 डालर की गिरावट रही है और यह 4,586.49 डालर प्रति औंस हो गया है। सोमवार को यह 4,630.47 डालर प्रति औंस पर पहुंच गया था। हालांकि, चांदी 0.58 प्रतिशत बढ़कर 85.64 डालर प्रति औंस रही है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

पिछले वर्ष इलेक्ट्रानिक्स निर्यात चार लाख करोड़ रुपये के पार

केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स मंत्री ने कहा, इस वर्ष चार सेमीकंडक्टर संयंत्रों में उत्पादन शुरू होने से निर्यात में और बढ़ोतरी होगी

नई दिल्ली, प्रेट्र: कैलेंडर वर्ष 2025 के दौरान भारत का इलेक्ट्रानिक्स निर्यात चार लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है। केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक इंटरनेट मीडिया पोस्ट में कहा है कि इस वर्ष चार सेमीकंडक्टर संयंत्रों में उत्पादन शुरू होने से निर्यात में और वृद्धि की उम्मीद है।

आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में इलेक्ट्रानिक उत्पादन लगभग 11.3 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की संभावना है, जबकि निर्यात 3.3 लाख करोड़ रुपये के आसपास रहेगा। वैष्णव ने एक रिपोर्ट साझा की है, जिसमें कहा गया है कि भारत से आइफोन का निर्यात 2025 में 2.03 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा, जो 2024 में एपल द्वारा निर्यात किए गए 1.1 लाख करोड़ रुपये से लगभग दोगुना है। केंद्रीय मंत्री का कहना है कि इलेक्ट्रानिक्स निर्यात नौकरियां सृजित करेगा और विदेशी मुद्रा लाएगा। उद्योग के अनुमान के अनुसार, इलेक्ट्रानिक्स क्षेत्र में 25 लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। इंडिया सेलुलर एंड इलेक्ट्रानिक्स एसोसिएशन के अनुसार, चालू वित्त वर्ष के अंत तक देश में मोबाइल फोन उत्पादन 75 अरब डालर (लगभग 6.76 लाख करोड़ रुपये) तक पहुंचने की उम्मीद है, जिसमें 30 अरब डालर या लगभग 2.7 लाख करोड़ रुपये का निर्यात शामिल है।

बीसीसीएल के आइपीओ में 146 गुना आवेदन

नई दिल्ली, प्रेट्र: कोल इंडिया की सब्सिडियरी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आइपीओ) को निवेशकों की जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। इस आइपीओ को सब्सक्रिप्शन के अंतिम दिन मंगलवार को कुल 146.81 गुना आवेदन मिले।

एनएसई के डाटा के अनुसार, इस आइपीओ में 34,69,46,500 शेयर बिक्री के लिए पेश किए गए थे। इसके सापेक्ष 50,93,44,51,200 आवेदन खरीदने के लिए आवेदन मिले हैं। योग्य संस्थागत खरीदारी (क्यूआइबी) श्रेणी में 310.81 गुना, गैर-संस्थागत निवेशक श्रेणी में 258.04 गुना और खुदरा व्यक्तिगत निवेशक श्रेणी में 49.26 गुना आवेदन मिले हैं। इस आइपीओ का आकार 1,071 करोड़ रुपये है और यह कैलेंडर वर्ष 2026 का पहला आइपीओ है।

बजट में आयात शुल्क को बनाएं तर्कसंगत

वैश्विक कंसल्टेंसी फर्म डेलाइट इंडिया ने कहा, इससे घरेलू मैन्यूफैक्चरिंग और निर्यात को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी

नई दिल्ली, प्रेट्र: वैश्विक कंसल्टेंसी फर्म डेलाइट इंडिया ने मंगलवार को कहा कि आगामी बजट में आयात शुल्क को तर्कसंगत बनाने और आवंटन में वृद्धि घरेलू मैन्यूफैक्चरिंग और निर्यात को बढ़ावा देने में सहायक होगी।

कंसल्टेंसी फर्म ने विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) के नियमों में सुधार जैसे- घरेलू आपूर्ति को शुल्क-मुक्त आधार पर अनुमति देना, उप-ठेकेदारी मानदंडों को सरल बनाना और मूल्य संवर्धन को आयात शुल्क से छूट देना और सीमित आयात एकमुश्त समाधान योजना को लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया। कहा कि इससे प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार और मुकदमेबाजी में कमी आएगी। वित्त वर्ष 2026-27 के लिए केंद्रीय बजट एक फरवरी को पेश होने की संभावना है।

डेलाइट इंडिया के पार्टनर गुलजार डिडवानिया का कहना है कि एक प्रमुख उपाय यह होगा कि आयात शुल्क संरचना को और अधिक समुचित किया जाए। उन क्षेत्रों में शुल्क कम किया जाए, जहां भारत ने अनुकूल मैन्यूफैक्चरिंग क्षमता हासिल कर ली है। जबकि तैयार माल पर शुल्क बढ़ाना चाहिए। यह दृष्टिकोण तैयार उत्पादों के आयात को हतोत्साहित करेगा, घरेलू मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देगा और निर्यात को मजबूत आधार तैयार करेगा।

नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग ने मांगा प्रोत्साहन

नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग ने आगामी बजट में रिसर्च और डेवलपमेंट (आरएंडडी) के साथ मैन्यूफैक्चरिंग के लिए प्रोत्साहन मांगा है। उद्योग ने सरकार से ट्रांसमिशन इन्फ्रास्ट्रक्चर और लंबी अवधि के ग्रीन फाइनेंस को बढ़ाने के लिए भी उपाय करने को कहा है। ओएमसी पावर के सीईओ रोहित चंद्रा के अनुसार, डिस्ट्रीब्यूटेड सोलर और हाइब्रिड सिस्टम को बढ़ाने के लिए किफायती व लंबी अवधि के ग्रीन फाइनेंस तक पहुंच बहुत जरूरी हो गई है। सोलेक्स एनर्जी के चेयरमैन चेतन शाह का कहना है कि रिसाइक्लिंग के लिए प्रोत्साहन की जरूरत है।

एसआइपी के जरिये पिछले वर्ष 3.34 लाख करोड़ रुपये का निवेश

नई दिल्ली, प्रेट्र: सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान्स (एसआइपी) के जरिये 2025 में म्यूचुअल फंड में कुल निवेश 3.34 लाख करोड़ रुपये रहा है। यह अनुशासित और लंबी अवधि में संपत्ति सृजन के लिए निवेशकों की बढ़ती दिलचस्पी के कारण संभव हुआ है।

एसोसिएशन आफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के अनुसार, एसआइपी के जरिये म्यूचुअल फंड में 2024 में 2.68 लाख करोड़ रुपये और 2023 में 1.84 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। दिसंबर में एसआइपी निवेश 31 हजार करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्च स्तर पर रहा है। 2025 के अंत म्यूचुअल फंड उद्योग का एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) 80.23 लाख करोड़ रुपये रहा है, जो 2024 के अंत में 67 लाख करोड़ रुपये था।

आरटीई के तहत 25% आरक्षण लागू करना राष्ट्रीय मिशन हो: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के बच्चों को शिक्षा में प्रवेश देना "राष्ट्रीय मिशन" होना चाहिए। कोर्ट ने मंगलवार को केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि वे निजी गैर-अल्पसंख्यक, अनुदान-रहित स्कूलों में 25 प्रतिशत आरक्षण के प्रविधान को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए स्पष्ट नियम और विनियम तैयार करें। न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अतुल एस चंदुरकर की पीठ ने कहा कि ईडब्ल्यूएस श्रेणी के बच्चों को प्रवेश देना संबंधित सरकार और स्थानीय प्राधिकरण का दायित्व है। पीठ उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें एक व्यक्ति ने शिकायत की थी कि 2016 में सीटें उपलब्ध होने के बावजूद उसके बच्चों को आरटीई के तहत मुफ्त शिक्षा में प्रवेश नहीं मिला। (प्रेट्र)

बहुदिव्यांगता से जूझ रही महिला को तुरंत नौकरी दे कोल इंडिया : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत कोल इंडिया को बहुदिव्यांगता से जूझ रही महिला को तुरंत नौकरी देने का मंगलवार को आदेश दिया। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने कोल इंडिया के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि वह बहुदिव्यांगता से जूझ रही महिला सुजाता बोरा के लिए असम के तिनसुकिया में मार्घेरिटा कार्यालय में सुपरन्यूमेरी (अतिरिक्त) पद सृजित करें और उसे नियुक्त करें। (प्रेट्र)

आरबीआइ ने यूसीबी को फिर से लाइसेंस देने का प्रस्ताव पेश किया

मुंबई: आरबीआइ ने मंगलवार को करीब 22 वर्ष बाद शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए फिर से लाइसेंस देने का प्रस्ताव दिया है। यह कई रेग्युलेटरी जरूरतों के अधीन होगा, जिसमें 300 करोड़ रुपये की न्यूनतम पूंजी सीमा शामिल है। आरबीआइ ने 2004 में यूसीबी के लिए लाइसेंस देने पर रोक लगा दी थी। इसका कारण यह था कि नए लाइसेंस पाने वाले बैंकों में से बड़ी संख्या में कम समय में ही आर्थिक रूप से कमजोर हो गए थे। नए प्रस्ताव पर 13 फरवरी तक टिप्पणियां मांगी गई हैं। (प्रेट्र)

सरकारी कर्मियों के खिलाफ जांच से पूर्व अनुमति वाले कानून पर सुप्रीम कोर्ट का खंडित फैसला

- जस्टिस विश्वनाथन ने धारा17ए को वैध ठहराया तो नागरत्ना ने इसे असंवैधानिक करार दिया
- अब इस मामले पर नई पीठ विचार करेगी, मामला मुख्य न्यायाधीश को भेजा गया

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने सरकारी कर्मचारी के खिलाफ जांच शुरू करने से पूर्व अनुमति लेने का प्रविधान करने वाली भ्रष्टाचार निरोधक कानून की धारा 17ए की वैधानिकता पर खंडित फैसला सुनाया है। दो न्यायाधीशों की पीठ ने मतभिन्नता का फैसला दिया है। जस्टिस केवी विश्वनाथन ने धारा 17ए को संवैधानिक ठहराते हुए बरकरार रखा है, जबकि जस्टिस बीवी नागरत्ना ने धारा 17ए को असंवैधानिक करार देते हुए रद कर दिया है। दो न्यायाधीशों के मतभिन्नता वाले फैसले को देखते हुए अब इस मामले पर नई पीठ विचार करेगी। ऐसे में फिलहाल कानून जस का तस लागू रहेगा।

भ्रष्टाचार निरोधक कानून 1988 में 2018 में संशोधन करके धारा 17ए जोड़ी गई थी। यह धारा कहती है कि इस कानून में किसी भी लोक सेवक यानी सरकारी अधिकारी के खिलाफ जांच करने से पहले सक्षम अथारिटी से पूर्व अनुमति लेनी होगी। अगर मामला उस अधिकारी के दायित्वों के निर्वहन में लिए गए किसी निर्णय या संस्तुति से संबंधित है। गैर सरकारी संगठन सेंटर फार पब्लिक इंटरेस्ट लिटीगेशन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर सरकारी अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में जांच से पहले सक्षम अथारिटी से इजाजत लेने के इस कानून की वैधानिकता को चुनौती दी थी।

फैसले में जस्टिस नागरत्ना ने प्रविधान को असंवैधानिक ठहराया है तो जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि प्रविधान संवैधानिक रूप से वैध है बशर्ते कि सरकार के बजाए पूर्व अनुमोदन लोकपाल या लोकायुक्त की सिफारिश पर निर्भर करेगा। दोनों न्यायाधीशों में मतभिन्नता को देखते हुए पीठ ने इस मामले को प्रधान न्यायाधीश के समक्ष पेश करने का आदेश दिया है। जस्टिस नागरत्ना ने कहा कि यदि प्रारंभिक जांच की अनुमति नहीं दी जाती तो सच्चाई अधर में लटकी रहेगी, जबकि जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि धारा 17ए को रद करने से समस्या और भी गंभीर हो जाएगी। उचित प्रक्रिया यह होगी कि धारा 17ए के तहत शिकायतों को लोकपाल के समक्ष भेजा जाए। लोकपाल को शिकायत में दम लगता है तो वह जांच का आदेश दे सकता है।

युवा पीढ़ी अवैध संपत्ति को ठुकराए: जस्टिस नागरत्ना

जस्टिस नागरत्ना ने देश में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता जताते हुए युवाओं से अपील की है कि वे अपने माता-पिता या अभिवावकों द्वारा अवैध या भ्रष्ट साधनों से अर्जित संपत्ति को अस्वीकार करें। उन्होंने कहा कि लोभ और ईर्ष्या की प्रवृत्ति को मन से हटना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यही भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का मूल है। भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए समाज में आध्यात्मिक सोच विकसित करना जरूरी है। कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्तियों के प्रति किसी भी स्तर पर कोई भी नरमी नहीं दिखाई जा सकती, चाहे अपराध छोटा ही क्यों न हो।

सावरकर की तस्वीर हटाने संबंधी याचिका पर सुनवाई से इन्कार

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने संसद और अन्य सार्वजनिक स्थानों से विनायक दामोदर सावरकर की तस्वीरें हटाने की मांग वाली जनहित याचिका पर सुनवाई करने से मंगलवार को इन्कार कर दिया। अदालत ने याचिकाकर्ता को जुर्माना लगाने की चेतावनी दी, हालांकि याचिकाकर्ता को याचिका वापस लेने की अनुमति दे दी।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत, जस्टिस जयमाल्या बागची व जस्टिस विपुल एम पंचोली की बेंच ने निरर्थक याचिका दायर करने के लिए याचिकाकर्ता सेवानिवृत्त भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी बी. बालमुरुगन को चेतावनी दी कि अदालत का समय बर्बाद करने के लिए भारी लागत लगाई जा सकती है। बालामुरुगन ने याचिका में संसद के केंद्रीय कक्ष और अन्य सार्वजनिक स्थानों से सावरकर के चित्र हटाने का निर्देश देने की मांग की थी। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, कृपया इन सब में न पड़ें। अब अपनी सेवानिवृत्ति का आनंद लें। परिणाम को भांपते हुए, बालामुरुगन ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी, जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया।

एनपीएस में सुनिश्चित पेंशन देने की तैयारी, उच्च स्तरीय समिति गठित

- पेंशन के लिए दिशानिर्देश और नियम बनाएगी समिति
- इसमें कानून, वित, पूंजी बाजार, जैसे क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के तहत जल्द ही सुनिश्चित पेंशन मिल सकती है। पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने इसके लिए दिशानिर्देश और नियम बनाने के लिए इनसाल्वेंसी एंड बैंक्रप्टसी बोर्ड आफ इंडिया के पूर्व चेयरमैन एमएस साहू की अध्यक्षता में 15 सदस्यीय उच्च-स्तरीय समिति का गठन किया गया है।

इस समिति में कानून, वित्त, पूंजी बाजार एवं शिक्षा जगत जैसे विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। व्यापक विचार-विमर्श सुनिश्चित के लिए समिति को विशेषज्ञों या मध्यस्थों को विशेष सदस्यों के तौर पर प्रतिक्रिया एवं परामर्श के लिए आमंत्रित करने का अधिकार दिया गया है। पीएफआरडीए ने मंगलवार को बयान में कहा कि यह पहल पेंशन नियामक कानून के अनुरूप है। इसका उद्देश्य एनपीएस अंशधारकों के लिए सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली आय को सुनिश्चित और सुरक्षित बनाना है। इस समिति का गठन 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की दिशा में पीएफआरडीए का अहम कदम है जिसका उद्देश्य हर बुजुर्ग को आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करना है। यह समिति नियमित पेंशन भुगतान पर स्थायी सलाहकार समिति के रूप में गठित की गई है। इसके मुख्य कार्यों में नियम बनाना, सुनिश्चित पेंशन के लिए फ्रेमवर्क तैयार करना, बाजार आधारित गारंटी यानी मार्केट के उतार-चढ़ाव के बावजूद सुनिश्चित पेंशन मिले पैसा मिले, इसका रास्ता खोजना। जोखिम प्रबंधन करना शामिल है।

सरकार ने पुरानी पेंशन को खत्म कर साल 2004 में एनपीएस को पेश किया था। एनपीएस में जमा पैसों को इक्विटी, डेट और अन्य एसेट में निवेश किया जाता है और इससे मिले रिटर्न को वापस खाते में जमा कर दिया जाता है। इसी बीच, राजकोट में आयोजित दूसरे वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन में पीएफआरडीए ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के बीच एनपीएस के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले सत्रों का आयोजन किया।

शब्बीर शाह मामले में सुप्रीम कोर्ट ने एनआइए को लगाई फटकार

नई दिल्ली, प्रेट्र: सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कश्मीरी अलगाववादी नेता शब्बीर अहमद शाह से जुड़े आतंकी फंडिंग मामले में अपना पक्ष ठीक से प्रस्तुत न करने के लिए एनआइए को फटकार लगाई और एजेंसी से छह साल से अधिक समय तक उनकी हिरासत को उचित ठहराने को कहा है। शब्बीर अहमद शाह ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर मुद्दे पर भारत के पांच प्रधानमंत्रियों से मुलाकात की थी और उनके भाषण ज्यादातर राज्य के लोगों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते थे।

जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ शब्बीर शाह की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें उन्होंने दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी है। हाई कोर्ट ने उन्हें आतंकी फंडिंग मामले में जमानत देने से इन्कार कर दिया था। शब्बीर शाह 2019 से हिरासत में है। पीठ ने एनआइए से उनके कुछ भाषणों और मामले से संबंधित तथ्यों को पेश करने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने एनआइए को जवाब दाखिल करने के लिए तीन सप्ताह का समय दिया है। मामले की सुनवाई 10 फरवरी को होगी।

जागरण विशेष

अपने हक के लिए मुखर जेन-जी अध्यात्म की राह पर भी सबसे आगे

कैंची धाम पर किए गए अध्ययन में सामने आया कि 15–30 आयु वर्ग के युवा श्रद्धालुओं की भागीदारी सर्वाधिक

गणेश जोशी • जागरण

हल्द्वानी: रील्स, रफ्तार और डिजिटल शोर के बीच पली-बढ़ी जेन-जी पीढ़ी को अक्सर केवल आधुनिक जीवनशैली का प्रतीक मान लिया जाता है, लेकिन कैंची धाम को लेकर सामने आया ताजा अध्ययन इस धारणा को नए सिरे से परिभाषित करता है। अपने अधिकारों के लिए मुखर, सवाल पूछने वाली और व्यवस्था से जवाब मांगने वाली यह पीढ़ी अध्यात्म की ओर भी उतनी ही गहराई से आकर्षित है।

नैनीताल स्थित बाबा नीब करौरी के कैंची धाम में आने वाले श्रद्धालुओं में सबसे बड़ा वर्ग जेन-जी का होना इस बदलाव का साफ संकेत है, जहां आस्था किसी परंपरा का बोझ नहीं, बल्कि एक सचेत चुनाव बनकर सामने आई है।

पर्यटन विभाग के सहयोग से अर्थ एवं संख्या विभाग द्वारा अगस्त, सितंबर और अक्टूबर 2025 के दौरान किए गए अध्ययन में तीन हजार श्रद्धालुओं के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में यह तथ्य उभरकर आया कि धाम पहुंचने वालों में 15 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवा 67.17 प्रतिशत हैं। यह वही पीढ़ी है जो सार्वजनिक मंचों पर अपने अधिकारों, सुविधाओं और जवाबदेही को लेकर मुखर रहती हैं, साथ ही आध्यात्मिक संतुलन की तलाश में भी पीछे नहीं है।

अध्ययन बताता है कि कैंची धाम की ख्याति अब सीमाओं से परे है। देश के अलग-अलग हिस्सों से ही नहीं, बल्कि विदेश से भी श्रद्धालु यहां पहुंच रहे हैं। उत्तर प्रदेश से आने वाले श्रद्धालु सबसे अधिक हैं, जिनकी भागीदारी लगभग एक-तिहाई के आसपास है। इसके बाद दिल्ली और बिहार का स्थान आता है। विदेश में भी बाबा के प्रति आस्था दिखाई देती है। नेपाल से लेकर नीदरलैंड तक से अनुयायी बड़ी संख्या में दर्शन के लिए कैंची धाम पहुंच रहे हैं।

अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि 95 प्रतिशत से अधिक श्रद्धालु केवल आध्यात्मिक उद्देश्य से ही धाम पहुंचे। अधिकांश ने स्वीकार किया कि उनका मुख्य लक्ष्य दर्शन और मन की शांति था, न कि पर्यटन। बड़ी संख्या में श्रद्धालु एक ही दिन में दर्शन कर लौट जाते हैं। यह प्रवृत्ति बताती है कि कैंची धाम जेन-जी के लिए किसी ट्रेंड या इंटरनेट मीडिया स्पाट से अधिक, एक आत्मिक ठहराव का केंद्र है।

कैंची धाम को लेकर किए गए सर्वे की रिपोर्ट के आधार पर योजना बन रही है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं। कैंची धाम में 400 वाहनों की पार्किंग जून से शुरू हो जाएगी। इसके लिए जोरशोर से काम चल रहा है। लोगों की संख्या का भी अध्ययन हो रहा है। वाहनों की गिनती के लिए आटोमेटिक नंबर प्लेट रिकोग्निशन (एएनपी) कैमरा भी लगाए जाएंगे। अन्य सभी तरह की सुविधाओं के लिए प्राथमिकता से काम हो रहा है।

धीराज सिंह गर्ब्याल, पर्यटन सचिव, उत्तराखंड

नैनीताल स्थित कैंची धाम में दर्शन के लिए उमड़े श्रद्धालु • जागरण आर्काइव

असंतोष जताने से भी नहीं चूकते

युवाओं की यह भागीदारी केवल संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यवहार में भी झलकती है। सर्वे में सामने आया कि बड़ी संख्या में युवा श्रद्धालु व्यवस्थाओं को लेकर अपनी राय रखते हैं। जहां एक ओर वे बाबा के प्रति गहरी आस्था प्रकट करते हैं, वहीं दूसरी ओर पार्किंग, स्वच्छता और आधारभूत सुविधाओं की कमी पर असंतोष जताने से भी नहीं चूकते। यह वही जेन-जी है, जो भक्ति के साथ-साथ बेहतर प्रबंधन की अपेक्षा भी करती है।

श्रद्धालु शांत दर्शन को देते प्राथमिकता

जेन-जी का रुख धर्म के प्रति सकारात्मक है। कैंची धाम का अध्यात्म युवाओं को जोड़ रहा है। उन्हें एक साझा अनुभव और विश्वास की डोर में पिरो रहा है। यही कारण है कि अधिकतर श्रद्धालु लंबे समय तक रुकने के बजाय शांत दर्शन को प्राथमिकता देते हैं और कम समय में अपनी आस्था पूरी कर लौट जाते हैं। यह धाम की आध्यात्मिक ऊर्जा और व्यवस्थागत अनुशासन दोनों को दर्शाता है। अध्ययन रिपोर्ट के आधार पर अब राज्य सरकार और पर्यटन विभाग सुनियोजित विकास की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

कौशल विकास निगम घोटाला मामले में चंद्रबाबू नायडू को क्लीनचिट

अमरावती, प्रेट्र: कौशल विकास निगम घोटाले में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू को राहत मिली है। विजयवाड़ा की एक अदालत ने निगम की धनराशि की हेराफेरी में संलिप्तता को लेकर नायडू के खिलाफ दर्ज किए गए मामले को बंद कर दिया है। आरोप है कि इस हेराफेरी के कारण राज्य के खजाने को 300 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ था। मामले में आरोपित बनाए जाने के बाद नायडू 50 दिनों तक जेल में रहे थे। आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने 31 अक्टूबर 2023 को उन्हें जमानत दे दी थी। महाधिवक्ता दम्मलपति श्रीनिवास ने कहा कि जांच एजेंसी को मुख्यमंत्री की संलिप्तता नहीं मिली। न्यायिक अधिकारी ने उस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया है। जांच पूरी होने के बाद एजेंसी ने यह कहते हुए रिपोर्ट दाखिल की कि नायडू की भूमिका के संबंध में ठोस सबूत नहीं हैं।

प्रेरणा

जो व्यक्ति धैर्यवान है वह दुनिया की हर चीज हासिल कर सकता है। - जॉर्ज सेविल

संपादकीय

जर्मनी से मेलजोल का बढ़ना हमारे लिए अच्छा है

यूरोप की सबसे बड़ी आर्थिक-सामरिक शक्ति और दुनिया की फिलहाल तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी के साथ व्यापार और रक्षा समझौतों ने भारत के लिए नया विश्वास पैदा किया है और इसे अमेरिका के विकल्प के रूप में लिया जा रहा है। भले ही पनडुब्बी डील का जिक्र साझा बयान में न हो, लेकिन कुल 19 साझा घोषणाओं का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि आगामी 27 जनवरी को भारत और 27 यूरोपीय देशों के संगठन वाले ईयू के बीच फ्री ट्रेड अग्रीमेंट पर अंतिम मुहर लगनी है। इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर दो मेहमान- ईयू आयोग की अध्यक्षा और ईयू परिषद के अध्यक्ष- मुख्य अतिथि होंगे। सामूहिक अर्थव्यवस्था वाले इस संगठन से एफटीए का मतलब है कि भारत अमेरिकी टैरिफ दबाव से काफी हद तक मुक्त हो जाएगा। जर्मनी भारत के टैलेंट को अपने यहां आकर्षित करना चाहता है। यूएस इससे असहज होगा। स्टील, हथियार और सेमी-कंडक्टर निर्माण की दिशा में जर्मनी से डील भारत के लिए हर मायने में हितकर साबित होगी। हालांकि ईयू जानता है कि भारत रूस का साथ किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगा, लेकिन इसके बावजूद जर्मनी और ईयू का भारत के करीब आना ट्रम्प के मनमाने रवैये पर लगाम के रूप में लिया जा सकता है। ग्रीनलैंड पर कब्जे के मंसूबे के बाद अब यूएस से ईयू का मोहभंग हो चुका है और यह भी सच है कि ग्रीनलैंड पर कब्जे के बाद नाटो का अस्तित्व बेमानी हो जाएगा, क्योंकि तब वह डेनमार्क के हितों की रक्षा नहीं सकेगा।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

बातचीत, सहयोग व एकांत से खत्म होता है अकेलापन

एक छत के नीचे कई सदस्य रहते हों तो भी उनमें से कुछ को लगता है कि हम अकेले हैं। घर के बाहर की दुनिया में लोकप्रियता हो, प्रतिष्ठा रहे, उसके बाद भी कुछ लोगों को लगता है हम अकेले हैं। जो लोग भीड़ से घिरे रहते हैं, उनको भी अकेलापन काटता है। तो समझ लें कि अकेलापन हालात नहीं, बीमारी है। और अकेलापन लंबे समय टिक जाए तो अवसाद आने में देर नहीं लगेगी। इसलिए अकेलेपन का इलाज तुरंत ही कर लेना चाहिए। तो सबसे पहले यह समझें कि अकेलापन एक एहसास है। जितना महसूस करेंगे, यह उतना बढ़ता जाएगा। और यह भी तय है कि यह एहसास खत्म नहीं होगा। इस अनुभूति का मुंह मोड़ना पड़ेगा। तो पहला काम यह करिए कि दूसरों से दिल खोलकर बातें करिए। इससे हम हल्के हो जाते हैं, क्योंकि भीतर का भारीपन अकेलेपन का समर्थन करता है। दूसरा, लोगों की खूब सहायता कीजिए। सहयोग की वृत्ति अकेलेपन में आनंद भर देती है। और तीसरा काम करें कि अकेलेपन को एकांत से जोड़ें। अकेलापन हम दूसरों से भरकर मिटाते हैं, एकांत में हम परमात्मा से जुड़ जाते हैं।

•Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

पाठकों के पत्र

परीक्षा से ठीक पहले तबादले गलत

राजस्थान में मतदाता सूचियों के एसआईआर के बाद अब जब बोर्ड परीक्षाओं का समय निकट है तो शिक्षा विभाग द्वारा प्रधानाचार्यों व व्याख्याताओं के तबादले करना विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। सरकारी स्कूलों में ज्यादातर गरीबों के ही बच्चे पढ़ते हैं। अनेक शिक्षकों का तबादला राजनीतिक द्वेष के चलते भी हुआ है। अगर शिक्षा व्यवस्था ऐसी ही चलती रही तो शैक्षणिक विकास की बात बेमानी रह जाएगी। -मदनलाल लंबोरिया, भिरानी, राजस्थान

चाइनीज मांझे को लेकर और सख्ती हो

प्रतिबंध के बावजूद चाइनीज मांझे के इस्तेमाल के चलते कुछ लोगों की मौत हुई है और कई गंभीर रूप से घायल भी हुए हैं। पुलिस और प्रशासन को इस बारे में और अधिक कठोर कदम उठाते हुए चाइनीज मांझा बेचने और उपयोग करने वालों के प्रति गंभीर रवैया अपनाना चाहिए। उन्हें ऐसा कठोरतम दंड देना चाहिए कि कोई चाइनीज मांझा बेचने और उपयोग करने का दुस्साहस न कर सके। -रमेशचंद्र कर्नावट, इंदौर, मध्य प्रदेश

फिर से मराठी अस्मिता का मुद्दा?

मनसे प्रमुख राज ठाकरे के मराठी एकता के आह्वान और हिंदी थोपे जाने के खिलाफ चेतावनी ने स्पष्ट कर दिया कि मनसे फिर उसी राजनीतिक राह पर जा रही है, जहां मराठी अस्मिता, बाहरी बनाम स्थानीय का विमर्श और भाषा का प्रश्न चुनावी रणनीति का केंद्र रहा है। बीएमसी चुनाव तय करेगा कि मराठी अस्मिता का विमर्श सुरक्षा की सकारात्मक राजनीति की ओर बढ़ेगा या विरोध की नकारात्मक राजनीति की ओर। -कांतिलाल मांडोत, सूरत, गुजरात

ट्रम्प के बयान अस्थिरता बढ़ा रहे

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ईरान में सैन्य हस्तक्षेप के संकेत केवल कूटनीतिक बयान नहीं है, बल्कि यह ताकत को अंतरराष्ट्रीय सहमति से ऊपर रखने की प्रवृत्ति का विस्तार है। वेनेजुएला को लेकर उनके दावे और खुद को वहां का कार्यवाहक राष्ट्रपति तक बताने वाली सोशल मीडिया पोस्ट ने इस प्रवृत्ति को और उघाड़ दिया है। ऐसे बयानों का असर वैश्विक राजनीति में भ्रम और अस्थिरता बढ़ाने वाला है। -सुभाष बुड़ावनवाला, रतलाम, मध्य प्रदेश

आप अपने पत्र editpage@dbcorp.in पर भेज सकते हैं

क्या आप जानते हैं

ऑस्ट्रेलिया में जमीन के नीचे घर बना कर रहते हैं लोग

ऑस्ट्रेलिया में एक अनोखा कस्बा है- कूबर पेडी। इस जगह पर आधी से ज्यादा आबादी जमीन के नीचे अपने घर बनाकर रहती है। कारण, गर्मियों के दिनों में इस इलाके का तापमान 55 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है। इस असहनीय गर्मी से बचने के लिए लोगों ने भूमिगत मकान बनाने का तरीका अपनाया है। मकानों के साथ ही यहां भूमिगत दुकानें, आर्ट गैलरी और चर्च भी हैं, जहां तापमान हमेशा 23 डिग्री के आसपास बना रहता है। कूबर पेडी मुख्यत: ओपल खदानों के लिए प्रसिद्ध है, जहां उच्च गुणवत्ता वाले कीमती रंगीन रत्नों का खनन होता है।

2500 के आसपास की आबादी है कूबर पेडी की। यहां अधिकतर आबादी ने जमीन से 4 मीटर तक नीचे जाकर अपने घर बनाए हैं।

बामुलाहिजा • थैंक्यू मिस्टर ट्रम्प, हमें फ्री ट्रेड और आर्थिक सुधारों का डर छोड़ने का मौका देने के लिए

यह सुधारों को तेज करने का अवसर है

ट्रेड डील

शेखर गुप्ता
एडिटर-इन-चीफ, 'द प्रिन्ट'
X @ShekharGupta

मेरा एक मन यह कहना चाहता है कि 'शुक्रिया मिस्टर ट्रम्प, जो आप भारत के साथ व्यापार समझौते पर लगातार टालमटोली कर रहे हैं!' क्योंकि आप ऐसा न करते तो यहां महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार फटाफट न किए जाते, जैसा 1991 के बाद अब तक नहीं हुआ था। उदाहरण के लिए नए श्रम नियमों को ही ले लीजिए।

सरकार ने इससे पहले नया भूमि अधिग्रहण विधेयक, कृषि कानून, सबको वापस ले लिया था और जोखिम से बचने के लिए श्रम कानूनों को ठंडे बस्ते में डाल रखा था। आर्थिक प्रशासन, मसलन सरकारी बैंकों की बैलेंस शीटों की सफाई, उनकी मजबूती और दिवालिया कानून आदि के मामले में कुछ सुधार जरूर किए गए। लेकिन इस बीच 'सरकार ही माई-बाप' वाला संरक्षणवाद फिर लौट आया। टैरिफ में वृद्धि हुई और क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर के रूप में भारी-भरकम नॉन-टैरिफ सुरक्षा दीवार खड़ी कर दी गई। भारतीय उद्योग के हर सेक्टर ने इनके लिए पैरवी की और इन्हें हासिल कर लिया।

तेजतर्रार भारतीय सिविल सेवाओं को मिलाकर बनी अंदरूनी मंडली ने ही इन्हें तैयार किया होगा। ट्रम्प शायद भारत की इन्हीं नॉन-टैरिफ बाधाओं का जिक्र कर रहे थे। दरअसल, इनका समय बीत चुका है। इन्हें अब हड़बड़ी से नहीं, तो मुस्तैदी से वापस किया जा रहा है। अनुभवी और भरोसेमंद अधिकारी इस वापसी परियोजना को आगे बढ़ा रहे हैं। भगवान उन्हें और शक्ति दे!

लेकिन, ट्रम्प साहब आपका फिर से शुक्रिया। शुक्रिया नरमी नहीं, बल्कि ऐसा अहंकार दिखाने के लिए कि आपने एक बेहद महत्वपूर्ण रणनीतिक संबंध को सिर्फ इस हठ के लिए खराब कर लिया कि किसी ने आपको फोन किया था या नहीं! ट्रम्प न होते तो व्यापार से मुंह मोड़ने वाले हमारे सत्तातंत्र को ट्रेड डील के जादू का पता न चला होता। अब तो ब्रिटेन और 'यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन' (ईएफटीए) के साथ व्यापार समझौता भी झोली में आ चुका है और ईयू के साथ भी समझौता होने वाला है। चीन को छोड़ (उसके लिए भी प्रतिबंधों को हटाया जा रहा है) 'आरसीईपी' (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी) का लगभग हर सदस्य देश साथ आ गया है। इसके बाद व्यापार को लेकर भारत का दिमाग भी बदल गया है। इसलिए मिस्टर ट्रम्प, आपको फिर से धन्यवाद!

किसी भी कम सीधे और कम आक्रामक कदम से अपनी पीठ खुद ठोकते रहने वाला हमारा सत्तातंत्र सुकून की नींद लेने लगता। 7% की आर्थिक वृद्धि के साथ नगण्य मुद्रास्फीति दर, इसके साथ हिंदुत्ववादी राष्ट्रवाद और जनकल्याण की कार्यकुशल डिलीवरी का मेल जबरदस्त चुनावी फॉर्मूला तो तैयार कर ही देता है। फिर अपनी नाव को जोखिम में क्यों डालें? लेकिन ट्रम्प ने हमें याद दिलाया कि बच-बच के खेलना कोई विकल्प नहीं है। इसलिए स्कोर बढ़ाओ, चाहे जो जोखिम हो!

यह तो उम्मीद की ही जा रही थी कि ट्रम्प व्यापार को अपनी नीति का औजार बनाएंगे। लेकिन भारत यह अनुमान नहीं लगा पाया कि वे टैरिफ को हथियार के रूप में इस्तेमाल करेंगे। वैसे, सच कहें तो बाकी दुनिया भी यह अनुमान नहीं लगा पाई। भारत सबसे ज्यादा आत्मतुष्ट और व्यापार के प्रति उदासीन था और यह मान बैठा था कि ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में आपसी संबंध रणनीतिक हितों से संचालित होते रहेंगे। लेकिन इसके विपरीत यह रणनीतिक पहलू हमारे लिए तब पलट गया, जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान व्हाइट हाउस में वापस पहुंच गया। मोदी और ट्रम्प के बीच सद्भावना का जो भी थोड़ा-सा पानी बचा था, वह 'मेरा नोबेल पुरस्कार कहां है?' की गरमी में भाप बनकर उड़ गया।

भारत उनके नाम की सिफारिश तो नहीं ही कर सकता था लेकिन हम पाकिस्तानियों को सबक सिखाते, इससे पहले ही उन्हें होश में लाने और युद्धविराम की राह बनाने के लिए ट्रम्प को धन्यवाद कहने पर विचार तो किया ही जा सकता था। इससे इनकार करना रणनीतिक भूल थी।

मेरा दूसरा मन इस बात को कबूल करता है कि यह जो संकट जारी है, वह कम वेतन वाले लाखों रोजगारों को किस तरह खत्म कर रहा है और बड़े पैमाने पर रोजगार देने वाले मछली पालन, गारमेंट्स, होजियरी, रत्न और ज्वेलरी जैसे क्षेत्रों को नुकसान पहुंचा रहा है। अब तक ये क्षेत्र कुछ तो सरकार की मदद से और कुछ अपनी अब तक की रफ्तार के बूते बचे रहे हैं। लेकिन तीन महीने और बीतने के बाद इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर छंटनी हो सकती है। इसलिए भारत इसे लंबे समय तक नहीं झेल सकता। समाधान ढूंढने पड़ेंगे।

इस तरह का मौका पीढ़ियों में एकाध बार ही आता है...

आज दुनिया बदली हुई है और यह नया भारत है। आज भारत आर्थिक और रणनीतिक रूप से अमेरिका तथा वैश्विक व्यवस्था से बहुत जुड़ चुका है। ऐसे में ठोस आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाइए, क्योंकि ऐसा संकट पीढ़ियों के बीच एकाध बार ही आता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि भारत ट्रम्प के सामने गिड़गिड़ाए, जिसकी अपेक्षा वे जिनपिंग और पुतिन को छोड़ दुनिया के हर नेता से रखते हैं। लेकिन भारत उन कई मामलों में ज्यादा लचीला रुख अपना सकता है, जो ट्रम्प के लिए काफी संवेदनशील हैं। उदाहरण के लिए, उनकी फार्म लॉबी। मैं जानता हूं कि भारत में इसका स्वाभाविक विरोध इस डर के कारण होता है कि यह भारतीय कृषि का सफाया कर देगा या यहां उन 'जीएम' उत्पादों की बाढ़ ला देगा, जिन पर भारत ने रोक लगा रखी है (जिसे मैं लंबे समय से अनुचित मानता रहा हूं)।

आक्रामक हुए बिना भी रास्ता निकाला जा सकता है। जरा देखिए कि ढाका में अमेरिकी दूतावास वहां मात्र 58,000 टन मक्के की आमद पर कितना खुश है। यह मुर्गियों का चारा है। भारत भी मुख्यतः मुर्गियों के लिए ही चारे का आयात करता है। केवल इथेनॉल बनाने या चारे के लिए मक्का आयात करने में क्या दिक्कत है? अब यह मत कहिए कि हम अपनी मुर्गियों को 'जीएम' वाला चारा नहीं खिला सकते। 'जीएम' कपास की भूसी हमारी मवेशियों का प्रमुख चारा है। और इससे निकाला जा रहा तेल हमारी 'फूड चेन' में 23 वर्षों से मौजूद है।

पूरी दुनिया ट्रम्प से निबटने के उपाय तलाश रही है। अब तक तो आप उनके तौर-तरीके और शैली को समझ ही चुके होंगे। बिना प्रचार किए उन्हें कुछ अहानिकर जीत का श्रेय लेने दिया जा सकता है। कुछ शोर हो सकता है और टक्कर भी हो सकती है, जैसी इंदिरा और निक्सन के बीच हुई थी। लेकिन वह दूसरा दौर था। तब शीतयुद्ध चरम पर था। आज दुनिया बदली हुई है और यह नया भारत है। आज भारत आर्थिक और रणनीतिक रूप से अमेरिका तथा वैश्विक व्यवस्था से बहुत जुड़ चुका है। ऐसे में ठोस आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाइए, क्योंकि ऐसा संकट पीढ़ियों के बीच एकाध बार ही आता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

नजरिया • दुनिया में समीकरण बदल रहे हैं...

अमेरिका-यूरोप के गठजोड़ में टूट का हम फायदा उठाएं

कूटनीति

मिन्हाज मर्चेंट
लेखक, प्रकाशक और सम्पादक
mmleditorial@gmail.com

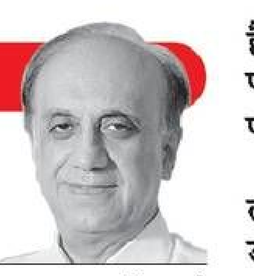

डेनमार्क के सम्प्रभु क्षेत्र ग्रीनलैंड पर ट्रम्प की हमले की धमकी ने नाटो के सदस्य देशों के बीच सैन्य टकराव का खतरा पैदा कर दिया है। 32 सदस्यीय नाटो गठबंधन के अनुच्छेद-5 के तहत यदि किसी सदस्य देश पर हमला हो तो दूसरे सदस्यों को उसकी रक्षा करनी होती है। हालांकि ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी जैसे नाटो सदस्य अमेरिका से टकराने का जोखिम शायद ही उठाएंगे।

लेकिन आखिर अमेरिका को ग्रीनलैंड क्यों चाहिए? क्योंकि इस आर्कटिक द्वीप की तीन बड़ी खूबियां हैं। पहली, आर्थिक : ग्रीनलैंड में पर्याप्त तेल और खनिज भंडार हैं। दूसरी, सुरक्षागत : ग्रीनलैंड रूसी और चीनी नौसेनाओं तथा उनके लड़ाकू विमानों पर लगतार निगरानी रख सकता है, क्योंकि वे लगातार इस द्वीप के ऊपर से गुजरते हैं। तीसरी, लॉजिस्टिक्स सम्बंधी : ग्रीनलैंड यूरोप व एशिया के बीच कम समय लेने वाले आर्कटिक समुद्री मार्ग मुहैया कराता है। ये व्यापार के साथ भविष्य के सैन्य अभियानों के लिए भी अहम है।

ट्रम्प कहते हैं कि अमेरिका ग्रीनलैंड पर नियंत्रण करेगा, चाहे सख्त रास्ता ही क्यों ना अपनाना पड़े। यूरोपीय देश इससे चिंतित हैं। ग्रीनलैंड की आबादी मात्र 57 हजार है, लेकिन उसके लोग अमेरिका का हिस्सा बनने के खिलाफ हैं। 18वीं सदी से ही ग्रीनलैंड डेनमार्क के अधीन है। डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिक्सन ने अपना रुख साफ कर दिया है कि ग्रीनलैंड पर बलपूर्वक कब्जे की कोशिश नाटो के अंत की घोषणा होगी।

नाटो के सदस्य अन्य यूरोपीय नेताओं ने भी फ्रेडरिक्सन का समर्थन किया है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने कहा है कि 'ग्रीनलैंड का भविष्य वहां के लोगों और डेनमार्क द्वारा ही तय किया जाएगा।' लेकिन ट्रम्प ने यूरोप की आपत्तियां खारिज कर दी हैं। उन्हें तो अमेरिका-यूरोप गठबंधन के संभावित विघटन की भी ज्यादा चिंता नहीं है, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही पश्चिम के तमाम भू-राजनीतिक सिद्धांतों का आधार रहा है। ट्रम्प के लिए अमेरिकी और कैरेबियाई क्षेत्र वाले पश्चिमी गोलार्ध का महत्व अटलांटिक महासागर के पार वाले पुराने यूरोप से कहीं अधिक है।

भू-भागों पर जबरन कब्जा करने का अमेरिका का लंबा इतिहास रहा है। अमेरिका में आए शुरुआती ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने वहां सदियों से रह रहे मूल अमेरिकियों से उनकी जमीन हथिया ली थीं। आजादी के बाद अमेरिका ने 1846-48 में मैक्सिको से युद्ध लड़ कर कैलिफोर्निया और टेक्सास समेत उसकी आधी भूमि कब्जा ली थी। उससे पहले 1803 में अमेरिका ने फ्रांस से लुइसियाना और 1867 में रूस से अलास्का खरीद लिया था। ऐसे में ग्रीनलैंड पर कब्जा करना भी उसके औपनिवेशिक डीएनए का ही हिस्सा है।

अमेरिका और यूरोप के बीच ऐतिहासिक रिश्तों का कमजोर होना भारत के लिए भू-राजनीति के नए विकल्प खोलता है। 2030 तक भारत के दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है। भारत का 60 करोड़ मध्यमवर्गीय उपभोक्ताओं का बाजार अमेरिका और ईयू के कुल उपभोक्ता बाजार से भी बड़ा है। चीन में अहम तकनीकी उद्योगों से बहिष्कृत और अमेरिका में भारी टैरिफ का सामना कर रहीं यूरोपीय कंपनियों के लिए भारत का यह विशाल बाजार एक आकर्षक पेशकश करता है। हालांकि, भारतीय उपभोक्ताओं की खरीद-क्षमता अभी सीमित है, लेकिन उनकी खर्च योग्य आय अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के उपभोक्ताओं की तुलना में तेजी से बढ़ रही है।

आज जब ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका और यूरोप का पश्चिमी गठबंधन टूट रहा है तो भारत को इस मौके का फायदा उठाना चाहिए। हम आगामी 1 फरवरी को पेश होने वाले केंद्रीय बजट में कस्टम ड्यूटी में और छूट दे सकते हैं।

आज जब ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका-यूरोप का पश्चिमी गठबंधन टूट रहा है तो भारत को इस मौके का फायदा उठाते हुए 1 फरवरी को पेश होने वाले केंद्रीय बजट में कस्टम ड्यूटी में और छूट देनी चाहिए। जरूरत इस बात की है कि इस निर्णायक दौर में आर्थिक सुधारों की रफ्तार और तेज कर दी जाए।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

मुद्दा • कामकाजी महिलाओं की सुरक्षा का सवाल

रात की शिफ्ट में काम करने वाली स्त्री को क्या डराता है?

आधी आबादी

मेघना पंत
पुरस्कृत लेखिका, पत्रकार-वक्ता
meghnapant@yahoo.com

नए श्रम कानून सुधारों ने महिलाओं को रात की शिफ्ट में काम करने की अनुमति दी है। लेकिन असल सवाल यह नहीं है कि महिलाएं रात में काम कर सकती हैं या नहीं। असल सवाल यह है कि क्या हम अब उन्हें काम करते समय सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं? क्योंकि सुरक्षा को केवल महिलाओं के साहस पर छोड़ दिया जाए, तो ये सुधार असफल हो जाएंगे।

सुरक्षा के उपाय न तो नारे हो सकते हैं और न ही दफ्तरी सर्कुलर। वे व्यावहारिक, लागू किए जाने योग्य और गैर-समझौतावादी होने चाहिए। वास्तविक सुरक्षा का मतलब है अनिवार्य एस्कॉर्ट नीतियां- वैकल्पिक नहीं, मांगे जाने पर नहीं- बल्कि अनिवार्य। इसका यह भी अर्थ है कि 'लास्ट-माइल' तक सुनिश्चित परिवहन। इसमें वेरिफाइड ड्राइवर, जीपीएस से ट्रैक किए जाने वाले वाहन, बदलते रूट्स, रोशन पार्किंग एरिया और निकास मार्ग शामिल हैं। पैनिक-बटन सजावट के लिए नहीं होने चाहिए, वे पुलिस और आंतरिक प्रतिक्रिया टीमों से सीधे जुड़े हों। आपातकालीन एप महानगरों के डेमो तक सीमित न रहें; वे दूसरे राज्यों में भी काम करें। शिकायत अधिकारी 24 बाय 7 उपलब्ध हों और सुरक्षा समितियों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व हो।

और सबसे अहम बात- जवाबदेही स्पष्ट हो। अगर किसी महिला को क्षति पहुंचती है तो इसके लिए नियोक्ता सिर्फ 'चिंतित' नहीं हो सकता। उसकी जिम्मेदारी तय हो। क्योंकि हकीकत यही है कि रात की शिफ्ट में काम करने वाली महिला को एक्सेल शीट से डर नहीं लगता, उसे डर लगता है यात्रा से। वाहनों के इंतजार से। मदद के लिए पुकारने के बाद छा जाने वाली खामोशी से।

लेकिन सुरक्षा भी तस्वीर का एक हिस्सा ही है। कामकाजी महिलाओं को किफायती चाइल्डकेयर की भी जरूरत है, ताकि मातृत्व उनके करियर को समाप्त कर देने वाली घटना न बन जाए। लचीले वर्क-मॉडल अपराधबोध से भरे अपवाद नहीं, बल्कि सामान्य व्यवस्था होने चाहिए। महिलाओं के लिए नौकरियां सिर्फ गुजर-बसर नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा का भी साधन हैं। और निर्णय लेने वाली मेजों पर महिलाओं की मौजूदगी भी अनिवार्य है, क्योंकि जिन शहरों, परिवहन प्रणालियों और दफ्तरों की डिजाइन महिलाओं के बिना की जाती है, वे कभी महिलाओं को सुरक्षित महसूस नहीं करा सकते। यह महिलाओं को रात में काम के लिए मजबूर करने का सवाल नहीं है। यह महिलाओं को वास्तविक विकल्प देने का सवाल है- ऐसे विकल्प, जिन्हें अच्छे बुनियादी ढांचे, कानूनों के सख्त अमल और मानवीय गरिमा का समर्थन प्राप्त हो।

महिलाओं की सुरक्षा एक आर्थिक मुद्दा भी है। जब महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं तो वे काम से बाहर हो जाती हैं। जब वे काम करना छोड़ती हैं, तो परिवारों की आय घटती है। और जब परिवारों की आय घटती है, तो अर्थव्यवस्था को नुकसान होता है। भारत अपने कार्यबल के आधे हिस्से को शामिल किए बिना 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था नहीं बन सकता।

एक अरसे से हम महिलाओं के रोजगार के सवाल को पाबंदियों के जरिये हल करते आ रहे हैं- यह कि देर तक काम मत करो, कहीं दूर काम करने मत जाओ, जोखिम मत लो। नए श्रम कानून सुधार इस स्थिति को बदल सकते हैं?

यह साल 2026 है और आज भी भारतीय महिलाओं में से केवल लगभग एक-तिहाई ही श्रमबल में भाग लेती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा लगभग तीन-चौथाई है। इन एक-तिहाई कामकाजी महिलाओं का अधिकांश हिस्सा भी अनौपचारिक और असुरक्षित नौकरियों में है और आर्थिक झटकों के समय सबसे पहले उन्हीं पर चोट पड़ती है। स्नातकों में महिलाओं की हिस्सेदारी 51% होने के बावजूद- मैकिन्से के एक अध्ययन के अनुसार- भारत में वे एंट्री-लेवल भूमिकाओं में 29% ही हैं। वरिष्ठ प्रबंधन में तो यह संख्या घटकर 9% रह जाती है और सीईओ स्तर पर तो यह 1% से भी कम है। आश्चर्य नहीं कि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने जेंडर समानता के मामले में भारत को 153 देशों में 112वां स्थान दिया है। ये हालात बदलने चाहिए।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

डिफ्रेंट एंगल • 'रिस्पॉन्सिबल एआई' यानी कृत्रिम मेधा की जवाबदेही पर भी अब होने लगी हैं चर्चाएं

कहीं हम अपनी ही पृथ्वी पर 'सेकंड सिटीजन' ना बन जाएं!

एआई

नन्दितेश निलय
वक्ता, एथिक्स प्रशिक्षक एवं लेखक
nanditeshnilay@gmail.com

अगर हम पिछले साल और इस साल के बीच उस परिघटना को ढूंढने की कोशिश करें, जिसका 2026 और आने वाले वर्षों में और भी प्रभावपूर्ण हस्तक्षेप होने जा रहा है तो वह एआई है। इस हस्तक्षेप का साक्षात्कार तो घर ही में हो जाता हैं। बोर्ड, नीट, जेईई या किसी अन्य परीक्षा की तैयारी करता छात्र अब कोई ओढ़ा हुआ मौन नहीं पालता, बल्कि एआई से दिनभर बातें करता रहता है। उसके शिक्षक या परिवार के सदस्य उसके प्रश्नों का उत्तर देने में समय लगा सकते हैं, यहां तक कि खीझ भी सकते हैं, पर एआई तनिक भी नहीं झुंझलाता। वह अभिवादन का जवाब अभिवादन से देता है। उसके माध्यम से 'मेटावर्स' की वर्चुअल दुनिया वास्तविक नजर आती है। वह नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ाता, बल्कि यूजर्स के लिए कुछ भी ढूंढ लाने के लिए सेवाभाव से तैयार रहता है।

ऐसे में युवाल हरारी को इस बात की चिंता होती है कि क्या हम होमो सेपियंस या बुद्धिमान श्रृंखला की अंतिम पीढ़ी हैं? अगर पढ़ना-लिखना, सोचना-समझना, प्रश्न करना-उत्तर तलाशना, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, बाजार आदि क्षेत्रों में आने वाले वर्षों में सारे कार्य एआई ही करेगा तो हमारी क्या उपयोगिता रह जाएगी? कहीं हम अपनी ही पृथ्वी पर सेकंड सिटीजन तो नहीं बन जाएंगे?

जिस तरह से एआई सूचना की शक्ति का केंद्र बन बैठा है और हमें धीरे-धीरे भावनात्मक रूप से भी अपनी दुनिया में समेट रहा है, तो चिंता तो होनी ही चाहिए। एआई की दुनिया के विशेषज्ञ भी इसके खतरे को समझ रहे हैं और 'रिस्पॉन्सिबल एआई' पर गहन चर्चा शुरू हो चुकी है। ऐसे में भारत में भी एआई दक्षता को शैक्षणिक और आर्थिक विकास का अहम हिस्सा बनाने के साथ-साथ रेगुलेशन मानकों की भी तैयारी करनी होगी।

इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट- जो फरवरी में होने जा रहा है- के केंद्र में रिस्पॉन्सिबल एआई पर विमर्श भी है। ऐसे में एआई पर हमारी बढ़ती निर्भरता और उसका हमारे मन-मस्तिष्क पर बढ़ता नियंत्रण यह प्रश्न कर रहा है कि किया क्या जाए? एआई तो अब सूचना के साथ भाव भी प्रदर्शित करने लगा है। वह अपने यूजर्स को भावुक भी कर सकता है। हमने तो सोचा था कि एआई सिर्फ एक साधन बनेगा, लेकिन अब तो मानो सबकुछ एआई ही करना चाहता है। दुनिया के तमाम देश एआई के चलते आर्थिक असमानता, नौकरी छूटने का भय, प्राइवेसी में दखल, गवर्नेंस और रेगुलेशन को लेकर चिंता जता रहे हैं।

हाल ही में चीन ने इंसानों जैसे एआई के लिए ड्राफ्ट नियम भी जारी कर दिए हैं। चीन के साइबर रेगुलेटर ने उन तमाम सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए ये नियम जारी किए हैं, जो उस मानवीय भाव और इंसानी व्यवहार की नकल करने और यूजर्स के साथ भावनात्मक बातचीत करने के लिए डिजाइन की गई एआई सेवाओं पर निगरानी को सख्त करेंगे। इस ड्राफ्ट में एक रेगुलेटरी तरीका यह भी बताया गया है, जिसके तहत प्रोवाइडर्स को यूजर्स को ज्यादा इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी देनी होगी और यूजर्स में लत के संकेत दिखें तो दखल भी देना होगा। उन एआई प्रोवाइडर्स को यूजर्स की मानसिक और भावनात्मक स्थिति की पहचान करनी होगी। अगर यूजर्स में भावनात्मक अस्थिरता पाई जाती है तो प्रोवाइडर्स को दखल देने के लिए जरूरी कदम उठाने चाहिए।

एआई को रेगुलेट करना आज सबसे महत्वपूर्ण हो चला है। ग्रोक को लेकर भारत सरकार सख्त होती दिख भी रही है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि आखिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कुल-मिलाकर है तो एक मशीन ही, जो डेटा से संचालित होती है। उसमें मानवीय भाव और बोध तो है नहीं। बुद्धिमान होना, भावुक होना इंसानी गुण हैं। तो हम एआई को मनुष्यों की जगह क्यों लेने दें?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

आज का पंचांग

पंडित प्रो. विनोद शास्त्री

तिथि संवत् : माघ, कृष्ण पक्ष एकादशी, बुधवार सायं 05:53 तक रहेगी। विक्रम संवत् 2082, शाके 1947, हिजरी 1447, मुस्लिम माह रज्जब, तारीख 24, सूर्य उत्तरायण, शिशिर ऋतु, 14 जनवरी।

सूर्योदय कालीन नक्षत्र : अनुराधा नक्षत्र रात्रि 03:04 तक, इसके बाद ज्येष्ठा नक्षत्र रहेगा। गंड योग सायं 07:56 तक, इसके बाद वृद्धि योग रहेगा। बालव करण सायं 05:53 तक, इसके बाद कौलव करण रहेगा।

ग्रह विचार (प्रातः 05:30) : सूर्य-धनु, चंद्र-वृश्चिक, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुंभ, केतु-सिंह राशि में स्थित है।

राहुकाल : दोपहर 12:00 से 01:30 तक रहेगा।

दिशाशूल : उत्तर दिशा : यदि जरूरी हो तो मिश्री या सौंफ खाकर यात्रा कर सकते हैं।

शुभाशुभ ज्ञानम : मकर संक्रांति, सूर्य मकर में प्रवेश दोपहर 03:07, पुण्यकाल प्रातः 08:43 से संपूर्ण दिन, षट्तिला एकादशी व्रत, मकर संक्रांति पर्व, गंगा सागर स्नान व यात्रा, धनु मलमास समाप्त, पौंगल दक्षिण भारत में, माघ बिहु आसाम, गंडमूल प्रारंभ रात्रि 03:04 से

चौघड़िया मुहूर्त : प्रातः 07:21 से 09:59 तक लाभ व अमृत का, प्रातः 11:17 से दोपहर 12:36 तक शुभ का, दोपहर 03:13 से 04:31 तक चर का, सायं 04:31 से 05:50 तक लाभ का चौघड़िया रहेगा।

आज विशेष : आज मकर संक्रांति, अयन संक्रांति है। इस संक्रांति में पुण्यकाल 40 घटी बाद का होता है लेकिन सायंकाल संक्रांति होने से इस दिन प्रातः 08:43 से संपूर्ण दिन पुण्यकाल रहेगा। इस दिन गर्म वस्तुओं, कंबल, तिल, गुड़ एवं अग्नि का दान विशेष फलदायी होता है। बुधवार को गणेशजी की गंध, फल, पुष्प, दूध, दही, घी, दूर्वा, धूप और दीप आदि से पूजा करें। मोदक का भोग लगाने से बुध जनित दोष दूर होते हैं और रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। आज गंड योग में नमक का दान करना शुभ फलदायी होता है।

आज जन्मे बच्चों के नामाक्षर व राशि

समय	नक्षत्र	चरण	पाया	राशि	नामाक्षर
07:21	अनुराधा	2	ताम्र	वृश्चिक	नी
13:36	अनुराधा	3	ताम्र	वृश्चिक	नू
20:20	अनुराधा	4	ताम्र	वृश्चिक	ने
03:04	ज्येष्ठा	1	ताम्र	वृश्चिक	नो

राशिफल मेष वाले आध्यात्मिक कार्यों में समय व्यतीत करेंगे, वृष वालों का भाग्योदय

मेष शुभ अंक 2, शुभ रंग गुलाबी : पूजा-पाठ और आध्यात्मिक कार्यों में समय व्यतीत होगा। प्रॉपर्टी में निवेश के अवसर मिलेंगे। भावुकता में लिए फैसले मुश्किल में डाल सकते हैं। आपसी तालमेल से आगे बढ़ें, सफलता मिलेगी।

वृष शुभ अंक 3, शुभ रंग लाल : पुराने झगड़े सुलझने से राहत मिलेगी। नई योजनाओं की शुरुआत लाभ दिला सकती है। भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। नए संपर्क में सावधानी बरतें। पारिवारिक कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं।

मिथुन शुभ अंक 6, शुभ रंग सफेद : महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा की स्थिति बनी रहेगी। राजकाज में आ रही बाधा दूर होगी। मित्रों के व्यवहार से खिन्नता बढ़ेगी। प्रॉपर्टी में निवेश सोच-समझकर करें, धोखा हो सकता है।

कर्क शुभ अंक 5, शुभ रंग पीला : मित्रों के सहयोग से मुश्किल दूर होगी। पारिवारिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए यात्रा संभव है। सामाजिक जीवन में बड़ी जिम्मेदारी मिलने की उम्मीद है। राजकीय मामले सुलझ सकते हैं।

सिंह शुभ अंक 3, शुभ रंग बादामी : कार्यस्थल पर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। सुख-सुविधा पर खर्च की संभावना है। भावनात्मक संबंधों में निकटता बढ़ेगी। तरक्की व इच्छित पद मिलने की उम्मीद है। धैर्य रखें।

कन्या शुभ अंक 9, शुभ रंग नारंगी : कानूनी मामलों में सावधानी बरतें। कार्यस्थल पर कठोर फैसले लेने पड़ सकते हैं। विवादास्पद मामले सुलझने के आसार हैं। संतान के भाग्योदय से प्रसन्नता मिलेगी। अटका धन मिल सकता है।

तुला शुभ अंक 4, शुभ रंग आसमानी : मेहनत का भरपूर लाभ मिलेगा। विरोधियों को अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे। प्रॉपर्टी के क्रय-विक्रय से लाभ संभव है। अनुभवी लोगों का साथ कार्यक्षेत्र में तरक्की दिला सकता है।

वृश्चिक शुभ अंक 6, शुभ रंग नीला : विवादास्पद मसले सुलझने से राहत मिलेगी। मित्रों से मुलाकात होगी। बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। नए लोगों से संपर्क कॅरियर को बढ़ावा देगा। समय पर काम पूरा करने का दबाव रहेगा।

धनु शुभ अंक 7, शुभ रंग हरा : छोटे-छोटे झगड़े बड़ी परेशानी का कारण बन सकते हैं। परिणय चर्चाओं में सफलता मिलेगी। धैर्य के साथ आगे बढ़े कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। दौड़धूप के चलते स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

मकर शुभ अंक 8, शुभ रंग स्लेटी : भय की स्थिति बनी रहेगी। अपनी बातों पर अडिग रहें सबका सहयोग मिलेगा। अनुभवी लोग आपके काम में मदद करेंगे। आय-व्यय में तालमेल की कमी परेशान करेगी। नए सौदे मिल सकते हैं।

कुंभ शुभ अंक 5, शुभ रंग काला : राजनीति से जुड़े लोग पद व प्रतिष्ठा हासिल कर सकते हैं। दूसरों की बातों में आकर अपनों को विरोधी बना लेंगे। कारोबारी विस्तार के लिए समझौता करना लाभदायक रहेगा। धर्म में रुचि बढ़ेगी।

मीन शुभ अंक 1, शुभ रंग भूरा : विवाद से दूर रहें नुकसान हो सकता है। पारिवारिक संबंधों में टकराव की स्थिति बनेगी। लेन-देन के मामलों में आरोप लग सकते हैं। तनाव से छुटकारा मिलेगा। साझेदारी टूटने से नुकसान संभव है।

मकर संक्रांति आज : संयम, सहयोग और सामूहिकता के संदेश का पर्व

जीवन को दिशा देने वाला चेतना उत्सव मकर संक्रांति

हेमंत कासट
ज्योतिष और वैदिक विषयों के जानकार

आज दोपहर 3 बजकर 13 मिनट पर सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेंगे। इसी के साथ मकर संक्रांति का पर्व आरंभ होगा। यह पर्व धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे ज्योतिष, आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान का गहरा समन्वय छिपा हुआ है। भारतीय वैदिक परंपरा में सूर्य केवल एक खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि काल, कर्म और चेतना के अधिष्ठाता माने गए हैं। सूर्य के बारह स्वरूपों को 12 आदित्य कहा गया है, जिनका सीधा संबंध वर्ष के 12 महीनों और सूर्य की संक्रांतियों से है। इन्हीं संक्रांतियों में मकर संक्रांति का विशेष महत्व है। यह वह खगोलीय क्षण है, जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं। सूर्य की उत्तरायण गति प्रारंभ होती है, जिसे देवताओं का दिन कहा गया है। इस समय सूर्य, सविता, आदित्य के रूप में सक्रिय माने जाते हैं। सविता का अर्थ है- प्रेरणा देने वाला, जागरण करने वाला। इस काल में ठंड के बाद धीरे-धीरे ऊष्मा बढ़ने लगती है, धरती में बीज अंकुरित होने लगते हैं और शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता सशक्त होती है।

12 आदित्य सूर्य की 12 चेतन शक्तियां हैं

12 आदित्य सूर्य की 12 चेतन शक्तियां हैं, 12 माह उनका कार्यक्षेत्र हैं और मकर संक्रांति वह दिव्य बिंदु है जहां काल, प्रकृति और मानव चेतना एक साथ ऊर्ध्वगामी होती है। इसलिए मकर संक्रांति केवल पर्व नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला चेतना उत्सव है। वेदों और पुराणों के अनुसार मित्र, वरुण, अर्यमन, भग, अंश, धाता, इन्द्र, विवस्वान, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु- ये बारह आदित्य वर्ष के बारह महीनों में क्रमशः पृथ्वी पर प्रभाव डालते हैं। प्रत्येक आदित्य सूर्य की विशिष्ट शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जो ऋतु परिवर्तन, कृषि, मानव शरीर और मन की अवस्था को प्रभावित करता है। 12 माह समय की इकाई ही नहीं, बल्कि सूर्य-चेतना के 12 चरण हैं।

मानव शरीर के 12 ऊर्जा द्वारों के प्रतीक आदित्य

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो 12 आदित्य मानव शरीर के 12 ऊर्जा द्वारों के प्रतीक हैं। मकर संक्रांति इन ऊर्जाओं के ऊर्ध्वगमन का पर्व है। इसी कारण इस दिन स्नान, दान, जप, तप और साधना का विशेष महत्व बताया गया है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- 'आदित्यानामहं विष्णुः' यानी आदित्यों में मैं विष्णु हूं। यह वाक्य सूर्य-तत्त्व में नारायण की व्यापक सत्ता को दर्शाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से मकर संक्रांति मानव मन को आलस्य से सक्रियता की ओर ले जाती है।

मैनेजमेंट फंडा

एन. रघुरामन
मैनेजमेंट गुरु, raghu@dbcorp.in

सिर्फ पानी ही नहीं, आपके लिए सुरक्षित वाई-फाई भी जरूरी है

हाल ही में मेरी इंदौर यात्रा में मुझसे पूछा गया कि 'क्या मैं आपको पीने के लिए पानी दूं?' मैंने 'नहीं' कहा। वजह पानी में मिलावट की खबरें नहीं थीं, बल्कि बाहर ठंड थी और सच में मेरा पानी पीने का मन नहीं था। मेजबान ने मजाक में कहा कि 'हमारा पानी सुरक्षित है।' मैंने हंसकर कहा कि 'आज का दौर हमें पानी से ज्यादा वाई-फाई सुरक्षित रखने की चेतावनी देता है। मेहमाननवाजी में अब वाई-फाई पहले नंबर पर आ गया है और पानी दूसरे नंबर पर।' मेजबान ने भी सहमत होकर कहा कि 'हां, आप सही हैं। आजकल हर मेहमान पहले वाई-फाई पासवर्ड पूछता है। कभी मेहमाननवाजी में सबसे ऊपर होने वाला पानी अब दूसरे नंबर पर आ गया है।' यहीं से हमारी चर्चा शुरू हुई कि आज के समय में गेस्ट वाई-फाई नेटवर्क की जरूरत क्यों है? और इसका जवाब यह है।

वाई-फाई पासवर्ड : किसी को यह चाहिए, कोई पूछता है और कोई शेयर कर देता है। सच में तो आज के डिवाइसेस ने इन लॉगिन्स को शेयर करना आसान बना दिया है। बस, किसी के पास रखे हों और आपके गैजेट्स उनके नेटवर्क से जुड़ सकते हैं। लेकिन यह खतरनाक है। इसलिए नहीं कि मेहमान की मंशा गलत है, बल्कि जब आपका नेटवर्क उनसे जुड़े तो अनजाने में कुछ ऐसा डाउनलोड हो सकता है, जो आपके पूरे सिस्टम को संक्रमित कर दे।

आजकल अधिकतर घरों में सिर्फ फोन ही नहीं, बल्कि प्रिंटर, टीवी, कैमरे, डोरबेल तक नेटवर्क से जुड़े होते हैं। कई संपन्न घरों में तो वॉशिंग मशीन, स्पीकर और एलेक्सा जैसे असिस्टेंट भी जुड़े होते हैं, ताकि रोजमर्रा के काम आसान हो सकें। ज्यादातर मेहमानों को आपके घर के अन्य गैजेट्स का नहीं, सिर्फ इंटरनेट का एक्सेस चाहिए होता है। लेकिन नेटवर्क से जुड़े गैजेट्स बिना पूछे एक्सेस दे देते हैं। इसलिए अलग गेस्ट वाई-फाई नेटवर्क न सिर्फ मेहमानों को इंटरनेट की सुविधा देता है, बल्कि मेहमानों के जाने के बाद आप पासवर्ड भी बदल सकते हैं। घर के अन्य गैजेट्स को डिस्टर्ब किए बिना ऐसा आप कितनी ही बार कर सकते हैं।

गेस्ट वाई-फाई नेटवर्क कैसे सेटअप करें? चूंकि अलग-अलग इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर होते हैं, इसलिए सभी पर लागू होने वाला कोई एक दिशानिर्देश नहीं है। नेटवर्क सेटिंग्स में सर्विस प्रोवाइडर का एप इसे शुरू करने का बेहतर स्थान होता है। अगर वहां गेस्ट नेटवर्क का विकल्प न मिले, तो अपने इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर के नाम से वेब सर्च करें। आप अपने राउटर के बिल्ट-इन फीचर का इस्तेमाल कर रेगुलर केबल इंटरनेट से आसानी से एक अलग गेस्ट वाई-फाई नेटवर्क बना सकते हैं, जो मेहमानों को इंटरनेट देता है और आपके मुख्य नेटवर्क व डिवाइसेस को सुरक्षित और प्राइवेट भी रखता है। इसके लिए ब्राउजर या एप के जरिए राउटर की सेटिंग्स में जाएं, 'गेस्ट नेटवर्क' विकल्प चालू करें। इसका यूनिक नाम और पासवर्ड सेट करें और सेटिंग्स को अप्लाई कर दें। इसमें अक्सर बैंडविड्थ लिमिट और डिवाइस आइसोलेशन के विकल्प भी होते हैं। तो इसे कैसे करें? राउटर सेटिंग्स में जाएं। वेब ब्राउजर में राउटर का आईपी एड्रेस डालें (जैसे 192.168.1.1) या फिर अपना इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर (आईएसपी) एप इस्तेमाल करें।

1. 'गेस्ट नेटवर्क' या 'गेस्ट वाई-फाई' विकल्प ढूंढें और ऑन करें, जो आमतौर पर वायरलेस या एडवांस सेटिंग्स में होता है।
2. इसे अलग नाम दें, जैसे 'योर होम_गेस्ट' और मजबूत पासवर्ड बनाएं।
3. क्लाइंट आइसोलेशन चालू करें, ताकि मेहमान आपके निजी डिवाइसेस को एक्सेस ना कर सकें। मुख्य नेटवर्क को तेज रखने के लिए कुछ लोग गेस्ट नेटवर्क स्पीड कम भी कर देते हैं।
4. ये बदलाव अप्लाई करें और जांच लें। अगर समझ नहीं आए तो सर्विस प्रोवाइडर को कॉल करके मदद लें।

फंडा यह है कि सुरक्षित पानी पीना तो हम सब जानते हैं, लेकिन वाई-फाई पासवर्ड के मामले में वही सेफ्टी फीचर हम भूल जाते हैं। चूंकि वाई-फाई आज हमारे जीवन में अधिक जरूरी हो गया है तो इसे सुरक्षित रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना सुरक्षित पानी पीना।

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

हत्यारी नातिन को 7 साल की सजा, नाना को नींद की दवा खिलाकर प्रेमी संग भाग गई थी

ग्वालियर | नाना व अन्य परिजनों को मैगी में नींद की दवा मिलाकर खिलाने वाली नातिन काजल सखवार को न्यायालय ने 7 साल के कारावास की सजा दी। हृदय व टीबी रोग से पीड़ित नाना किशनलाल ने घटना के 3 दिन बाद मौत हो गई थी। काजल को गैर इरादतन हत्या का दोषी ठहराया गया, जबकि उसके प्रेमी गौतम को न्यायालय ने साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया। मामला पुलिस थाना सिरोल का है। 28 जुलाई 2023 को रात्रि 8 बजे के लगभग सोनू अपने घर पहुंचा तो देखा कि पिता सो रहे हैं। काजल ने मामा सोनू से कहा कि नाना किशनलाल भोजन खाने के बाद ही सोने चले गए। आप और नानी भी भोजन कर लें।

दाखिले के नाम पर चल रहे संगठित फर्जीवाड़े के **सिंडिकेट का खुलासा**

एमबीबीएस में प्रवेश के लिए कोलकाता चंडीगढ़-बनारस में बनवाए प्रमाणपत्र

मनोहर कुमार | पूर्णिया

मेडिकल कॉलेज में दाखिले के नाम पर चल रहे एक संगठित फर्जीवाड़े के सिंडिकेट का परत दर परत खुलासा हो रहा है। जांच में सामने आया है कि दाखिला लेने वाले अभ्यर्थियों ने कोलकाता, चंडीगढ़ और बनारस जैसे शहरों से फर्जी दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनवाए थे। जीएमसीएच पूर्णिया में सात मामले सामने आए हैं जिसके दिव्यांगता सर्टिफिकेट फर्जी मिले हैं। यह अंतरराज्यीय फर्जी सर्टिफिकेट सिंडिकेट की ओर इशारा कर रहा है। मेडिकल कॉलेज में सीतामढ़ी निवासी एमबीबीएस छात्र कार्तिक यादव को तीन महीने से लगातार ऑब्जर्व किया जा रहा था। मेडिकल कॉलेज में दाखिले के दौरान उसने कान से विकलांग होने का फर्जी सर्टिफिकेट प्रस्तुत किया था। दस्तावेजों की बारीकी से जांच और उसके क्रियाकलापों को वॉच करने के बाद सच्चाई सामने आया कि वह स्वस्थ है। सूत्रों का कहना है कि कार्तिक सिर्फ एक चेहरा है, जबकि इसके पीछे पूरा नेटवर्क सक्रिय है जो किसी कोर्स में दाखिले के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार करवा रहा है।

दिव्यांग कोटे के 5% सीट पर एडमिशन हुआ है। इसमें भारत सरकार द्वारा अधिकृत सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का सर्टिफिकेट है। फर्स्ट व सेकेंड बैच में 7 छात्रों का सर्टिफिकेट फर्जी मिला है। सभी ने कान से दिव्यांग का सर्टिफिकेट दिया था। -प्रो. डॉ. हरिशंकर मिश्र, प्रिंसिपल, जीएमसीएच

कई राज्यों से जुड़े हो सकते हैं रैकेट के तार

जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ेगी फर्जी सर्टिफिकेट रैकेट के तार कई राज्यों से जुड़ते दिख सकते हैं। सात छात्रों के द्वारा दिए गए कागजातों की प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई है कि अलग-अलग राज्यों के शहरों जैसे कोलकाता, चंडीगढ़, बनारस से फर्जी मेडिकल रिपोर्ट तैयार की गई है। क्योंकि प्रमाण पत्र देने वाले संबंधित संस्थान से जब इसकी जानकारी मांगी गई तो उसने हाथ खड़े कर दिए। कहा गया कि उनके यहां से ऐसा कोई सर्टिफिकेट दिया ही नहीं गया है।

फर्जीवाड़े से वास्तविक दिव्यांग के हक पर डाका

यह फर्जीवाड़ा सिर्फ कानून का उल्लंघन नहीं, बल्कि उन अभ्यर्थियों के हक पर सीधा हमला है जो वास्तव में दिव्यांग हैं और कठिनाइयों के बावजूद मेहनत से आगे बढ़ना चाहते हैं। फर्जी दस्तावेजों के सहारे मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेना चिंता का विषय है।

प्रवेश प्रक्रिया व शामिल जिम्मेदारों पर भी सवाल

मेडिकल कॉलेज में फर्जी सर्टिफिकेट के आधार पर दाखिले का मामला अब सिर्फ बाहरी रैकेट तक सीमित नहीं दिख रहा। अब सवाल सीधे दाखिला प्रक्रिया और उसमें शामिल जिम्मेदारों पर भी उठने लगे हैं। इसमें सिस्टम की भी लापरवाही दिख रही है।

भास्कर इनसाइट कान से दिव्यां का बनवाया था सर्टिफिकेट

सीतामढ़ी के कार्तिक यादव ने कान से दिव्यांग के सर्टिफिकेट पर आरक्षित कोटे पर एडमिशन ले लिया। वह क्लास में बिना हियरिंग एड लगाए पढ़ाई करता था। इसके अलावा कुछ बोलने पर वह आसानी से सुन पा रहा था। इसके बाद जब कॉलेज प्रशासन को शक हुआ तो उसपर नजर रखी जाने लगी। उसकी वीडियोग्राफी कराई गई। फिर संबंधित संस्थान को सर्टिफिकेट की सत्यता की जांच के लिए इसे भेजा गया।

पेज एक के शेष

भ्रष्टाचारः अफसरों पर ...

'प्रावधान हटाना नहाने के पानी संग बच्चा फेंकने जैसा'

▪ जस्टिस नागरत्ना ने कहा, यह धारा 17ए पहले ही सुप्रीम कोर्ट के दो फैसलों-विनीत नारायण और सुब्रमण्यम स्वामी केस में खारिज की जा चुकी है। उन्होंने कहा, 'यह प्रावधान जांच को रोकता है और ईमानदार अफसरों की बजाय भ्रष्टों को बचाता है। ईमानदारों को किसी सुरक्षा की जरूरत नहीं होती।'

▪ जस्टिस विश्वनाथन ने कहा, 'धारा 17ए को पूरी तरह खत्म करना ऐसा होगा जैसे बच्चे को नहलाते वक्त पानी के साथ उसे भी फेंक देना। हमें ईमानदार अफसरों को झूठे मामलों से बचाना होगा, लेकिन साथ ही सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी भी बनाए रखनी होगी।'

क्या है धारा 17एः जुलाई 2018 में भ्रष्टाचार निरोधक कानून, 1988 में जोड़ी गई धारा 17ए के तहत किसी भी सरकारी अफसर के खिलाफ उसकी ड्यूटी के दौरान लिए गए फैसलों को लेकर जांच, पूछताछ या जांच शुरू करने से पहले सक्षम प्राधिकरण से मंजूरी लेना जरूरी है।

डिजिटल अरेस्ट पर ...

गृह मंत्रालय ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि कमेटी में शामिल सभी पक्षों से विस्तृत सुझाव मिलने के बाद एक समेकित रिपोर्ट पेश करने के लिए एक महीने का वक्त दें, ताकि डिजिटल अरेस्ट के खिलाफ सरकारी रणनीति अदालत के सामने रखी जा सके। यह कमेटी सुप्रीम कोर्ट को रिपोर्ट करेगी। इसकी बैठकों में भारत के अटॉर्नी जनरल भी शामिल होंगे, ताकि अदालत के आदेशों और एमिकस क्यूरी की सिफारिशों को एक साथ लागू किया जा सके।

इसी क्रम में सुप्रीम कोर्ट ने 76 वर्षीय नलिनी मिश्रा से जुड़े डिजिटल अरेस्ट के मामले की जांच दिल्ली पुलिस से हटाकर सीबीआई को सौंप दी है। सीबीआई ने नई प्राथमिकी दर्ज की है। नलिनी से 1.64 करोड़ रु. ठग लिए गए थे, जिसमें फर्जी दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड दिखाकर उन्हें डराया गया और पैसे ट्रांसफर कराए गए। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि डिजिटल अरेस्ट की पीड़ित 76 वर्षीय नलिनी की आवाज बैंक और जांच एजेंसियों तक नहीं पहुंची, इसलिए जांच सीबीआई को सौंपी गई।

सख्ती जरूरी है, क्योंकि... देशभर में 2024 में डिजिटल अरेस्ट के 1.23 लाख मामले आए। इनमें 1935 करोड़ रु. की ठगी हुई। ▪ यदि फोन करके आपसे कोई पैसे मांगे या डराए-धमकाए तो कॉल काटकर तुरंत 112/1930 (राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन) पर सूचना दें।

सहपाठी ने न्यूड डीपफेक तस्वीरें...

▪ **स्कूलों के लिए जरूरी कदमः** डिजिटल सेफ्टी को पाठ्यक्रम में जोड़ें। शिकायत का स्पष्ट और सुरक्षित सिस्टम बनाएं। पीड़ित की पहचान गोपनीय रखें।

डीपफेक की पहचान

1. **चेहरे में गड़बड़ीः** आंखें, होंठ या नाक अजीब तरीके से फिट हों। चेहरे का अनुपात शरीर के हिसाब से गलत लगे। बालों की लाइन या गर्दन के पास कटाव दिखे।
2. **स्किन कलरः** चेहरे और शरीर का रंग अलग दिखे। चेहरे की त्वचा स्मूद और शरीर की अलग दिखे। स्किन पर अजीब धब्बे, ब्लर या पैच नजर आएं।
3. **रोशनी और छायाः** चेहरे पर रोशनी एक तरफ से, शरीर पर दूसरी तरफ से हो। छाया गलत दिशा में पड़े। बैकग्राउंड और शरीर की रोशनी अलग लगे।
4. **किनारों पर कटे-कटे निशानः** गर्दन, कंधे या बालों के पास फोटो कटी लगे। शरीर और बैकग्राउंड के बीच साफ बॉर्डर न हो। जूम करने पर ब्लर या पिक्सल टूटे दिखें। चेहरे के हाव-भाव शरीर से मैच न करें। आंखें स्थिर या अजीब लगें।

शताब्दी समारोह • 24 जनवरी तक शांतिकुंज में आयोजन

गायत्री परिवार में कल्याण और सौभाग्य की त्रिवेणी के 100 साल

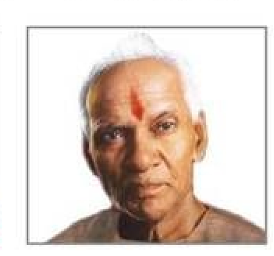

भास्कर न्यूज | हरिद्वार

हरिद्वार स्थित शांतिकुंज में 14 से 24 जनवरी तक भव्य आयोजन होने जा रहे हैं। मुख्य आयोजन 21 से 23 जनवरी तक होगा। यह कार्यक्रम अखिल विश्व गायत्री परिवार के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत हो रहे हैं, जिसमें कल्याण और सौभाग्य की त्रिवेणी के 100 साल पूरे हो रहे हैं। पहला, गायत्री तीर्थ में प्रज्वलित अखंड दीपक को 100 साल पूरे हो रहे हैं। दूसरा, परिवार की संस्थापिका और संचालिका माता भगवती देवी शर्मा का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। तीसरा, गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा की तप साधना की शुरुआत के भी 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में होने वाले आयोजन में देश-विदेश से हजारों कार्यकर्ता, साधक और आमजन शामिल होंगे। आयोजन का केंद्र बिंदु युग-निर्माण, मानवीय मूल्यों का जागरण और आध्यात्मिक चेतना का विस्तार रहेगा।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रभारी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या के मुताबिक, 21 जनवरी को प्रातःकालीन सत्र के साथ कार्यक्रमों की शुरुआत होगी। पहले दिन विचार-प्रेरक सत्र, मार्गदर्शन उद्बोधन और संगठनात्मक बैठकें होंगी। वरिष्ठ मार्गदर्शक युग-निर्माण की अवधारणा, सामाजिक पुनर्निर्माण और व्यक्ति निर्माण पर विस्तार से चर्चा करेंगे। साधना, जप और सामूहिक उपासना के कार्यक्रम भी होंगे।

22 जनवरी को दूसरा दिन विशेष रूप से प्रशिक्षण और सहभागिता को समर्पित रहेगा। इस दिन विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएं, संवाद सत्र और अनुभव साझा करने के कार्यक्रम होंगे।

तीसरे दिन, 23 जनवरी को सामूहिक संकल्प, भविष्य की कार्ययोजना और शताब्दी वर्ष के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया जाएगा। मार्गदर्शक प्रेरक उदबोधन देंगे। इनमें समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर रहेगा। समापन पर सामूहिक यज्ञ एवं प्रार्थना भी होगी।

पुस्तक मेले में पहली बार एक साथ 3200 पुस्तकें होंगी

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न राज्यों की झांकियां प्रदर्शित होंगी। पुस्तक मेला आयोजन का मुख्य आकर्षण होगा। इसमें पहली बार शताब्दी पुरुष की 3200 पुस्तकें एक साथ देखी जा सकेंगी।

धान घोटाले में व्यापारी, नेता व अफसरों की मिलीभगत, किसान आपस में न लड़ेंः टिकैत

भास्कर न्यूज | यमुनानगर

भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने धान घोटाले की जांच में हो रही देरी पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। रविवार को कैल में भाकियू नेता दलबीर सिंह के आवास पर पहुंचे राकेश टिकैत ने कहा कि इस घोटाले में व्यापारी, नेता और अधिकारी आपस में मिले हुए हैं, तभी सस्ती दर पर खरीदी गई फसल को एमएसपी के नाम पर महंगे दामों में बेचा जा रहा है। किसान ठगा जा रहा है।

राकेश टिकैत ने कहा कि धान घोटाले की निष्पक्ष और समयबद्ध जांच होनी चाहिए, ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो सके। उन्होंने आरोप लगाया कि जांच को जानबूझकर लंबा खींचा जा रहा है, ताकि बड़े चेहरे बच निकलें।

To Book Classified Ads Visit BhaskarAd.com 9772019222

भास्कर CLASSIFIED

आवश्यकता
APPOINTMENT
कार्यालयकर्मी
वन विभाग तहसील स्तरीय भर्ती, पद- 1148, प्रभागीय अधिकारी, वृक्षारोपण अधिकारी, फील्ड ऑफिसर, वन सिपाही, क्लर्क, ड्राइवर, योग्यता- (8वीं- ग्रेजुएट) वेतन- (28500- 42500) आवेदनकर्ता- नाम पता, पिनकोड/ WHATTSAPP 7607890065

ज्योतिष
ASTROLOGY
ज्योतिष
फीस नहीं ईनाम लूंगा। पंडित रविशंकर (गोल्ड मेडलिस्ट) मनचाहा प्यार/शादी, गृहक्लेश, पति-पत्नी अनबन, सौतन-दुश्मन छुटकारा, प्रेमविवाह। घर बैठे सभी समाधान #7055429792

दैनिक भास्कर में स्टाफ हायरिंग संबंधित विज्ञापन बुकिंग का सबसे सरल माध्यम
BhaskarAd.com
बनाए विज्ञापन बुकिंग आसान
• घर बैठे ऐड बुकिंग
• आसान ऑनलाइन पेमेंट
9772019222
अब आप क्लासीफाइड, वैवाहिकी, शोक संदेश और जाहिर सूचना के विज्ञापन भी सीधे बुक कर सकते हैं

Notice : Ads have not been verified factually and Bhaskar does not stand responsible for the sales propositions.

बिजनेस ब्रीफ

ब्लूमबर्ग इंडेक्सः भारतीय सरकारी बॉन्ड अभी नहीं

मुंबई | ब्लूमबर्ग इंडेक्स सर्विसेज (बीआईएसएल) ने फिलहाल भारतीय सरकारी बॉन्ड को ब्लूमबर्ग ग्लोबल एग्रीगेट इंडेक्स में शामिल नहीं करने का निर्णय लिया है। मुख्य कारण ऑपरेशनल और मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर की चुनौतियां बताई गई हैं। इनमें ऑटोमेटेड ट्रेडिंग सिस्टम की कमी, सेटलमेंट, पोस्ट-ट्रेड टैक्स प्रक्रियाओं में देरी और जटिल नियम शामिल हैं। अगला अपडेट 2026 के मध्य तक होने की उम्मीद है।

भारत की विकास दर 6.5% रहेगीः वर्ल्ड बैंक

नई दिल्ली | वर्ल्ड बैंक ने मंगलवार को भारत के लिए वित्त वर्ष 2027 के विकास पूर्वानुमान को पिछले वर्ष अक्टूबर में अनुमानित 6.3% से बढ़ाकर 6.5% कर दिया है। यह वृद्धि मजबूत घरेलू मांग और निर्यात प्रदर्शन के कारण हुई है, जो पहले की अपेक्षा अधिक लचीला साबित हुआ है। विश्व बैंक ने अपनी नवीनतम 'वैश्विक आर्थिक संभावनाएं' रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात ₹4 लाख करोड़ पारः वैष्णव

नई दिल्ली | देश का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 2025 में 4 लाख करोड़ रु. को पार कर गया। इसमें स्मार्टफोन का सबसे बड़ा हिस्सा रहा। इलेक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया, केवल आईफोन का निर्यात 2024 के मुकाबले दोगुना बढ़कर 2.03 लाख करोड़ रु. तक पहुंच गया। इस साल देश में स्मार्टफोन उत्पादन करीब 30 करोड़ यूनिट तक पहुंच सकता है। इसमें से एक चौथाई स्मार्टफोन निर्यात होंगे।

भारत कोकिंग कोल का आईपीओ 144 गुना भरा

मुंबई | भारत कोकिंग कोल का 1,071 करोड़ रु. का आईपीओ आखिरी दिन 143.85 गुना सब्सक्राइब हुआ। 34.69 करोड़ शेयरों के लिए 4,990 करोड़ से भी अधिक शेयरों की बोलियां मिलीं। योग्य संस्थागत निवेशकों का हिस्सा 310.81 गुना, गैर-संस्थागत निवेशकों का हिस्सा 240.49 गुना और रिटेल निवेशकों का 49.37 गुना सब्सक्राइब हुआ। प्रति शेयर कीमत 21-23 रुपए है।

बीएसई ने 4 नए मिडकैप फैक्टर इंडेक्स लॉन्च किए

मुंबई | बीएसई इंडेक्स सर्विसेज ने बीएसई 150 मिडकैप इंडेक्स पर आधारित चार नए फैक्टर इंडेक्स शुरू किए हैं। इनमें एनहांस्ड वैल्यू 30, मोमेंटम 30, लो वोलैटिलिटी 30 और क्वालिटी 30 इंडेक्स शामिल हैं। हर इंडेक्स मिडकैप कंपनियों में से 30 शेयरों को अलग-अलग मानकों पर ट्रैक करेगा। इन इंडेक्स में हर तीन महीने में बदलाव होगा। इनका इस्तेमाल निवेश के पैसिव विकल्पों के लिए बेंचमार्क के रूप में होगा।

उदय कोटक ने अमेरिकी स्नैक्स ब्रांड गो-रॉ खरीदा

मुंबई | बैंकर उदय कोटक के फैमिली ऑफिस सूक्स कैपिटल ने अमेरिका की फ्रीलैंड फूड्स एलएलसी में बहुमत हिस्सा हासिल कर लिया है।

ये स्नैक्स ब्रांड गो-रॉ की मूल कंपनी है। यह सूक्स कैपिटल का पहला विदेशी निवेश और उपभोक्ता उत्पाद क्षेत्र में पहली डील है। सौदा कितने में हुआ, इसकी जानकारी नहीं दी गई है।

फैसला • जीएसटी में 10% कटौती से 30% तक कीमत घटने का असर...

छोटी कारों के दिन लौटे, 5 लाख से कम दाम वाली कारों की बिक्री 92% तक बढ़ी

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

छोटी कारों का दौर लौट आया है। सरकार ने बीते साल सितंबर में छोटी कारों पर जीएसटी 28% से घटाकर 18% कर दी था। इससे कीमतें 25-30% कम हो गईं। नतीजतन 5 लाख रुपए से कम की एंट्री-लेवल कारों की मांग में उछाल आया। 6 साल बाद छोटी कारों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी है। अक्टूबर-दिसंबर 2025 में हैचबैक कारों की बाजार हिस्सेदारी 24.4% हो गई, जो साल के पहले 9 महीनों में 23.5% थी। बीती तिमाही मारुति सुजुकी के मिनी सेगमेंट (अल्टो, एस-प्रेसो, सेलेरियो, वैगनआर -सभी 5 लाख रुपए से कम) की बिक्री 92% बढ़ गई। बुकिंग इतनी ज्यादा है कि 1.5 महीने से डिलीवरी पेंडिंग चल रही है। इस बीच टाटा मोटर्स की टियागो की बिक्री 22% बढ़ गई। इसके सीएनजी वेरिएंट की बिक्री 34.5% और सीएनजी ऑटोमैटिक की बिक्री 41% बढ़ गई। कंपनी के मुताबिक, टैक्स घटने के बाद मासिक रिटेल बिक्री औसतन 50% बढ़ी है।

6 साल में पहली बार छोटी कारों का बाजार बढ़ा

दिसंबर में कार बिक्री 27% बढ़ी, 2025 की सबसे बड़ी मासिक उछाल, 84 लाख ज्यादा कारें बिकीं

- बिक्री बड़ी कारों से ज्यादा बढ़ने से 6 साल बाद छोटी कारों की बाजार हिस्सेदारी बढ़ी
- अक्टूबर-दिसंबर में हैचबैक की बाजार हिस्सेदारी 24.4% हो गई, जो 2025 के पहले 9 महीनों में 23.5% थी
- छोटी कारों की बिक्री में उछाल के चलते बीते दिसंबर में कारों की कुल बिक्री सालाना 27% बढ़कर 3.99 लाख हो गई, जो पिछले साल 3.15 लाख थी।
- वाहन कंपनियों के संगठन सियाम के आंकड़ों के मुताबिक, यह 2025 के दौरान किसी एक महीने की बिक्री में सबसे बड़ा मासिक उछाल था।
- बीते दिसंबर में दिसंबर 2024 के मुकाबले करीब 84 लाख ज्यादा कारें बिकीं
- युवा खरीदारों और प्रीमियम एडिशन की वजह से ब्लैक कार का क्रेज बढ़ा है। 2025 में इनकी बाजार हिस्सेदारी 14.8% से बढ़कर 20.76% हो गई।
- 2025 में बिकीं करीब 30% एसयूवी काले रंग की थी, हैचबैक सेगमेंट में इस रंग की सिर्फ 6.77% कारें बिकीं
- सबसे ज्यादा बिकने वाली सफेद कारों की बाजार हिस्सेदारी 43.9% से घटकर 40.7% रह गई।

बड़ी तैयारी...

ईवी उत्पादन बढ़ाने की स्कीम में बदलाव होगा!

भारत में इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन बढ़ाने के लिए बनाई गई एसपीएमईपीसीआई योजना में सरकार बदलाव कर सकती है। मार्च 2024 में शुरू हुई इस स्कीम में ग्लोबल ईवी कंपनियां 35,000 डॉलर से ज्यादा दाम वाली इलेक्ट्रिक कारें 15% शुल्क पर 5 साल इंपोर्ट कर सकती हैं। बदले में भारत में कम से कम 4,150 करोड़ रुपए निवेश करके फैक्ट्री लगानी होती है। लेकिन जनवरी, 2026 तक कोई आवेदन नहीं आया। इसलिए इसमें डायरेक्ट इंसेंटिव्स जोड़े जा सकते हैं। वाहन कंपनियों ने सरकार को बताया है कि अगर मुक्त व्यापार समझौते के तहत इलेक्ट्रिक कारें आयात की जाएं तो बिना भारत में फैक्ट्री लगाए ही विस्तार किया जा सकेगा। ऐसे में सरकार की स्कीम बेकार हो जाएगी।

रणनीति • 2 लाख करोड़ के बॉन्ड खरीद सकता है केंद्रीय बैंक

आरबीआई बैंकों की पूंजी लागत कम कर रहा, ताकि ब्याज दरें कम ही रहें

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

कर्ज की लागत घटाकर अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए रिजर्व बैंक (आरबीआई) बॉन्ड खरीद की रणनीति अपना रहा है। अप्रैल 2025 से अब तक आरबीआई ओपन मार्केट ऑपरेशन (ओएमओ) के तहत 5 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा के सरकारी बॉन्ड खरीद चुका है। मकसद सिस्टम में नकदी बढ़ाकर ब्याज दरों को काबू करना है। हालांकि, संकेत अब भी चुनौतीपूर्ण हैं। एक महीने में तीन महीने वाले सरकारी बॉन्ड की यील्ड 0.57% और 10 साल वाले बॉन्ड की 0.80% बढ़ी है। एसबीआई के ग्रुप चीफ इकोनॉमिस्ट एडवाइजर डॉ. सौम्य कांति घोष के अनुसार, वैश्विक अनिश्चितता और विदेशी निवेश में कमी को देखते हुए मार्च 2026 तक आरबीआई को 2 लाख करोड़ के और बॉन्ड खरीदने पड़ सकते हैं। अप्रैल 2024 से अब तक सिस्टम में 7.7 लाख करोड़ रुपए की नकदी डाली जा चुकी है। इस दौरान रेपो रेट में भी 1.25% की कटौती की गई। इसके बावजूद बॉन्ड यील्ड उम्मीद के मुताबिक नहीं घटी। इससे कर्ज की लागत कम नहीं हो पा रही।

प्रक्रियाः बॉन्ड खरीदकर नकदी बढ़ाई जाती है

ओएमओ नकदी नियंत्रित करने का प्रमुख टूल है। जब बाजार में पैसा कम होता है, तो आरबीआई बैंकों से सरकारी बॉन्ड खरीदकर उन्हें नकदी देता है। बैंकों के पास फंड बढ़ने से वे कम ब्याज दर पर कर्ज देने की स्थिति में आते हैं। इससे आम आदमी के लिए होम, कार और बिजनेस लोन लेना सस्ता होता है।

असरः महंगा कर्ज निवेश और खपत के लिए बाधा

बॉन्ड यील्ड बढ़ने से बैंकों के लिए फंड जुटाना महंगा हो रहा है। इस वजह से होम लोन, ऑटो लोन और कॉरपोरेट लोन की दरें ऊंची बनी हुई हैं। यह निवेश और खपत दोनों को प्रभावित कर रहा है। आर्थिक विकास की रफ्तार बनाए रखने के लिए अब आरबीआई को बॉन्ड खरीद का दायरा बढ़ाना ही होगा।

संकटः राज्यों की भारी उधारी से नकदी पर दबाव

केंद्र ने उधारी योजना में 10,000 करोड़ की कटौती की है, लेकिन राज्य सरकारें मार्च तक 5 लाख करोड़ रुपए जुटाने की तैयारी में हैं। बॉन्ड की निरंतर सप्लाई बाजार की नकदी सोख लेती है। जब सरकार बहुत ज्यादा लोन लेती है, तो बाजार में फंड कम होने से आम आदमी के लिए भी लोन महंगा हो जाता है।

अनुमानः इस साल दरें 0.50% घटा सकता है आरबीआई

नुवामा इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज के मुताबिक देश में लोगों की आमदनी और कंपनियों का मुनाफा कमजोर है। ऐसे हालात में जब रिटेल महंगाई नियंत्रण में है रिजर्व बैंक के पास 2026 में रेपो रेट में 0.25-0.50% तक कटौती करने की गुंजाइश बनी हुई है। आने वाले महीनों में सब्जियों के दाम धीरे-धीरे सामान्य होंगे, जिससे महंगाई थोड़ी बढ़ सकती है। इसके बावजूद महंगाई के आरबीआई की तय सीमा में रहने की उम्मीद है।

नवाचार • 39% इंटेलिजेंट ऑटोमेशन एआई के जिम्मे

एआई 40% तक तकनीकी काम कर रहा, पर इंसानी निगरानी जरूरी

भास्कर न्यूज़ | बेंगलुरु

देश के तकनीकी संगठनों में अब 20-40% काम एआई संभाल रहा है। आईटी कंपनियों में सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट में एआई का दखल इससे भी ज्यादा है। आईटी कंपनियों की प्रतिनिधि संस्था नैसकॉम और जॉब प्लेटफॉर्म इंडीड के एक सर्वे में शामिल 45% कंपनियों ने कहा कि सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट का 40% से ज्यादा हिस्सा एआई संभाल रहा है। इंटेलिजेंट ऑटोमेशन का 39% और बिजनेस प्रोसेस मैनेजमेंट का 37% काम या तो पूरी तरह एआई कर रहा है या बड़ी भूमिका निभा रहा है।

'फ्यूचर वर्क 2025' नाम के सर्वे की रिपोर्ट कहती है कि एआई अब सिर्फ सहायक टूल नहीं रहा, बल्कि रोजमर्रा के नियमित काम में गहराई से जुड़ गया है। 97% एचआर (मानव संसाधन) लीडर्स का मानना है कि 2027 तक काम की प्रकृति इंसान और एआई के सहयोग से तय होगी। 95% से ज्यादा संगठन एआई एजेंट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं या ऐसा करने की योजना बना रहे हैं।

एआई नौकरियां खत्म नहीं कर रहा, पर नए हुनर की दरकार

सर्वे में शामिल आधे से ज्यादा कंपनियों ने कहा कि एआई के आउटपुट अधूरे या कम क्वालिटी वाले होते हैं, इसलिए मानव निगरानी बहुत जरूरी बनी हुई है। एआई नौकरियां खत्म नहीं कर रहा, बल्कि भूमिकाएं तेजी से बदल रही है। एंट्री-लेवल जॉब्स में अब लाइव प्रोजेक्ट्स, हैकाथॉन और पोर्टफोलियो को डिग्री से ज्यादा महत्व मिल रहा है।

77% नियोक्ताओं को सुरक्षा की चिंता

- 77% एम्प्लॉयर्स को सिक्युरिटी और प्राइवेसी रिस्क की चिंता, 40% एचआर लीडर्स कर्मियों में एआई-रेडीनेस की समस्या से परेशान हैं।

करियर का असली मौका लोगों को एआई के साथ प्रभावी ढंग से काम करने के लिए तैयार करने में है।
- केतकी कर्णिक, रिसर्च हेड, नैसकॉम

ईपीएस • पेंशनर्स को राहत

डाकिया घर आकर निशुल्क बनाएगा जीवन प्रमाण पत्र

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

कर्मचारी पेंशन योजना (ईपीएस) पेंशनर्स के लिए राहत भरी खबर है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट (डीएलसी) जमा करने की 'फ्री डोरस्टेप' सेवा शुरू की है। इसके लिए इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी) के साथ हाथ मिलाया गया है। अब बुजुर्गों को बैंक या ईपीएफओ दफ्तर जाने की जरूरत नहीं होगी। डाकिया या डाकसेवक खुद घर आकर बायोमेट्रिक मशीन से सर्टिफिकेट बनाएगा।

ईपीएफओ के 9 जनवरी 2025 के सर्कुलर के अनुसार, इस सेवा का पूरा खर्च संगठन उठाएगा और पेंशनर से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इससे पेंशन बिना रुकावट जारी रहेगी। पेंशनर्स आईपीपीबी के नंबर 033-22029000 पर कॉल कर यह सर्विस बुक कर सकते हैं। डाकिया घर आकर फिंगरप्रिंट या चेहरा स्कैन कर 'जीवन प्रमाण' दर्ज करेगा। यह आधार और पेंशन पेमेंट ऑर्डर (पीपीओ) नंबर का मिलान कर प्रक्रिया पूरी करेगा। सर्टिफिकेट तभी सफल माना जाएगा जब आईपीपीबी का डेटा ईपीएफओ सिस्टम से मैच होगा। सिस्टम से मंजूरी मिलते ही डीएलसी अगले एक साल के लिए वैध हो जाएगी। ईपीएस पेंशनर्स साल में कभी भी यह सर्टिफिकेट जमा कर सकते हैं। 'जीवन प्रमाण' आधार-आधारित बायोमेट्रिक सर्टिफिकेट होता है। यह पेंशनर के जीवित होने की पुष्टि करता है। ईपीएस पेंशनर्स इसे साल में कभी भी जमा कर सकते हैं, और यह जमा करने की तारीख से 1 साल तक वैध रहता है।

बर्फ के नीचे लग्जरीः नॉर्वे में बर्फ का होटल बनकर तैयार, एक रात का किराया 46,755 रुपए से शुरू

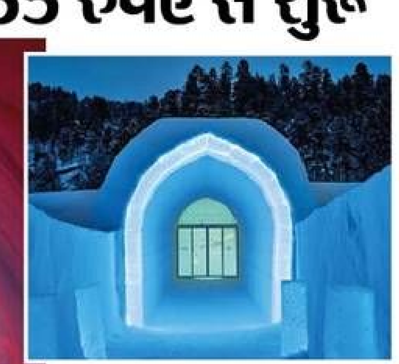

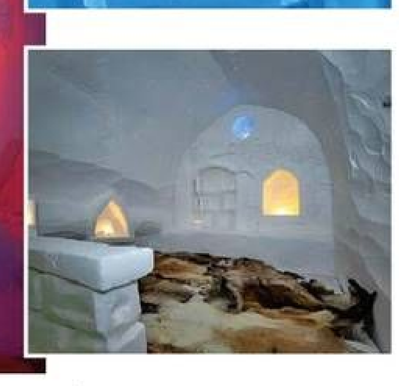

नॉर्वे | नॉर्वे में सोरिसनिवा इग्लू होटल बनाया गया है। इसके 13 कमरे बर्फ से बने हैं, जहां अंदर का तापमान माइनस 4-7 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है। होटल के आसपास बर्फ की कलात्मक मूर्तियां देखी जा सकती हैं। हर कमरे की अपनी एक कलात्मक थीम है। बिस्तर ठोस बर्फ से बने हैं और मेहमानों को रात भर आरामदायक रखने के लिए इनके ऊपर गद्दे और बारहसिंगे की खाल बिछाई गई है। 2,500 वर्ग मीटर में बने इस होटल को बनाने में 250 टन बर्फ और 7,000 घन मीटर स्नो (हेम) का इस्तेमाल हुआ है। यहां एक रात ठहरने का किराया 46,755 रुपए से शुरू होता है। यहां दुनियाभर के सैलानी आते हैं।

बाजार टूटे

सेंसेक्स में 933 अंकों का उतार चढ़ाव, 83,628 पर बंद हुआ

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

शेयर बाजार में मंगलवार को गिरावट आई। सेंसेक्स 13 जनवरी 2026 को भारतीय शेयर बाजार में काफी तेजी से गिरावट आई। सेंसेक्स सुबह के 84,258 के ऊंचे स्तर से 933 अंक गिरकर 83,325 तक नीचे आया। अंततः 250 अंकों की गिरावट के साथ नीचे 83,628 पर बंद हुआ। निफ्टी भी 25,900 की ऊंचाई से 296 अंक गिरकर 25,603 के स्तर तक लुढ़कने के बाद 25,732 पर बंद हुआ, जिसमें 58 अंकों की गिरावट आई। यह उतार-चढ़ाव मुख्य रूप से विदेशी निवेशकों की भारी बिकवाली की वजह से आया। विदेशी संस्थाओं ने करीब 3,443 करोड़ रुपए के शेयर बेचे। ट्रंप की तरफ से नए टैरिफ ऐलान से वैश्विक चिंता और बड़े शेयरों में मुनाफा वसूली से भी बाजार नीचे आया। बैंकिंग और आईटी जैसे कुछ सेक्टरों में थोड़ी मजबूती रही।

केंद्रीय बैंकों की स्वतंत्रता चर्चा में

11 केंद्रीय बैंकों ने अमेरिकी फेड चेयर पॉवेल से एकजुटता दिखाई

एजेंसी | वाशिंगटन

दुनियाभर के 11 प्रमुख केंद्रीय बैंकों ने अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल के साथ पूरी एकजुटता दिखाई है। यह समर्थन तब आया, जब अमेरिकी न्याय विभाग ने पॉवेल के खिलाफ आपराधिक जांच शुरू की। बैंक ऑफ इंग्लैंड के एंड्रयू बेली, यूरोपीय सेंट्रल बैंक और बैंक ऑफ कनाडा के टिफ मैकलम सहित 11 बैंकों ने मंगलवार को एक संयुक्त बयान जारी किया। इसमें पॉवेल की ईमानदारी, जनहित में काम और ब्याज दर तय करने में उनकी स्वतंत्र सोच की सराहना की गई। उन्होंने कहा कि पॉवेल एक सम्मानित सहकर्मी हैं और केंद्रीय बैंकों की स्वतंत्रता बहुत मायने रखती है।

स्टॉक घटने से बढ़ सकते हैं दाम

नवंबर-दिसंबर में देश का खाद्य तेल आयात 11.6 फीसदी घटा

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

तेल वर्ष 2025-26 के पहले दो महीनों (नवंबर-दिसंबर) में भारत का खाद्य तेल आयात 11.6% घट गया। इस दौरान कुल 25.13 लाख टन तेल आया, जो पिछले साल 28.43 लाख टन था। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के मुताबिक, रिफाइंड तेल का आयात 5.17 लाख टन से घटकर मात्र 3,500 टन रह गया। इसके विपरीत, कच्चे खाद्य तेल (सीपीओ) का आयात 23.26 लाख टन से 7.87% बढ़कर 25.09 लाख टन पहुंच गया। इससे कुल आयात में कच्चे खाद्य तेल की हिस्सेदारी बढ़कर 99.86% हो गई है। यह घरेलू रिफाइनिंग इंडस्ट्री के लिए अच्छा संकेत है। जानकारों का कहना है कि सप्लाई में कमी से बाजार में स्टॉक घट सकता है। इससे आने वाले दिनों में तेल की कीमतें बढ़ने का डर है।

ट्रेडर्स को फायदा • सेबी पैनल से मिली मंजूरी

कैश सेगमेंट में मार्जिन घटने से कम पूंजी में ज्यादा ट्रेड हो सकेगा

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

शेयर मार्केट में नकद लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए सेबी ने कैश सेगमेंट में मार्जिन घटाने का प्रस्ताव रखा है। इस प्रस्ताव को सेबी के पैनल ने मंजूरी दे दी है। हालांकि पैनल ने सलाह दी है कि मार्जिन 12.5% से कम नहीं होना चाहिए। अभी इस पर अंतिम फैसला लिया जाना बाकी है। सेबी के प्रस्ताव को कैश मार्केट को बढ़ावा देने के प्रमुख उपाय के रूप में देखा जा रहा है। वर्तमान में, अधिकांश शेयरों का वैल्यू एट रिस्क (वीएआर) और एक्सट्रीम लॉस मार्जिन (ईएलएम) 12.5 से 20% के बीच है। वीएआर मार्जिन बाजार में अस्थिरता से होने वाले अधिकतम संभावित नुकसान की भरपाई के लिए वसूला जाता है। ईएलएम सामान्य मार्जिन आवश्यकताओं के अतिरिक्त एक्सचेंजों द्वारा लिया जाता है।

नियमों में ढील से ट्रेडिंग वॉल्यूम बढ़ने की उम्मीद

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च हेड विनोद नायर के मुताबिक ये कदम ट्रेडर्स के लिए फायदेमंद साबित होगा। मार्जिन नियमों में ढील से ट्रेडिंग वॉल्यूम में बढ़त देखने को मिल सकती है। बाजार में नकदी प्रवाह बढ़ सकता है, रिटेल और छोटे निवेशकों को बेहतर सुविधा जैसे फायदे मिलेंगे।

ट्रेडर्स को अभी 20% तक मार्जिन रखना होता है

पहले जहां ट्रेडर्स को 15-20% तक मार्जिन जमा करना होता था, अब कम मार्जिन लगेगा। इससे उनके पास ज्यादा फंड ट्रेडिंग के लिए खाली रहेगा। ज्यादा ट्रेडर्स कैश मार्केट में शामिल होंगे, खरीद/बिक्री का वॉल्यूम और बाजार में सक्रियता बढ़ेगी। ट्रेडिंग लागत घटेगी।

29% की भारी गिरावट

भारत का रूसी क्रूड आयात दिसंबर में घटा

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज और देश की सरकारी रिफाइनरियों ने रूस से कच्चे तेल के आयात में भारी कमी की है। यूरोपीय थिंक टैंक सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (सीआरईए) द्वारा मंगलवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर 2025 में रूसी जीवाश्म ईंधन के खरीदारों में भारत तीसरे स्थान पर खिसक गया। 2.6 अरब यूरो (करीब 28 हजार करोड़ रु.) के रूसी हाइड्रोकार्बन की खरीद के साथ तुर्किये भारत को पीछे छोड़कर दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन गया। 6 अरब यूरो (63 हजार करोड़ रु.) की खरीद के साथ चीन रूसी तेल का शीर्ष खरीदार बना हुआ है। सीआरईए के मुताबिक भारत के रूसी कच्चे तेल के आयात में महीने-दर-महीने 29% की भारी गिरावट आई। रिलायंस इंडस्ट्रीज की जामनगर रिफाइनरी ने दिसंबर में रूस से अपने आयात को आधा कर दिया।

बिजनेस एंकर | सह-सीईओ मॉडल, लेकिन यह तभी सफल जब दोनों एक-दूसरे को समझते हों

56% टॉप लीडर्स बर्नआउट के शिकार; ऐसे में नेटफ्लिक्स, ओरेकल जैसी कंपनियां 'दो बॉस, एक विजन' वाला फॉर्मूला अपना रही हैं...

भास्कर न्यूज़ | लंदन

क्या एक औसत कर्मचारी से 122 गुना ज्यादा सैलरी पाना सीईओ की सेहत और वर्क-लाइफ बैलेंस पर भारी पड़ रहा है? आंकड़ों के मुताबिक, दुनिया के 60% सीईओ अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे हैं। लीडरशिप एडवाइजरी फर्म आईसीईओ के सर्वे के मुताबिक 2024 में 56% शीर्ष अधिकारियों ने खुद को थका हुआ (बर्नआउट) बताया।

इस संकट से निपटने के लिए अब ग्लोबल बिजनेस जगत में 'पावर शेयरिंग' का ट्रेंड बढ़ रहा है। कंपनियां एक ही व्यक्ति पर पूरा बोझ डालने के बजाय जिम्मेदारी साझा करना ज्यादा टिकाऊ मॉडल मान रही हैं। इसे बिजनेस वर्ल्ड की दुनिया में को-सीईओ मॉडल कहा जा रहा है,

60% सीईओ ने कहा- इससे परिवार को पर्याप्त समय दे सकते हैं

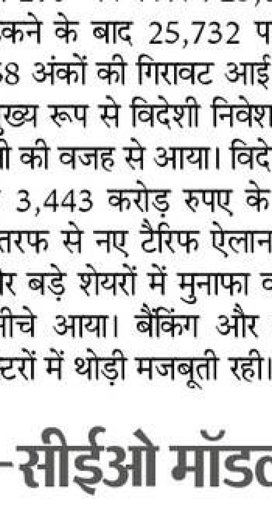

लंदन स्थित कंपनी बोर्ड इंटेलिजेंस की सह-सीईओ पिप्पा बेग के अनुसार, दो लोगों के साथ फैसले लेने से गलतियों और अहंकार की संभावना कम हो जाती है। उन्होंने बताया कि सह-सीईओ मॉडल की वजह से वे पांच साल में तीन बार मातृत्व अवकाश ले सकीं, जो किसी सीईओ के लिए आम बात नहीं है। एग्जीक्यूटिव सर्च फर्म रसेल रेनॉल्ड्स के मुताबिक, 60% सीईओ मानते हैं कि वे परिवार को वक्त नहीं दे पाते। ये मॉडल इस समस्या को कम कर सकता है।

जिसमें दो लोग मिलकर कंपनी का नेतृत्व करते हैं। ऐसे मॉडल वाली कंपनियों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। इंटेलिजेंस फर्म मायलॉजिक्स के मुताबिक, 2015 में अमेरिका की बड़ी कंपनियों के रसेल3000 इंडेक्स में सिर्फ 11 कंपनियों में सह-सीईओ थे। 2024 तक यह दोगुना बढ़कर 24 हो गई। नेटफ्लिक्स, ओरेकल, कॉमकास्ट और स्पॉटिफाई जैसी कंपनियों ने भी यह मॉडल अपनाया है। लीडरशिप कोच ऑड्रे हैमेलन के अनुसार, सह-सीईओ मॉडल से काम का बेहतर बंटवारा संभव होता है। कई कंपनियों में एक सह-सीईओ मार्केटिंग और प्रोडक्ट की जिम्मेदारी संभालता है, जबकि दूसरा फाइनेंस, रेगुलेशन और कानूनी मामलों पर फोकस करता है। इससे फैसले संतुलित व व्यावहारिक बनते हैं। सीईओ टैलेंट और वर्क-लाइफ बैलेंस की जरूरत के चलते यह मॉडल तेजी से चर्चित हो रहा है। हालांकि यह हर कंपनी के लिए सफल नहीं रहा। सेल्सफोर्स, एसएपी और मार्क्स एंड स्पेंसर में सह-सीईओ व्यवस्था दो साल से भी कम समय चली। बिजनेस कंसल्टेंसी कॉर्न फेरी की टियर्नी रेमिक के अनुसार, यह मॉडल उन्हीं कंपनियों में बेहतर काम करता है जहां दोनों लीडर्स पहले से साथ काम कर चुके हों। सही जोड़ी और स्पष्ट जिम्मेदारियों के बिना यह मॉडल कंपनियों को अधिक स्थिर नेतृत्व दे सकता है। अन्यथा शक्ति संघर्ष व संगठन में भ्रम की स्थिति बन सकती है।

चांदी पहली बार 2.63 लाख रु. किलो के पार

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

घरेलू बाजार में चांदी मंगलवार को एक बार फिर नई ऊंचाई पर पहुंच गई। चांदी 6,256 रुपए की छलांग लगाकर 2,63,032 रुपए प्रति किलो के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई। इसके उलट, सोने में हल्की नरमी देखी गई। 24 कैरेट सोना 165 रुपए गिरकर 1,40,284 रुपए और 22 कैरेट (जेवराती) सोना 151 रुपए सस्ता होकर 1,28,500 रुपए प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। चार दिन में ही चांदी 23,038 रुपए चढ़ चुकी है, जबकि जनवरी के शुरुआती 13 दिनों में यह 32,612 रुपए (14.15%) प्रति किलो महंगी हो चुकी है। वहीं, इस अवधि में 24 कैरेट सोने की कीमतों में 7,089 रुपए (5.32%) की बढ़त दर्ज की गई है।

रिटायरमेंट • पीएफआरडीए का फैसला

एनपीएसः निश्चित पेंशन के नियमों के लिए समिति बनी

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) के तहत सुनिश्चित पेंशन भुगतान का ढांचा तैयार करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। इसका मकसद रिटायरमेंट के बाद पेंशनधारकों को निश्चित और सुरक्षित आय उपलब्ध कराना है। यह पहल एनपीएस में निवेशकों का भरोसा बढ़ाएगी। यह कदम पीएफआरडीए एक्ट के अनुरूप है और रिटायरमेंट इनकम सिक्योरिटी को मजबूत करने पर केंद्रित है। समिति की अध्यक्षता आईबीबीआई के पूर्व चेयरमैन एम. एस. साहू करेंगे। 15 सदस्यीय पैनल में कानून, बीमा, फाइनेंस, कैपिटल मार्केट, शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल हैं।

कमेटी तय करेगी कि पैसा कब तक जमा रहेगा

कमेटी यह तय करेगी कि पैसा कितने समय तक जमा रहेगा, कितना पैसा निकाला जा सकेगा, पेंशन की कीमत कैसे तय होगी और सेवा देने वाली कंपनियां कितनी फीस लेंगी। इसके अलावा, पेंशन पर लगने वाले टैक्स और जोखिम से जुड़े नियमों की भी समीक्षा होगी।

कल्पमेधा

धनी होने का अर्थ श्रेष्ठ होना नहीं है, श्रेष्ठ वही है जो सिद्धांतों के प्रति दृढ़ है और ईमानदारी के रास्ते पर अडिग है।
– विलियम एलेरी

समाधान की राह

देश में आवारा कुत्तों के काटने की घटनाएं अब आम लोगों के लिए गंभीर समस्या बन गई है। खासकर बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए गली-मोहल्लों में सड़क पर चलना खतरे से खाली नहीं है। पिछले कई वर्षों से यह मसला सत्ता के गलियारों से लेकर सड़क तक उठता रहा है, लेकिन इसका कोई स्थायी समाधान नहीं निकल पाया है। हालांकि, केंद्र और राज्य सरकारों के स्तर पर आवारा कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, लेकिन नतीजा 'ढाक के तीन पात' जैसा ही है। यही वजह है कि मंगलवार को सर्वोच्च न्यायालय को यह कहना पड़ा कि कुत्ते के काटने की घटनाओं में राज्यों को भारी मुआवजा देने के निर्देश दिए जाएंगे, क्योंकि पिछले पांच वर्षों में आवारा पशुओं से संबंधित नियमों के क्रियान्वयन के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए। साथ ही यह भी कहा कि कुत्तों को सड़क पर भोजन खिलाने वालों को भी जिम्मेदार और जवाबदेह ठहराया जाएगा। शीर्ष अदालत की इस टिप्पणी को इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इस संकट से निपटने के लिए न तो राज्य सरकारों की ओर से प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं और न ही कुत्तों को सड़क पर भोजन परोसने पर रोक लग पाई है।

केंद्रीय पशुपालन और डेयरी मंत्रालय की तरफ से पिछले वर्ष जारी आंकड़ों पर गौर करें, तो देश में जनवरी, 2024 से लेकर दिसंबर तक कुत्ते के काटने के सैंतीस लाख से अधिक मामले सामने आए। इनमें पांच लाख से ज्यादा मामले पंद्रह साल से कम उम्र के बच्चों के थे। जबकि कुत्ते के काटने से करीब सैंतीस लोगों की मौत हो गई, जिनमें ज्यादातर मामले रेबीज संक्रमण के थे। इन आंकड़ों से स्थिति की गंभीरता का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। इस समस्या से निजात पाने का सरल एवं प्रभावी उपाय आवारा कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करना माना जाता है। इसके लिए विभिन्न राज्यों में टीकाकरण के जरिए कुत्तों का बंध्याकरण करने का कार्यक्रम शुरू किया गया था, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर लापरवाही और इच्छाशक्ति के अभाव में यह मुहिम कागजों में ही दम तोड़ती नजर आ रही है। यही वजह है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ रही है और इंसानों को काटने की घटनाओं में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

शीर्ष अदालत ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पिछले दिनों आक्रामक आवारा कुत्तों को सड़क से हटाकर आश्रय स्थलों में रखने का निर्देश दिया था। साथ ही गली-मोहलों में कुत्तों को सड़क पर भोजन नहीं परोसने की हिदायत भी दी थी। मगर पशु प्रेमियों को यह फैसला रास नहीं आया और यह मामला फिर से सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गया। इसमें दोराय नहीं है कि आवारा कुत्तों को सुरक्षित और खुला वातावरण मिलना चाहिए, लेकिन इस बात को भी समझना जरूरी है कि मानव सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता। शीर्ष अदालत ने भी यह सवाल उठाया है कि अगर पशु प्रेमियों को आवारा कुत्तों से लगाव है, तो वे उन्हें अपने घर क्यों नहीं ले जाते? दरअसल, कुत्तों को सड़क पर भोजन परोसे जाने से वे वहीं आसपास घूमते रहते हैं और स्थानीय लोगों को काटते और डराते हैं। ऐसे में इस बात पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि सरकार और समाज के सामूहिक प्रयासों से ही इस समस्या से निपटने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

असमानता की खाई

किसी भी राष्ट्र के संतुलित विकास के लिए आर्थिक समानता का होना बेहद जरूरी है। जब तक सभी नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं मयस्सर नहीं होंगी, तब तक विकास के तमाम दावे अधूरे ही साबित होंगे। मगर, चिंताजनक बात है कि दुनिया भर में आर्थिक असमानता का दायरा बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल आर्थिक अस्थिरता बढ़ रही है, बल्कि आमजन की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी आधारभूत जरूरतों तक पहुंच भी सीमित हो रही है। इससे कमजोर वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहा है। विश्व आर्थिक मंच की नई सर्वेक्षण रपट में भी इस बात को उजागर किया गया है। इसमें कहा गया है कि दुनिया भर के युवा असमानता से चिंतित हैं। मगर इसकी आलोचना करने के बजाय, वे इसमें बदलाव चाहते हैं। सवाल है कि आखिर अमीर-गरीब के बीच खाई घटने की बजाय बढ़ क्यों रही है? क्या शासन और प्रशासन को इस बात का भान नहीं है कि इस असमानता के परिणाम न केवल किसी एक देश, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए घातक हो सकते हैं?

इसमें दोराय नहीं कि आर्थिक असमानता के मामले में भारत भी पीछे नहीं है। विश्व असमानता पर हाल में जारी की गई एक रपट के मुताबिक, देश की कुल संपत्ति का करीब चालीस फीसद हिस्सा महज एक फीसद लोगों के पास है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि देश में आर्थिक असंतुलन का स्तर कहां पहुंच गया है। युवा वर्ग भी इससे प्रभावित हो रहा है और वह व्यवस्था में बदलाव तो चाहता है, लेकिन इसके लिए उसे सही मंच और अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। विश्व आर्थिक मंच की रपट में कहा गया है कि सर्वेक्षण के दौरान सत्तावन फीसद युवाओं ने इस असमानता पर गंभीर चिंता जताई है। आर्थिक असमानता बढ़ने की चेतावनी पहले भी दी जाती रही है, लेकिन इस पर गंभीरता दिखाने की पहल दुनिया के किसी कोने में नजर नहीं आई है। ऐसे में इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि जब किसी देश की संपत्ति का बड़ा हिस्सा चंद लोगों के हाथों में आ जाएगा, तो उसका परिणाम क्या होगा।

दूषित पेयजल से गहराता संकट

देश में जल आपूर्ति अवसंरचना की जर्जर स्थिति और गुणवत्ता परीक्षण की कमजोर व्यवस्था ने शहरी और ग्रामीण जीवन के स्वास्थ्य को जोखिम में डाल दिया है। इंदौर की त्रासदी एक चेतावनी है कि व्यवस्था में अब सुधार की नितांत आवश्यकता है।

अतुल अग्रवाल

जल प्रदूषण आज मनुष्य के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। यह प्रबंधन में लापरवाही बरतने का भी नतीजा है। जल के संरक्षण और उसकी स्वच्छता को लेकर योजना बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने में गंभीरता एवं कुशलता का अभाव रहता है। घर-घर जल पहुंचाने की योजना जरूर अच्छी है। मगर इसी के साथ नदियों की सफाई और जल आपूर्ति करने करने वाली पाइपलाइनों की समय-समय पर जांच की जाती, तो समस्या गंभीर नहीं होती। इंदौर में दूषित पेयजल के सेवन से हुई लोगों की मौत ने एक बार फिर यह उजागर कर दिया है कि भारत का जल संकट केवल मात्रा का नहीं, बल्कि गुणवत्ता, निगरानी और शासन की गंभीर विफलताओं का परिणाम है। यह घटना किसी एक शहर या राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस अदृश्य संकट का प्रतीक है, जो देश के लगभग हर शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्र में अलग-अलग रूपों में मौजूद है। जल, जिसे जीवन का आधार माना जाता है, जब वही जीवन के लिए ही घातक बन जाए, तब यह प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि संस्थागत असफलता का संकेत है।

संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल रपट 2024 के अनुसार, विश्व की लगभग 2.2 अरब आबादी को आज भी सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। भारत, जहां विश्व की अठारह फीसद जनसंख्या निवास करती है और जहां मीठे जल संसाधनों का मात्र चार फीसद हिस्सा उपलब्ध है, वह इस वैश्विक जल संकट के केंद्र में है। मगर इंदौर की घटना स्पष्ट करती है कि चुनौती केवल जल की उपलब्धता तक सीमित नहीं, बल्कि यह सवाल भी उतना ही अहम है कि जो जल उपलब्ध कराया जा रहा है, वह कितना सुरक्षित और उपयोग के योग्य है। घरों तक पहुंचाए जा रहे जल की गुणवत्ता की निरंतर निगरानी का अभाव अब भी बन हुआ है, जिसे दुरुस्त करने की जरूरत है।

नीति आयोग की जल प्रबंधन रपट 2023 में यह चेतावनी है कि भारत के इक्कीस से अधिक बड़े शहर अगले दशक में पानी खत्म होने की भयावह स्थिति का सामना कर सकते हैं। मगर इंदौर का अनुभव बताता है कि संकट भविष्य की आशंका नहीं, बल्कि वर्तमान की भयावह वास्तविकता है। जल आपूर्ति अवसंरचना की जर्जर स्थिति, पेयजल और सीवेज लाइनों का आपसी संपर्क तथा जल गुणवत्ता परीक्षण की कमजोर व्यवस्था ने शहरी और ग्रामीण जीवन के स्वास्थ्य को जोखिम में डाल दिया है। 'नेशनल इंस्टीट्यूट आफ अर्बन अफेयर्स' के अनुसार भारत के शहरी जल तंत्र में 35 से 40 फीसद जल पाइपलाइन में रिसाव के कारण बर्बाद हो जाता है। यह केवल संसाधनों की हानि नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक खतरा भी है, क्योंकि इन्हीं रिसाव बिंदुओं से दूषित तत्त्व पेयजल में जाते हैं।

इंदौर जैसे शहर, जो स्वच्छता और शहरी प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सराहे जाते रहे हैं, वहां ऐसी घटना यह दर्शाती है कि दृश्य उपलब्धियों के पीछे एक गहरी तकनीकी और निगरानी संबंधी कमी छिपी हुई है। यह समस्या केवल इंदौर तक सीमित नहीं है। देश के विभिन्न बड़े शहरों में समय-समय पर दूषित जल से फैलने वाली बीमारियों के मामले सामने आते रहते हैं। अंतर केवल इतना है कि हर बार परिणाम इतने गंभीर रूप में दर्ज नहीं हो पाते या सरकारी फाइलों में दब जाते हैं। इस उपेक्षा की कीमत नागरिकों को जान देकर चुकानी पड़ती है। निराशाजनक बात यह है कि औद्योगिक और शहरी प्रदूषण इस संकट को और गहराता है। राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण की वर्ष 2023 की एक रपट के अनुसार देश की साठ फीसद से अधिक औद्योगिक इकाइयां अपने अपशिष्ट जल का समुचित उपचार नहीं करतीं। अनुमान है कि भारत का लगभग सत्तर फीसद औद्योगिक अपशिष्ट जल बिना उपचार के नदियों और जल स्रोतों में प्रवाहित होता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़े बताते हैं कि गंगा और यमुना जैसी नदियों में जैव-रासायनिक आक्सीजन मांग (बीओडी) स्तर मानकों से कहीं अधिक है। यही जल जब शोधन की अपर्याप्त प्रक्रिया से गुजर कर नागरिकों तक पहुंचता है, तो स्वास्थ्य संकट अवश्यंभावी हो जाता है। स्वाभाविक है कि अब इसके उपाय सोचने होंगे। जलवायु परिवर्तन ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है। ऐसे में दोराय नहीं कि जल संकट आने वाले समय में और भी गहराएगा। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, बीते पांच दशकों में देश में औसत वर्षा में गिरावट और चरम वर्षा घटनाओं में वृद्धि देखी गई है। इससे जल स्रोतों की स्वाभाविक पुनर्भरण और शुद्धीकरण क्षमता प्रभावित हुई है। अचानक होने वाली भारी वर्षा के दौरान यदि वर्षा जल का वैज्ञानिक ढंग से संचय न किया जाए, तो वह प्रदूषकों को अपने साथ बहा कर जलाशयों और नदियों में पहुंचा देता है, जिससे जल की गुणवत्ता और अधिक खराब हो जाती है।

> **संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल रपट 2024 के अनुसार, विश्व की लगभग 2.2 अरब आबादी को आज भी सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। भारत में जहां मीठे जल संसाधनों का मात्र चार फीसद हिस्सा उपलब्ध है, वह इस वैश्विक जल संकट के केंद्र में है। मगर इंदौर की घटना स्पष्ट करती है कि चुनौती केवल जल की उपलब्धता तक सीमित नहीं, बल्कि यह सवाल भी उतना ही अहम है कि जो जल उपलब्ध कराया जा रहा है, वह कितना सुरक्षित और उपयोग के योग्य है। घरों तक पहुंचाए जा रहे जल की गुणवत्ता की निरंतर निगरानी का अभाव अब भी बना हुआ है।**

इन परिस्थितियों में स्पष्ट है कि जल प्रबंधन को केवल राज्य या राष्ट्रीय स्तर की योजनाओं तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि सूक्ष्म स्तरीय जल प्रबंधन को नीति के केंद्र में लाया जाए। प्रत्येक वार्ड, मोहल्ले और प्रत्येक जल आपूर्ति मंडल के स्तर पर जल गुणवत्ता की नियमित निगरानी, पाइपलाइन नेटवर्क का पृथक्कीकरण और वास्तविक समय के आंकड़ों पर आधारित चेतावनी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए। जल सुरक्षा को अब 'एक समान नीति' के बजाय 'स्थान-विशिष्ट समाधान' के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत का जल संकट सर्वव्यापी समस्या है, जिसे सामान्य नीतियों से नहीं, बल्कि स्थानीय और सूक्ष्म स्तर पर लक्षित हस्तक्षेप से ही सुलझाया जा सकता है।

इसके साथ ही, 'हर घर नल' जैसी योजनाओं को 'हर नल सुरक्षित' की अवधारणा से जोड़ना भी अनिवार्य है। जल आपूर्ति की सफलता केवल 'कनेक्शन की संख्या' से नहीं, बल्कि जल की गुणवत्ता, निरंतरता और पारदर्शिता से मापी जानी चाहिए। स्थानीय निकायों को तकनीकी क्षमता, वित्तीय संसाधन और उत्तरदायित्व, तीनों स्तरों पर सशक्त किए बिना यह लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता। इस दिशा में समन्वित प्रयास करने होंगे। नागरिकों की भूमिका इस संकट में गौण नहीं है। जल उपयोग, संरक्षण और निगरानी को सामुदायिक उत्तरदायित्व के रूप में विकसित करना होगा। स्थानीय स्तर पर जल परीक्षण, शिकायत निवारण और सामाजिक परीक्षण जैसी प्रक्रियाएं इस दिशा में प्रभावी साधन बन सकती हैं। जल केवल सरकार द्वारा प्रदत्त सेवा नहीं, बल्कि समाज की साझी संपदा है और उसकी सुरक्षा भी सामूहिक प्रयास से संभव है।

इंदौर की त्रासदी एक चेतावनी है, लेकिन साथ ही यह अवसर भी है उस सोच को बदलने का, जिसमें जल संकट को केवल भविष्य की समस्या माना जाता रहा है। यदि आज भी जल की गुणवत्ता, अवसंरचना और स्थानीय निगरानी को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो ऐसी घटनाएं अपवाद नहीं, बल्कि सामान्य होती जाएंगी। जल संकट अब केवल पर्यावरणीय या तकनीकी चुनौती नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और शासन की विश्वसनीयता की परीक्षा बन चुका है। भारत के लिए यह समय आत्ममंथन का है। जल प्रबंधन को आंकड़ों और घोषणाओं से आगे बढ़ा कर जमीन पर, गली-मोहल्ले के स्तर पर उतारने की आवश्यकता है। अन्यथा, हर शहर संभावित इंदौर बन सकता है और तब चेतावनियों का मूल्य केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि जनहानि के रूप में चुकाना पड़ेगा।

रिश्तों की नींव

संध्या अग्रवाल

हम जब किसी रिश्ते में प्रवेश करते हैं, तो अक्सर यह सोचकर नहीं आते कि हम क्या महसूस करते हैं, बल्कि यह सोचकर आते हैं कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए। धीरे-धीरे रिश्ते भावनाओं का नहीं, अपेक्षाओं का मंच बन जाते हैं। हम यह मान लेते हैं कि अच्छे रिश्ते वही हैं, जहां कोई शिकायत न हो, कोई असहमति न हो और कोई थकान दिखाई न दे। यहीं से शुरू होती है 'परिपूर्ण बनने' या संपूर्णता की मांग की अदृश्य दौड़। हम हर भूमिका में खुद को ढालने लगते है- बेटी, पत्नी, मां, मित्र, सहकर्मी। और इस ढलने की प्रक्रिया में हम यह भूल जाते हैं कि हम भी एक इंसान हैं, जिसकी अपनी सीमाएं, अपनी जरूरतें और अपनी भावनाएं हैं। संपूर्ण बनने की यह मानसिकता अचानक विकसित नहीं होती। इसका बीज बचपन में ही बो दिया जाता है, जब हमें सिखाया जाता है कि अच्छे बच्चे कैसे होते हैं। जो बच्चे ज्यादा सवाल न करें, जो बड़ों की हर बात मान लें और जो अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखना सीख लें।

लड़कियों के लिए यह सीख और भी सख्त होती है। उन्हें बताया जाता है कि ज्यादा बोलना अच्छा नहीं, अपनी बात मन में रखना ही समझदारी है और रिश्ते निभाने के लिए खुद को पीछे रखना पड़ता है। यही बातें आगे चलकर उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती हैं। हर रिश्ता थोड़ा-बहुत समझौता मांगता है, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन समस्या तब शुरू होती है, जब समझौता आदत बन जाए और अपनी बात रखना स्वार्थ समझा जाने लगे। कई लोग अपनी नाराजगी, थकान और असंतोष को भीतर ही दबाए रखते हैं, ताकि सामने वाला असहज न हो। धीरे-धीरे यह चुप्पी रिश्ते की भाषा बन जाती है। बाहर से सब ठीक दिखता है, लेकिन भीतर एक खालीपन जन्म लेने लगता है। व्यक्ति महसूस करता है कि वह हर रिश्ते में मौजूद है, लेकिन अपनी ही जिंदगी में अनुपस्थित है।

आज के समय में सोशल मीडिया ने परिपूर्णता या संपूर्णता की कसौटी वाले रिश्तों की एक झूठी तस्वीर हमारे सामने रख दी है। हर तरफ मुस्कुराते चेहरे, आदर्श जोड़े और खुशहाल परिवार दिखाई देते हैं। इन तस्वीरों के पीछे की थकान, मतभेद और चुप्पी कभी दिखाई नहीं देतीं। इन सबको देखकर हम अपने वास्तविक रिश्तों से असंतुष्ट होने लगते हैं। हमें लगता है कि कहीं हम ही कम पड़ रहे हैं, हमारा रिश्ता ही अधूरा है। मन में इसी भावना के कारण हम खुद को और ज्यादा बदलने की कोशिश करने लगते हैं- खुद को बेहतर नहीं, बल्कि 'संपूण' या ऐसा बनाने के लिए, जिसमें कोई भी कमी न हो।

महिलाओं के जीवन में संपूर्णता की यह अपेक्षा कई गुना अधिक होती है। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखें, सबकी भावनाओं का खयाल रखें और अपनी तकलीफ को कभी प्राथमिकता न दें। जब वे थकती हैं, तो कहा जाता है कि यही उनकी शक्ति है। जब वे चुप रहती हैं, तो उसे सहनशीलता कहा जाता है, लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि इस चुप्पी की कीमत क्या है। कई महिलाएं भीतर ही भीतर टूटती रहती हैं, पर बाहर से मजबूत दिखाई देती हैं। संपूर्ण बनने की यह कोशिश शुरुआत में रिश्तों को सहज बनाए रखती है, लेकिन समय के साथ यह उन्हें खोखला कर देती है। जब भावनाएं व्यक्त नहीं होतीं, तो वे दबकर गुस्से और निराशा का रूप ले लेती हैं। जब संवाद नहीं होता, तो दूरी अपने-आप पैदा हो जाती है।

एक समय ऐसा आता है जब व्यक्ति महसूस करता है कि उसने रिश्तों को बचाने के लिए खुद को खो दिया है। तब यह प्रश्न उठता है कि क्या कोई रिश्ता इतना मूल्यवान हो सकता है कि उसके लिए खुद को मिटा दिया जाए? सच यह है कि रिश्तों को परिपूर्ण या संपूर्ण इंसानों की नहीं, बल्कि सच्चे और ईमानदार इंसानों की जरूरत होती है। ऐसे इंसान, जो अपनी कमजोरियों को स्वीकार कर सकें, अपनी थकान को व्यक्त कर सकें और जरूरत पड़ने पर मदद मांग सकें।

रिश्ते तब गहरे होते हैं, जब उनमें असहमति की जगह होती है, सवाल पूछने की आजादी होती है और भावनाओं को साझा करने का साहस होता है। वहां सब कुछ ठीक-ठाक दिखाने की मजबूरी न हो। सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण रिश्ता खुद के साथ होता है। अगर उसी रिश्ते में हम झूठे हो जाएं, तो बाकी रिश्तों में सच्चाई निभाना कठिन हो जाता है। अपनी सीमाओं को पहचानना, अपनी जरूरतों को महत्त्व देना और अपनी भावनाओं को सुनना रिश्तों को स्वस्थ बनाता है।

जब हम खुद से ईमानदार होते हैं, तभी हम दूसरों के साथ भी ईमानदारी निभा पाते हैं। वरना रिश्ते केवल निभाने की जिम्मेदारी बनकर रह जाते हैं। हर दिन अच्छा होना जरूरी नहीं। हर बार समझदार बनना भी जरूरी नहीं। रिश्तों में कभी-कभी अपनी बात रखना, असहमत होना और खुद के लिए खड़ा होना भी उतना ही आवश्यक है। हर कसौटी पर संपूर्ण होने की कोशिश में अगर हम अपनी सच्ची भावनाओं को दबा दें, तो रिश्ते केवल दिखावे का ढांचा बनकर रह जाते हैं। जबकि रिश्तों की खूबसूरती उनकी अपूर्णता में ही छिपी होती है। शायद अब यह समझने का समय आ गया है कि रिश्ते निभाने के लिए खुद को तोड़ना नहीं पड़ता। उन्हें बचाने के लिए खुद को खोना नहीं होता। रिश्ते तभी टिकते हैं, जब उनमें इंसान होने की पूरी गुंजाइश बची रहे। 'परिपूण' या संपूर्णता नहीं, बस सच्चा रहा जाए- यही रिश्तों की सबसे मजबूत नींव है।

दुनिया मेरे आगे

> **जब हम खुद से ईमानदार होते हैं, तभी हम दूसरों के साथ भी ईमानदारी निभा पाते हैं। वरना रिश्ते केवल निभाने की जिम्मेदारी बनकर रह जाते हैं। हर दिन अच्छा होना जरूरी नहीं। हर बार समझदार बनना भी जरूरी नहीं। रिश्तों में कभी-कभी अपनी बात रखना, असहमत होना भी आवश्यक है।**

सुरक्षा की चिंता

'लक्षित हिंसा' (संपादकीय, सात जनवरी) पढ़ा। यह बेहद ही दुखद है कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं के साथ बर्बर सलूक किया जा रहा है। अब तक कई लोगों की हत्या की जा चुकी है और यह सिलसिला जारी है। वहां हिंसक भीड़ निरंकुश तरीके से पेश आ रही है। बांग्लादेश की सरकार भी इस अराजकता पर कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं कर रही है। यह निराशाजनक है कि हमारी सरकार बांग्लादेश को कोई ठोस कार्रवाई करने का संदेश देने में देर कर रही है। भारत को अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के समक्ष यह मुद्दा प्रमुखता से उठाना चाहिए। बांग्लादेश का अस्तित्व भारत के प्रयासों से ही संभव हुआ और यह ऐसा एहसान है, जिसका ऋण बांग्लादेश कभी नहीं चुका सकता। वहां की जनता को भी यह सच्चाई कभी नहीं भूलनी चाहिए। आइपीएल में बांग्लादेशी खिलाड़ियों के बहिष्कार जैसे हल्के कदमों से वहां की सरकार की तंद्रा नहीं टूटेगी। भारत को ठोस कूटनीतिक प्रयासों से वहां किसी भी तरह अनियंत्रित हिंसा को अविलंब रुकवाना चाहिए।

– इशरत अली कादरी, भोपाल

निष्पक्षता पर सवाल

पिछले कुछ वर्षों से केंद्रीय जांच एजंसियों, खासकर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की भूमिका को लेकर लगातार बहस होती रही है। विपक्ष का आरोप है कि इन एजंसियों का इस्तेमाल राजनीतिक दबाव बनाने और चुनावी फायदे के लिए किया जा रहा है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की चुनावी रणनीति से जुड़ी संस्था पर की गई हालिया कार्रवाई इसी बहस को एक बार फिर तेज करती है। कुछ महीने बाद होने वाले बंगाल विधानसभा चुनाव के संदर्भ में देखें, तो इस कार्रवाई के मायने हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया है। दरअसल, ईडी लंबे समय से विपक्ष के निशाने पर रही है। इसकी जांच प्रक्रिया का बहुत कम मामलों में अंतिम नतीजे तक पहुंचना और चुनावों के आसपास इसकी सक्रियता और निष्पक्षता पर सवाल उठते रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट भी इस एजंसी की कार्यप्रणाली पर असंतोष जता चुका है।

– अरुणेश कुमार, चंपारण, बिहार

समय का पाठ

समय कभी गुरु बन कर हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाता है, कभी परीक्षा-निर्णायक बन कर हमारे कार्यों की गुणवत्ता को उजागर करता है, और कभी दार्शनिक बन कर हमें मृत्यु और नश्वरता का बोध कराता है। जिन्होंने समय की इस भाषा को समझा, वे युग-निर्माता बने। उन्होंने अपने विचारों, कर्मों और संघर्षों को समय की धारा के साथ सामंजस्य में रखा और इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी। ऐसे कई लोग हैं, जो समय के विरुद्ध नहीं, समय के साथ चल कर परिवर्तन के दूत बने। इसके विपरीत, जिन्होंने समय का अपमान किया, जिन्होंने उसे व्यर्थ गंवाया या उसकी चेतावनियों की उपेक्षा की, वे इतिहास के अंधकार में खो गए। सत्ता, धन और अहंकार ने उन्हें क्षणिक ऊंचाई दी, पर समय ने अंततः उन्हें गिरा दिया। समय किसी को मिटाने के लिए नहीं, बल्कि सत्य को स्थापित करने के लिए काम करता है। समय नष्ट नहीं होता, मनुष्य का जीवन नष्ट होता है।

– समराज चौहान, सिलचर, असम

ताकत का वर्चस्व

वेनेजुएला के राष्ट्रपति को बलपूर्वक पकड़ कर अपने नियंत्रण में लेने की घटना और ग्रीनलैंड को हथियाने की लालसा, अमेरिका की वर्चस्ववादी मानसिकता को उजागर करती है। यह आचरण न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवता और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित सिद्धांतों के भी सर्वथा विपरीत है। यह वही मानसिकता है, जो सभ्यता के प्रारंभिक दौर में कबीलों के बीच देखने को मिलती थी, जहां शक्ति ही न्याय का पैमाना होती थी और ताकतवर का वर्चस्व ही अंतिम सत्य माना जाता था। चिंताजनक तथ्य यह भी है कि अमेरिका चीन, भारत और ब्राजील जैसे देशों पर पांच सौ फीसद शुल्क लगाने की तैयारी कर रहा है। इससे उसकी मंशा पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि वह निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि दबाव की राजनीति में विश्वास रखता है।

– खुमानसिंह चुंडावत, मंदसौर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

विशेष
जनसत्ता | 14 जनवरी, 2026

वेनेजुएला के घटनाक्रमों से तेल की कीमतें प्रभावित होने के आसार नहीं: क्रिसिल रेटिंग्स

क्रिसिल रेटिंग्स ने मंगलवार को कहा कि वेनेजुएला के हालिया घटनाक्रमों से कच्चे तेल की कीमतों पर निकट भविष्य में कोई ठोस प्रभाव पड़ने के आसार नहीं है क्योंकि वैश्विक आपूर्ति में इस लातिन अमेरिकी देश की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत बेहद कम है। जनवरी की शुरुआत में अमेरिकी सैन्य अभियान के परिणामस्वरूप वेनेजुएला के तत्कालीन राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को मादक पदार्थों से जुड़े आरोपों में पकड़ लिया गया था। इस घटना ने देश में अनिश्चितता उत्पन्न कर दी। वेनेजुएला के पास दुनिया के कुछ सबसे बड़े प्रमाणित कच्चे तेल के भंडार मौजूद हैं। रेटिंग एजेंसी क्रिसिल रेटिंग्स ने बयान में कहा कि यदि स्थिति बिगड़ती भी है और वेनेजुएला में कच्चे तेल का उत्पादन बाधित होता है, तब भी वैश्विक तेल कीमतों पर इसका प्रभाव सीमित रहने का अनुमान है। भारत के संदर्भ में, वेनेजुएला के घटनाक्रमों का उसके वैश्विक व्यापार या भारतीय कंपनियों की साख पर कोई खास प्रभाव पड़ने का अनुमान नहीं है।

केंद्रीय विद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं की संख्या कम हुई

सुशील राघव

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत देश भर में चलने वाले 1,256 केंद्रीय विद्यालयों में अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या में एक वर्ष कमी दर्ज की गई है। 31 दिसंबर, 2024 को केंद्रीय विद्यालयों में एससी विद्यार्थियों की संख्या 2,83,592 थी जो केंद्रीय विद्यार्थियों में उस समय पढ़ रहे विद्यार्थियों का 20.39 फीसद थी। 31 दिसंबर, 2025 को इन विद्यालयों में पढ़ने वाले एससी वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या कम होकर 2,63,332 हो गई जो कुल विद्यार्थियों का 19.49 फीसद ही रह गई।

केंद्रीय विद्यालयों का संचालन करने वाले केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) की वार्षिक रपट के मुताबिक इस एक वर्ष के दौरान केंद्रीय विद्यालयों में एससी वर्ग के 20,260 विद्यार्थियों (0.9 फीसद) की कमी हुई। रपट के मुताबिक इस अंतराल में अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और दिव्यांग वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई। रपट के अनुसार एसटी वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या में पिछले एक वर्ष में 6.70 फीसद से 6.74 फीसद हो गई। ओबीसी वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या 27.94 फीसद से 32.29 फीसद और दिव्यांग वर्ग वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या 0.49 फीसद से 0.59 फीसद पहुंच गई।

वार्षिक रपट

रपट के मुताबिक इस अंतराल में कुल विद्यार्थियों की तुलना में छात्रों के फीसद में कमी और छात्राओं के फीसद वृद्धि भी दर्ज की गई है। 31 दिसंबर, 2024 को केंद्रीय विद्यालयों में 53.45 फीसद (7,43,217) छात्र पढ़ रहे थे जबकि 31 दिसंबर, 2025 को पढ़ने वाले छात्रों का फीसद घटकर 53.14 फीसद (7,18,113) हो गई। छात्राओं की बात करें तो रपट के मुताबिक 31 दिसंबर, 2024 को 46.55 फीसद (6,47,300) छात्राएं केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ रही थीं जबकि 31 दिसंबर, 2025 को पढ़ने वाली छात्राओं का फीसद बढ़कर 46.86 (6,33,333) हो गया। अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए शिक्षाकेंद्रीय विद्यालयों में सभी नए प्रवेशों के लिए अनुसूचित जाति के लिए 15 फीसद, अनुसूचित जनजाति के लिए 7.5 फीसद सीटें और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी-एनसीएल) के लिए 27 फीसद सीटें आरक्षित हैं। उपलब्ध सीटों का तीन फीसद दिव्यांग बच्चों के लिए आरक्षित किया गया है।

फाइल फोटो

केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) की वार्षिक रपट के मुताबिक एक वर्ष के दौरान केंद्रीय विद्यालयों में एससी वर्ग के 20,260 विद्यार्थियों (0.9 फीसद) की कमी हुई।
रपट के मुताबिक इस अंतराल में अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और दिव्यांग वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई।

तीन वर्षों में 5.50 फीसद से ज्यादा विद्यार्थियों में आई कमी

केंद्रीय विद्यालयों में तीन वर्षों से लगातार विद्यार्थियों की संख्या में कमी दर्ज की गई है। वार्षिक रपट के मुताबिक 2021-22 में जहां विद्यार्थियों की कुल संख्या 14,30,442 थी, वहीं यह संख्या 2024-25 में घटकर 13,51,446 हो गई है। यह कमी 5.50 फीसद से अधिक की रही। वर्तमान में केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ रहे छात्र और छात्राओं का अनुपात 1: 0.88 है। इस दौरान देश में आठ नए केंद्रीय विद्यालय खोले गए।

केंद्रीय विद्यालयों में वर्षवार कुल विद्यार्थियों की संख्या

वर्ष	केंद्रीय विद्यालय	कुल विद्यार्थी
2021-22	1248	14,30,442
2022-23	1252	14,25,164
2023-24	1254	13,90,517
2024-25	1256	13,51,446

सबसे अधिक विद्यालय उत्तर प्रदेश में

केंद्रीय विद्यालयों की मौजूदगी देश के सभी 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 122 केंद्रीय विद्यालय हैं। इसके बाद मध्य प्रदेश 112 विद्यालय हैं। इन दोनों प्रदेशों में ही 100 से अधिक केंद्रीय विद्यालय हैं। इसके अलावा राजस्थान में 77, ओड़ीशा में 67, पश्चिम बंगाल में 62, महाराष्ट्र में 59, कर्नाटक में 52, गुजराव व दिल्ली में 46-46 केंद्रीय विद्यालय हैं। केंद्रीय शासित प्रदेश लक्ष्यद्वीप में केवल एक केंद्रीय विद्यालय है।

आम नागरिकों के लिए आसान करेंगे नए कानून

पंकज रोहिला

आम जनता की सुविधा के लिए केंद्र सरकार जल्द ही मोटर वाहन अधिनियम (एमवीए) में बदलाव करेगी। इन बदलावों से परिवहन संबंधित कामकाज की प्रक्रिया को आसान किया जाएगा। नई तकनीक विकसित हो जाने के बाद इन संशोधनों की जरूरत महसूस की जा रही है। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के मुताबिक इन कानूनों में संशोधन के लिए केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी की जरूरत होगी। इस मंजूरी से पहले से संशोधन कानून केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली विशेष समिति के सामने पेश किए जाएंगे। इससे कामकाज की प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद मिलेगी।

हाल ही में देश भर के परिवहन मंत्रियों की बैठक में ऐसे करीब 61 संशोधन सामने आए हैं। नई तकनीक के आने के बाद जिन पुराने प्रावधानों में बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही है। उन विभागों सड़क सुरक्षा, आम जनता से जुड़ी आन लाइन सेवाएं, नई प्रक्रियाएं और कई अन्य अधिनियम शामिल है। इन अधिनियम के माध्यम से ही देश भर में परिवहन मंत्रालय से संबंधित कार्य प्रक्रिया और व्यवस्थाओं को संचालित किया जा रहा है। मंत्रालय के मुताबिक अब तक ऐसे 58 प्रावधानों को चिहिन्त किया जा चुका है। इन प्रावधानों के आधार पर नए प्रारूप तैयार किए जाएंगे। इसका मकसद आम जनता को एक ही जगह पर तमाम परिवहन सेवाएं उपलब्ध कराना होगा। अभी तक विभिन्न अधिनियम के माध्यम से इन सेवाओं को संचालित किया जा रहा है।

बदलाव

मंत्रालय भविष्य में जिन व्यवस्थाओं को लागू करने की तैयारी कर रहा है, उनमें यातायात नियमों के उल्लंघन पर नजर रखने के लिए अंक आधारित प्रणाली की शुरुआत करना, एक निश्चित भार तक के सभी माल वाहकों के लिए वाहन परमिट और इस पूरे तंत्र की निगरानी के लिए डिजिटल तंत्र स्थापित करना है। इसके अलावा देश में वाहनों के लिए एचएसआरपी की व्यवस्था सरकार पहले ही कर चुकी है। इसे मजबूत बनाने के लिए अधिनियम की धारा 192 के तहत प्रवर्तन कार्रवाई को और अधिक मजबूत किया जाए। वर्तमान में इसके लिए सख्त प्रावधान नहीं होने की वजह से वाहन चालक इसमें बदलाव कर रहे हैं, जिससे यह व्यवस्था कमजोर होती जा रही है।

मंत्रालय के मुताबिक दुनिया भर में सड़क सुरक्षा से संबंधित कानूनों का पाठ बच्चों को बचपन से ही पढ़ाया जाता है। इसी तर्ज पर केंद्र सरकार व शिक्षा मंत्रालय ने भी एक पहल शुरू की है। सड़क सुरक्षा संबंधित अधिनियम व प्रावधान को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ा गया है। परिवहन क्षेत्र से संबंधित जरूरी शिक्षण जानकारियों को कक्षा एक से पांच तक से पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस पहल की मदद से बच्चों को जरूरी जानकारियां बचपन से ही मिल पा रही हैं और भविष्य में इनकी मदद से सड़क अनुशासन व्यवस्था को लागू करने में बड़ी मदद मिलेगी।

केंद्र सरकार ने हाल ही में देश भर के मंत्रियों के साथ हुई बैठक में यह रणनीति तैयार की है। मंत्रालय की योजना है कि मंत्रालय से संबंधित 100 से अधिक आन लाइन परिवहन सेवाओं को एकीकृत किया जाए, जिसमें अंतर राज्यीय सेवाएं जैसी एनओसी और स्वामित्व हस्तांरण जैसी सेवाओं को इस दायरे में रखा गया है। इसके अतिरिक्त देश भर में वाहन चालकों का आंकड़ा एक साथ उपलब्ध कराने के लिए केंद्रीय डेटा साझाकरण ढांचा तैयार किया जाएगा।

केंद्र सरकार कर रही है मोटर वाहन अधिनियम में व्यापक संशोधन की तैयारी
पुराने प्रावधानों को हटाकर उसकी जगह सरकार नए प्रावधान लाने की कर रही तैयारी
जल्द राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली विशेष समिति के समक्ष पेश होगी मसविदा

दिमाग को दुरुस्त रखने में जैविक घड़ी की अहम भूमिका

जनसत्ता ब्यूरो

मानव शरीर में मौजूद 24 घंटे की जैविक घड़ी चुपचाप यह समन्वय करती है कि हम कब सोते हैं, जागते हैं, खाते हैं और आराम करते हैं। यह आंतरिक समय प्रबंधन प्रणाली अंगों और हार्मोन को तालमेल बैठाकर काम करने में मदद करती है। हालांकि, जब जैविक घड़ी अव्यवस्थित हो जाती है, तो इसके प्रभाव खराब गुणवत्ता वाली नींद से कहीं अधिक व्यापक हो सकते हैं और ढलती उम्र में दिमागी सेहत में गिरावट का कारण भी बन सकते हैं। साल 2025 में 79 वर्ष की औसत आयु वाले दो हजार से अधिक बुजुर्गों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जिन लोगों की जैविक घड़ी अधिक व्यवस्थित होती है, उनके डिमेंशिया की चपेट में आने का जोखिम लगभग 50 फीसदी तक घट जाता है। रोजाना कम से कम 30 मिनट का व्यायाम, खासकर खुले वातावरण में और दोपहर से पहले, जैविक घड़ी को व्यवस्थित रखने और डिमेंशिया का जोखिम घटाने में मददगार साबित हो सकता है। पार्क में चहलकदमी और ध्यान लगाना दिमागी सेहत को दुरुस्त रखने के सबसे आसान और कारगर तरीकों में शामिल है।

अध्ययन

क्यों अहम है जैविक घड़ी :

जैविक घड़ी सोने का समय, हार्मोन का उत्पादन, हृदयगति और शरीर का तापमान सहित कई अन्य दैनिक शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाती है। अव्यवस्थित जैविक घड़ी को अक्सर नींद की खराब गुणवत्ता से जोड़ा जाता है। विभिन्न अध्ययनों में खराब गुणवत्ता वाली नींद का डिमेंशिया और दिल की बीमारियों के बढ़ते जोखिम से सीधा संबंध पाया गया है। साल 2025 में किए गए अध्ययन में प्रतिभागियों की दिल की सेहत और रक्तचाप का भी विश्लेषण किया गया, जो अन्य कारकों के साथ-साथ नींद की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं।

जिन लोगों की जैविक घड़ी अधिक व्यवस्थित होती है, उनके डिमेंशिया की चपेट में आने का जोखिम लगभग 50 फीसदी तक घट जाता है। रोजाना 30 मिनट का सुबह व्यायाम और दोपहर से पहले, जैविक घड़ी को व्यवस्थित रखने और डिमेंशिया का जोखिम घटाने में मददगार साबित हो सकता है।

क्या है जैविक घड़ी : जैविक घड़ी (बायोलाजिकल क्लाक) शरीर की वह आंतरिक प्रणाली है जो नींद-जागने के चक्र, हार्मोन उत्पादन और चयापचय (मेटाबालिज्म) जैसी शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करती है, यह बाहरी रोशनी और अंधेरे के अनुसार लगभग 24 घंटे के चक्र में काम करती है, और इसे मस्तिष्क में मौजूद सुपरचियास्मैटिक न्यूक्लियस (एससीएन) द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

शारीरिक निष्क्रियता घातक : नए अध्ययन से पता चलता है कि नींद में खलल से उपजने वाली थकान से पैदा शारीरिक निष्क्रियता को दूर करना ढलती उम्र में दिमाग को दुरुस्त रखने का कारगर तरीका हो सकता है। दरअसल, शारीरिक सक्रियता बढ़ाने से न सिर्फ वजन नियंत्रित रखने और मोटापा घटाने में मदद मिलती है, बल्कि नींद की गुणवत्ता में भी सुधार होता है और मस्तिष्क की कोशिकाओं में क्षरण की गति भी धीमी हो जाती है। अव्यवस्थित जैविक घड़ी और डिमेंशिया के बीच संबंधों के पीछे प्रतिरक्षा तंत्र का भी हाथ हो सकता है। विभिन्न अध्ययनों में देखा गया है कि व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता उसकी नींद की गुणवत्ता और जैविक घड़ी

महोत्सव

कुरमाली आदिवासी समुदाय ने मंगलवार को रांची में टुसू त्योहार से पहले मोरहाबादी मैदान में टुसू महोत्सव मनाया।

कमजोर वर्गों के बच्चों का स्कूलों में प्रवेश राज्य का दायित्व

जनसत्ता ब्यूरो

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि संबंधित राज्य सरकारों व स्थानीय अधिकारियों की यह जिम्मेदारी है कि वे यह सुनिश्चित करें कि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के छात्रों को आस-पड़ोस के स्कूलों में प्रवेश से मना न किया जाए।

बच्चों के मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 की धारा 12(1)(ब) की व्याख्या करते हुए न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति एएस चंदुरकर की पीठ ने यह अहम व्यवस्था दी है। पीठ ने यह भी कहा है कि आस-पड़ोस के स्कूलों की भी यह समान ज़िम्मेदारी है कि वे आरटीई कानून और संविधान के अनुच्छेद 21ए (शिक्षा का अधिकार) के तहत अनिवार्य रूप से 25 फीसद छात्रों को प्रवेश दें। पीठ ने इस बाबत कई निर्देश जारी किए हैं व मामले को अनुपालन के लिए लंबित रखा है।

सुप्रीम कोर्ट

पीठ ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग को भी एक पक्ष बनाया है और उसे हलफनामा दाखिल करने को कहा है। धारा 12(1)(ब) के अनुसार, निजी गैर-सहायता प्राप्त संस्थान और विशेष श्रेणी के स्कूल कक्षा एक या प्री-प्राइमरी कक्षाओं में प्रवेश लेने वाले वंचित समूहों और कमज़ोर वर्गों के कम से कम 25 फीसद बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेंगे। ऐसे स्कूलों को सरकार द्वारा प्रति बच्चा खर्च के हिसाब से अनुदान मिलेगा।

पीठ ने कहा-अधिनियम की धारा 12 के तहत कक्षा की कुल संख्या के 25 फीसद तक समाज के कमज़ोर और वंचित वर्गों के बच्चों को प्रवेश देने की आस-पड़ोस के स्कूलों की ज़िम्मेदारी में समाज की सामाजिक संरचना को बदलने की असाधारण क्षमता है। ईमानदारी से लागू करने से यह सच में बदलाव ला सकता है। यह न केवल युवा भारत को शिक्षित करने की दिशा में एक कदम है, बल्कि स्थिति की समानता के प्रस्तावना उद्देश्य को सुरक्षित करने का एक ठोस उपाय भी है।

बिगड़ते पर्यावरण के बीच प्रवासी पक्षियों ने राह बदली, देरी से पहुंच रहे

सुनील दत्त पांडेय

बिगड़ते पर्यावरण के चलते प्रवासी पक्षियों ने अपनी राह बदल दी है। उन्होंने केवल राह ही नहीं बदली बल्कि अपने आगमन के समय और तिथि में भी परिवर्तन किया है। इस बार विदेश से प्रवासी पक्षी जलवायु परिवर्तन के कारण एक पखवाड़े की देरी से उत्तराखंड के विभिन्न स्थानों में पहुंचे। पक्षी विज्ञानी और पर्यावरणविद् प्रोफेसर दिनेश भट्ट इसकी वजह जलवायु परिवर्तन मान रहे है। प्रोफेसर भट्ट का कहना है कि रूस, मध्य एशिया, स्कैंडिनेवियाई और यूरेशियाई देशों से हजारों किलोमीटर का सफर तय करके प्रवासी पक्षी हर साल नवंबर-दिसंबर के महीने में हरिद्वार में नीलधारा, मिस्सरपुर आदि स्थानों पर गंगा के तट पर आते हैं।

प्रवासी पक्षियों में प्रवास एक प्राकृतिक पड़ाव है। बहुत ज्यादा ठंड के महीनों में प्रवासी पक्षी अपने देश में ठंड बढ़ने के कारण भारत आते हैं, परंतु इस बार लंबे मानसून के मौसम और जलवायु परिवर्तन के चलते एवं पिछले साल नवंबर-दिसंबर में बारिश-बर्फबारी न होने के कारण प्रवासी पक्षी रूस, मंगोलिया, साइबेरिया की तरफ से उत्तराखंड में 15 से 20 दिन की देरी के बाद पहुंचे। जाड़ों के समय में स्कैंडिनेवियाई और यूरोपीय देशों के ज्यादा हिस्सों में कई दिनों तक भारी बर्फबारी होती है। इसलिए ये पक्षी कई देशों और हिमालय को पार करके उत्तरी भारत के निचले इलाकों, खासकर उत्तराखंड में नवंबर के आखिरी और दिसंबर-जनवरी की शुरुआत में पहुंचते हैं।

जलवायु

युद्ध ने भी डाला असर

पक्षी विशेषज्ञ प्रोफेसर बी जोशी का कहना है कि रूस-यूक्रेन के बीच युद्ध ने भी साइबेरियाई क्षेत्र से प्रवासी पक्षियों की आवाजाही पर गहरा असर डाला है। चार वर्षों से लगातार बमबारी के कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ा है, जिससे जलवायु प्रवासी पक्षियों के लिए बहुत खतरनाक हो गई है। रूस-यूक्रेन की तरफ से अपने मूल निवास स्थान से हरिद्वार तक लंबी उड़ान भरने वाले पक्षियों की तादाद पिछले कई सालों के मुकाबले अत्यधिक कम रही है।

अंतरराष्ट्रीय पक्षी वैज्ञानिक और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के जंतु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग के पूर्व प्रोफेसर डा. दिनेश भट्ट बताते हैं कि रूस, मध्य एशिया स्कैंडिनेवियाई यूरोपीय देशों में पक्षियों को बर्फबारी के कारण खाना मिलने में दिक्कत होती है और इसलिए वे हजारों किलोमीटर की यात्रा करके कम ठंडे इलाकों में पहुंचते हैं। वसंत ऋतु की शुरुआत में तापमान बढ़ने पर प्रवासी पक्षी फरवरी के आखिर और मार्च की शुरुआत में अपने मूल स्थान पर लौट जाते हैं। भारत में आने वाले ज्यादातर प्रवासी पक्षी यूरोप और मध्य एशिया से आसमान में केंद्रीय हवाई मार्ग से आते हैं और उसी रास्ते से वापस जाते हैं। वह कभी अपना रास्ता नहीं भटकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में देखने में आया है कि साइबेरिया से क्रेन पक्षी उतराखंड में नहीं आ रहे हैं, जो चिंता का विषय है, क्योंकि पहले साइबेरियाई क्रेन पक्षियों के झुंड उत्तराखंड में गंगा नदी के किनारे काफी तादाद में आते थे। प्रोफेसर भट्ट इसका कारण जलवायु परिवर्तन मानते हैं। प्रोफेसर भट्ट का कहना है कि उन्होंने हरिद्वार की झिलमिल झील, देहरादून विकास नगर क्षेत्र में स्थित आसन बैराज और डाक पत्थर तथा ऋषिकेश में पशु लोक बैराज, पौड़ी गढ़वाल जिले में लैंसडाउन, कोटद्वार-कोलहू नदी का किनारा-राजाजी टाइगर रिजर्व, कार्बेट टाइगर रिजर्व, बद्रीनाथ मंदिर-शेष नेत्र झील-माणा पास और अन्य ऊंचे इलाकों में प्रवासी पक्षियों को लेकर विशेष अध्ययन किया है, यहां पर कई सालों से प्रवासी पक्षी लगातार आते हैं। पक्षी प्रेमी संदीप रावत ने बताया कि प्रवासी पक्षियों को इस महीने के आखिर में पौड़ी गढ़वाल जिले के कोटद्वार एवं लैंसडाउन में दो दिवसीय स्नेह पक्षी महोत्सव में भी देख सकते हैं यह पक्षी महोत्सव इस साल 31 जनवरी एवं 1 फरवरी तक आयोजित होगा।

सेना का एक अधिकारी भाजपा के इशारे पर पुनरीक्षण का काम कर रहा : ममता

कोलकाता, 13 जनवरी (भाषा)।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को आरोप लगाया कि फोर्ट विलियम स्थित भारतीय सेना के पूर्वी कमान के मुख्यालय में तैनात कमांडेंट रैंक के एक अधिकारी भाजपा के इशारे पर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) का काम कर रहे हैं। अधिकारी की पहचान के बारे में और अधिक जानकारी दिए बिना मुख्यमंत्री ने दावा किया कि सेना का यह अधिकारी राज्य में मतदाता सूचियों के विवादास्पद एसआइआर के मद्देनजर कमांड बेस का इस्तेमाल राजनीतिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए कर रहा है।

राज्य सचिवालय (नबान्न) में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बनर्जी ने कहा, मुझे जानकारी मिली है कि फोर्ट विलियम में कमांडेंट रैंक के अधिकारी भाजपा को समर्थन देने के लिए एसआइआर पर काम कर रहे हैं। वह वहां बैठकर भाजपा पार्टी कार्यालय का काम कर रहे हैं। ममता ने कहा, उनसे निवेदन है कि वे ऐसी गतिविधियों से बाज आएं। राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने मुख्यमंत्री के बयान की पुष्टि करने के बाद मामले में हस्तक्षेप करने की बात कही। बोस ने कहा, मुझे पहले स्वयं यह सत्यापित करने दीजिए कि उन्होंने क्या कहा। यदि इससे किसी संवैधानिक प्रावधान का उल्लंघन होता है, तो मैं निश्चित रूप से हस्तक्षेप करूंगा। राज्य के पहले से ही तनावपूर्ण राजनीतिक माहौल में बनर्जी की इस टिप्पणी पर सभी दलों से तीखी राजनीतिक प्रतिक्रियाएं आई हैं। भाजपा की बंगाल इकाई के अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने बनर्जी की टिप्पणी पर तंज करते हुए कहा, वह पश्चिम बंगाल को भारत का एक राज्य नहीं मानतीं, वह बंगाल को एक संप्रभु राष्ट्र और खुद को उसकी राष्ट्रपति समझती हैं। बनर्जी के आरोप को मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के राज्य सचिव मोहम्मद सलीम ने 'गंभीर मुद्दा' बताया।

मुख्यमंत्री ने दावा किया कि सेना का यह अधिकारी राज्य में एसआइआर के मद्देनजर कमांड बेस का इस्तेमाल राजनीतिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए कर रहा है।

राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने मुख्यमंत्री के बयान की पुष्टि करने के बाद मामले में हस्तक्षेप करने की बात कही।

निर्वाचन आयोग ने एकतरफा तरीके से 54 लाख नाम हटाए : ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि राज्य में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के दौरान 54 लाख नाम एकतरफा तरीके से और निर्वाचन पंजीकरण अधिकारियों (ईआरओ) की शक्तियों का दुरुपयोग करके हटाए गए। ममता ने दावा किया कि जिन मतदाताओं के नाम काटे गए, उनमें से ज्यादातर वास्तविक मतदाता थे, जिन्हें अपना पक्ष रखने का मौका नहीं दिया गया।

सरकार ने मनरेगा पर बुलडोजर चलाया, बहाली के लिए संघर्ष जारी : कांग्रेस

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 जनवरी।

कांग्रेस ने मंगलवार को केंद्र सरकार पर मनरेगा योजना पर बुलडोजर चलाने का आरोप लगाया और लोगों से अपने 'मनरेगा बचाओ संग्राम' में शामिल होने का आग्रह किया। कांग्रेस ने 'मनरेगा बचाओ संग्राम' को काम, मजदूरी और जवाबदेही के संवैधानिक अधिकारों की बहाली के लिए एक राष्ट्रव्यापी संघर्ष करार दिया।

कांग्रेस महासचिव और संचार प्रभारी जयराम रमेश ने कहा कि 'मनरेगा बचाओ संग्राम' देशभर की 25 लाख ग्राम पंचायतों और करोड़ों लोगों तक पहुंचेगा। इसके अलावा उन्होंने 'काम मांगो अभियान' पर निर्देश और मनरेगा पर कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी का एक वीडियो बयान साझा किया है।

उन्होंने हिंदी में 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'सरकार ने मनरेगा योजना को कुचल दिया है, जो भारत में करोड़ों लोगों के लिए जीवन रेखा बन चुकी है। यह राष्ट्रव्यापी संघर्ष इसी के खिलाफ है, काम, मजदूरी और जवाबदेही के संवैधानिक अधिकारों की बहाली के लिए है।' उन्होंने लोगों से इस अभियान में शामिल होने का आग्रह किया। रमेश ने पोस्ट में एक लिंक साझा किया जिसके माध्यम से लोग 'मनरेगा बचाओ संग्राम' में शामिल हो सकते हैं। अभियान में शामिल होने वाले लोग पोर्टल पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को सौंपी जाने वाली एक याचिका पर हस्ताक्षर भी कर सकते हैं। याचिका में लिखा है, 'हम मनरेगा में हाल ही में किए गए उन बदलावों के खिलाफ कड़ा विरोध दर्ज कराते हैं, जिनसे गारंटीशुदा रोजगार और ग्रामीण सशक्तीकरण के इसके मूल वादे को कमजोर किया जा रहा है।

कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी का एक वीडियो बयान साझा किया।

मनरेगा करोड़ों परिवारों का संवैधानिक श्रम अधिकार है और इसे कमजोर नहीं किया जाना चाहिए। हमारी मांगें हैं– काम की गारंटी बहाल की जाए, न्यूनतम मजदूरी 400 रुपए प्रतिदिन की जाए, पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाया जाए, हम मनरेगा में निहित भावना और उसके उद्देश्य की रक्षा के लिए आपके तत्काल हस्तक्षेप का आग्रह करते हैं।' वेणुगोपाल ने कहा कि इसके अलावा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र शीघ्र ही साझा किया जाएगा।

दौरा

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी मंगलवार को तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में स्थित एक स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह में शामिल हुए।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधिमंडल होसबाले से मिला

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 जनवरी।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) के एक प्रतिनिधिमंडल ने मंगलवार को दिल्ली के केशव कुंज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले सहित कुछ वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात की। यह मुलाकात राजधानी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेताओं के साथ बातचीत के एक दिन बाद हुई।

आरएसएस के वरिष्ठ पदाधिकारी ने कहा कि यह एक शिष्टाचार भेंट थी। अनुरोध चीन की तरफ से आया था और हमने इसे मान लिया। आरएसएस मुख्यालय में हुई इस बैठक का कोई एजंडा नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि संगठन के प्रमुख मोहन भागवत मौजूद नहीं थे क्योंकि वे यात्रा कर रहे थे। यह बातचीत इसलिए अहम है क्योंकि हाल के वर्षों में आरएसएस और चीनी प्रतिनिधियों के बीच बहुत कम बातचीत हुई है। खास बात यह है कि पिछले वर्ष अगस्त में मोहन भागवत की व्याख्यान शृंखला के दौरान, संघ ने चीनी राजनयिकों को आमंत्रित नहीं किया था, जबकि कई दूसरे देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। उस समय यह फैसला आपरेशन सिंदूर से जुड़ा था, जिसके बाद न तो पाकिस्तान और न ही चीन को आमंत्रित किया गया था। इससे पहले सोमवार को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल भाजपा मुख्यालय आया था। इसका नेतृत्व पार्टी के विदेश विभाग की उपमंत्री सुन हैयान ने किया था। बैठक के दौरान भाजपा प्रतिनिधिमंडल की अगुआई राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह ने की और इसमें भाजपा और सीपीसी के बीच अंतर-दलीय संचार को बढ़ावा देने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की गई। सोमवार को भाजपा कार्यालय का दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल में भारत में चीन के राजदूत जू फीहोंग भी शामिल थे।

सूत्रों के मुताबिक 2014 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद दोनों पार्टियों के बीच यह शायद पहली ऐसी बातचीत है। पिछली बार दोनों पार्टियों के बीच ऐसी ही बातचीत साल 2009 में हुई थी, जब भाजपा की अगुआई उसके तत्कालीन अध्यक्ष नितिन गडकरी कर रहे थे।

कांग्रेस ने साधा निशाना

कांग्रेस ने केंद्र में सत्तारूढ़ दल पर चीन के प्रति अपनी नीति में पाखंड दिखाने का आरोप लगाया और पूछा कि क्या वह इस तरह के दौरों के दौरान बार-बार होने वाले चीनी घुसपैठ का मुद्दा उठाती है। पवन खेड़ा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी केंद्र सरकार से उसकी चीन नीति पर पूर्ण पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग करती है।

भाजपा का पलटवार

भाजपा ने मंगलवार को कहा कि उसने नई दिल्ली और बेजिंग के बीच संबंधों में सुधार के मद्देनजर एक चीनी प्रतिनिधिमंडल के साथ खुले तौर पर औपचारिक बैठक की। भाजपा ने आरोप भी लगाया कि राहुल गांधी ने 2018 में बेजिंग में सोनिया गांधी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की उपस्थिति में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ एक गुप्त एमओयू पर हस्ताक्षर किए थे।

चीन को चुनौती देने के लिए निर्माण क्षेत्र मजबूत करना होगा : राहुल गांधी

नई दिल्ली, 13 जनवरी (ब्यूरो)।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि भारत ने आईटी क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन कृत्रिम मेधा के कारण यह क्षेत्र आने वाले समय में चुनौतियों का सामना करेगा। ऐसे में भारत को निर्माण क्षेत्र को मजबूत करना होगा ताकि चीन के वर्चस्व को चुनौती दी जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि कारीगरों, किसानों, श्रमिकों और हाथ से काम करने वाले लोगों के प्रति सम्मान की संस्कृति विकसित करना जरूरी है। राहुल गांधी मंगलवार को तमिलनाडु के गुडलूर स्थित सेंट थामस इंग्लिश हाई स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह में शामिल हुए। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा अत्यधिक महंगी नहीं होनी चाहिए।

नितिन नबीन अगले सप्ताह अध्यक्ष पद के लिए कर सकते हैं नामांकन

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 13 जनवरी।

भारतीय जनत पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन के अगले सप्ताह पार्टी अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन दाखिल करने की संभावना है। बिहार के पांच बार के विधायक को पिछले साल 14 दिसंबर को भाजपा का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था, जो सत्तारूढ़ दल में पीढ़ीगत बदलाव का संकेत है। उनके निर्विरोध चुने जाने की संभावना है क्योंकि पार्टी के किसी अन्य नेता की दावेदारी की संभावना नहीं के बराबर है।

भाजपा के एक सूत्र ने बताया, 'चुनाव के लिए नामांकन 19 जनवरी को दाखिल किया जाएगा।' सूत्रों के मुताबिक, यदि जरूरत पड़ी तो चुनाव यहां पार्टी मुख्यालय में कराया जाएगा। पूर्व में, भाजपा के मौजूदा अध्यक्ष जेपी नड्डा को भी जून 2019 में पार्टी का राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था और फिर 20 जनवरी 2020 को निर्विरोध चुने जाने के बाद उन्होंने अमित शाह की जगह ली थी।

भाजपा के सूत्रों के मुताबिक, उनका निर्विरोध चुने जाने की संभावना है क्योंकि पार्टी के किसी अन्य नेता की दावेदारी की संभावना नहीं के बराबर है।

नितिन नबीन (45) भाजपा के पूर्व विधायक नबीन किशोर प्रसाद सिन्हा के बेटे हैं। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से भी जुड़े रहे हैं। नबीन बिहार में बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और बिहार सरकार में दो बार मंत्री रहे हैं।

हिमाचल के शासक बनने की कोशिश न करें बाहरी अधिकारी : विक्रमादित्य

शिमला, 13 जनवरी (ब्यूरो)।

हिमाचल प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह की एक टिप्पणी को लेकर राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में माहौल गरमा गया है। विक्रमादित्य ने सोशल मीडिया मंच पर एक पोस्ट कर कहा, हम उपमुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश के मंडी के अभिभाषण से सहमत हैं।

कुछ यूपी-बिहार के आला आइएएस-आइपीएस अधिकारी हिमाचल में हिमाचलियत की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इन अफसरों को हिमाचल से कोई ज्यादा सरोकार नहीं है। समय रहते हुए उनसे निपटने की आवश्यकता है, नहीं तो हिमाचल के हित निपट जाएंगे।सिंह ने कहा, हम बाहर के राज्य के अधिकारियों का पूर्णतः सम्मान करते हैं, लेकिन उन्हें हिमाचली अधिकारियों से सीख लेने की आवश्यकता है।

विक्रमादित्य सिंह ने कहा, बाहर के अधिकारियों को हिमाचल के अधिकारियों से सीख लेने की जरूरत है।

हिमाचल के हित के साथ समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जब तक हिमाचल में हैं, हिमाचल के लोगों की सेवा करें, शासक बनने की गलती न करें। इस टिप्पणी से उपजे विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए विक्रमादित्य सिंह कहा कि वे अपनी फेसबुक पोस्ट में कही गई बातों पर कायम हैं। ये व्यक्तिगत टिप्पणियां नहीं हैं। वे हमारे लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा की संरचना से अच्छी तरह वाकिफ हूं। हालांकि, हिमाचल प्रदेश में तैनात अधिकारी जन प्रतिनिधियों (विधायकों और सांसदों) को नजरअंदाज नहीं कर सकते।

पेज 1 का बाकी

सरकार का फैसला, दस मिनट में सामान पहुंचाने के दावों पर रोक

आय की ओर ध्यान आकर्षित किया।इस मुद्दे पर केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने ब्लिंकिट, जेप्टो, स्विगी और जोमैटो के अधिकारियों से बातचीत की थी। बैठक में वितरणकर्ताओं की सुरक्षा को प्राथमिकता देने और समय सीमा हटाने की बात कही गई थी। सरकार ने कंपनियों को स्पष्ट संदेश दिया कि तेज वितरण के दबाव में वितरणकर्ताओं की जान जोखिम में नहीं पड़नी चाहिए। इसके बाद सभी कंपनियों ने आश्वासन दिया कि वे अपने विज्ञापनों और सोशल मीडिया पोस्ट से वितरण की समय सीमा हटाएंगी।

हाल के संसद सत्र में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने भारत के गिग वर्कर्स की परेशानियों के बारे में आवाज उठाई थी। 'गिग वर्कर्स एसोसिएशन' ने मंगलवार को त्वरित व्यापार मंच द्वारा दस मिनट में सामान देने के वादे को वापस लेने के फैसले का स्वागत किया, और कहा कि यह कदम इस बात को मानता है कि वितरण की बहुत कम समय सीमा कर्मियों पर असुरक्षित दबाव डालती है। एसोसिएशन ने कहा कि दस मिनट की डिलीवरी माडल ने कर्मियों को जल्दबाजी करने, सड़क पर जोखिम लेने और एप्स पर इंसेंटिव, रेटिंग और आर्डर वितरण से लगातार दबाव के कारण लंबे समय तक काम करने के लिए मजबूर किया।गौरतलब है कि हैदराबाद में जान गंवाने वाले शख्स को जेप्टो ने अपना कर्मचारी नहीं बताया था। पहले मीडिया में ऐसी खबरें आई थीं कि वह शख्स जेप्टो के काम करता था। यह हादसा शहर के मेहदीपट्टनम पुलिस इलाके में हुआ। अभिषेक नाम के एक वितरणकर्ता की दोपहिया गाड़ी एक बस से टकरा गई, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने शुरू में बताया था कि मृतक जेप्टो के लिए वितरण का काम करता था। इसके बाद गिग वर्कर्स यूनियन ने मृतक के परिवार के लिए न्याय और मुआवजे की मांग की थी। ब्लिंकिट ने वितरण कर्मियों के कल्याण से जुड़ी बढ़ती चिंताओं के बीच सभी मंच से अपना ह्य10 मिनट मेंह्न वितरण का दावा हटा लिया है। कंपनी ने अपनी टैग-लाइन को ह्य10 मिनट में 10,000 से अधिक उत्पाद पहुंचेंगे से बदलकर अब 30,000 से अधिक उत्पाद आपके दरवाजे पर पहुंचेंगे कर दिया है। स्विगी और जेप्टो जैसे अन्य मंच भी इस कदम का अनुसरण कर सकते हैं। यह बदलाव केंद्रीय श्रम मंत्रालय के हस्तक्षेप के बाद देखा जा रहा है।

राज्यों को भारी मुआवजा देना होगा : सुप्रीम कोर्ट

लिए भी तर्क दे पाता। मुझे 2011 में जज नियुक्त किया गया था। लेकिन मैंने इंसानों के लिए इतने भावुक तर्क कभी नहीं सुने। उन्होंने पूछा कि अगर कोई आवारा कुत्ता किसी पर हमला कर दे तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी? वकील ने जवाब दिया कि स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए जिम्मेदारी तय की जा सकती है।

न्यायमूर्ति संदीप मेहता ने कहा कि आवारा कुत्ता किसी के कब्जे में नहीं होना चाहिए। अगर आप पालतू जानवर रखना चाहते हैं, तो लाइसेंस लें।न्यायमूर्ति विक्रम नाथ ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा-अगर किसी बच्चे या बुजुर्ग को कुत्ते काटते हैं या उनकी मौत होती है, तो राज्य से भारी मुआवजा वसूला जाएगा। साथ ही उन लोगों से भी जवाबदेही तय की जाएगी जो कहते हैं कि हम कुत्तों को खाना खिला रहे हैं। अगर आपको इतना ही प्रेम है तो उन्हें अपने घर ले जाइए। सड़कों पर घूमकर लोगों को काटने और डराने का अधिकार किसी को नहीं दिया जा सकता।कुत्ता काटने से पीड़ित कामना पांडे ने बताया कि उन्हें 20 साल पहले एक कुत्ते ने बुरी तरह काटा था। लेकिन बाद में उन्होंने उसी कुत्ते को गोद ले लिया और उसके बाद उसने किसी को नहीं काटा। उन्होंने कहा कि डर और हिंसा कुत्तों को आक्रामक बनाती है और समाधान मानवीय और समग्र होना चाहिए। मामले की अगली सुनवाई 20 जनवरी को दोपहर 2 बजे होगी।

दिल्ली में पंद्रह साल की सबसे सर्द सुबह, पारा गोता लगाकर तीन डिग्री पर

बुधवार को दिल्ली के लिए शीतलहर व बहुत घने कोहरे की 'नारंगी चेतावनी' जारी की है। पंजाब और हरियाणा में मंगलवार को भीषण ठंड रही। सुबह घनी धुंध के कारण वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

पंजाब और हरियाणा की संयुक्त राजधानी चंडीगढ़ में 11 जनवरी, 2017 को न्यूनतम तापमान 2.4 डिग्री सेल्सियस और 24 जनवरी, 2016 को न्यूनतम तापमान 2.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। पंजाब के कई इलाकों में कड़ाके की ठंड पड़ी। बठिंडा में न्यूनतम तापमान 1.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जबकि लुधियाना, पटियाला और अमृतसर में न्यूनतम तापमान क्रमशः 2.6 डिग्री, तीन डिग्री और 4.1 डिग्री सेल्सियस रहा। इस ठंड को देखते हुए पंजाब सरकार ने भी लोगों के लिए एहतियात बरतने की अपील जारी की है।

हिमाचल प्रदेश के मैदानी इलाकों में मंगलवार को शीतलहर जारी रही। कश्मीर में 16 जनवरी से पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव होने का अनुमान है, जिससे घाटी में हल्के से मध्यम हिमपात का नया दौर शुरू होने की उम्मीद बढ़ गई है। मौसम विभाग के अधिकारियों के अनुसार, शुक्रवार को क्षेत्र में मौसम प्रणाली को प्रभावित करने वाला एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ आने का अनुमान है और इसके तीन दिन बाद एक अधिक मजबूत तंत्र का प्रभाव देखने को मिल सकता है। इस सर्दी में ऊंचे इलाकों में हिमपात हुआ है, लेकिन मैदानी इलाकों में लंबे समय से सूखा जारी है। वर्षा की कमी के कारण हवा में प्रदूषकों की मात्रा बढ़ गई है, जिसके कारण श्रीनगर में वायु गुणवत्ता सूचकांक 180 के आसपास बना हुआ है।

पाक के खिलाफ जमीनी सैन्य अभियान को तैयार : सेना प्रमुख

100 से 150 आतंकवादी मौजूद हैं। सेना प्रमुख ने यह भी स्पष्ट किया कि शक्सगाम घाटी भारत की है। पाकिस्तान ने 1963 में अवैध रूप से कब्जा किए गए शक्सगाम घाटी के 5,180 वर्ग किलोमीटर भारतीय क्षेत्र को चीन को सौंप दिया था। भारत पाकिस्तान और चीन के बीच हुए 1963 के समझौते को अवैध मानता है। उन्होंने यह भी कहा कि जम्मू कश्मीर में स्थिति संवेदनशील बनी हुई है लेकिन पूरी तरह से नियंत्रण में है। जनरल द्विवेदी ने कहा कि आपरेशन सिंदूर के तहत आतंकवाद के खिलाफ सीमा पार भारत की कड़ी प्रतिक्रिया ने रणनीतिक स्पष्टता प्रदान की और उनकी सेना ने पाकिस्तान के साथ शत्रुता के बाद जमीनी हमलों की तैयारियों के तहत अग्रिम लामबंदी की थी। सेना दिवस से पहले संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि एलएसी से सैनिकों को मई के अंत तक वापस बुला लिया गया था, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि हमारी आंखें और कान खुले हैं और दुश्मन के किसी भी दुस्साहस से प्रभावी ढंग से निपटा जाएगा। सेना प्रमुख ने 'आपरेशन सिंदूर' के दौरान दो अहम मोड़ का भी जिक्र किया – उनमें से एक 7 मई की सुबह आतंकी ठिकानों पर 22 मिनट का हमला था, जबकि दूसरा 10 मई को भारतीय सेना को दिए गए कुछ निर्देश थे कि यदि संघर्ष बढ़ता है तो क्या करना है।

रद्द हो : न्यायमूर्ति नागरत्ना, वैध : न्यायमूर्ति विश्वनाथन

विचार किया जा सके।' एनजीओ की ओर से पेश हुए अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने दलील दी कि यह प्रावधान भ्रष्टाचार विरोधी कानून को कमजोर करता है, क्योंकि सरकार से अक्सर मंजूरी नहीं मिलती, जबकि वही इस कानून के तहत 'सक्षम प्राधिकारी' है।

केंद्र सरकार की ओर से सालिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत में पक्ष रखा।पीठ ने इस मामले की सुनवाई 6 अगस्त, 2025 को पूरी कर अपना फैसला सुरक्षित रखा था। जो करीब छह माह बाद मंगलवार को सुनाया। धारा 17ए में कहा गया है कि कोई भी पुलिस अधिकारी केंद्र या राज्य सरकार के सक्षम अधिकारी की पहले से मंजूरी के बिना सरकारी काम करते समय लिए गए किसी भी फैसले या सिफारिश के संबंध में किसी भी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ कोई जांच, पूछताछ या तहकीकात शुरू नहीं कर सकता है। न्यायमूर्ति विश्वनाथन ने कहा कि इस प्रावधान को खत्म करने का मतलब बच्चे को नहाने के पानी के साथ बाहर फेंक देना होगा और जब तक ईमानदार लोक सेवकों को फालतू की जांच से नहीं बचाया जाता, तब तक नीतिगत लकवा आ जाएगा।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लोक सेवक को दुर्भावनापूर्ण मामलों से बचाने की जरूरत और सार्वजनिक कार्यालयों में ईमानदारी बनाए रखने के महत्त्व के बीच एक अच्छा संतुलन बनाए रखना होगा। दुरुपयोग की संभावना धारा 17ए को खत्म करने का कोई आधार नहीं है।

बंगाल : कोयला खदान में सुरंग धंसने से तीन की मौत, कई दबे

नई दिल्ली, 13 जनवरी (ब्यूरो)।

पश्चिम बंगाल में बर्धमान जिले के आसनसोल में कोयला खदान में अवैध खनन के दौरान सुरंग धंसने से बड़ा हादसा हुआ। कुल्टी थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़ीरा इलाके में बीसीसीएल की 'ओपन कास्ट' कोयला खदान में हुए इस हादसे में अब तक तीन लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हैं। आरोप है कि अवैध रूप से कोयला निकालने के दौरान खदान के भीतर बनी सुरंग अचानक धंस गई, जिसमें कई मजदूर दब गए।

सूत्रों के मुताबिक हादसे के वक्त कम से कम 5 से 6 लोग खदान के अंदर मौजूद थे। घायलों को आसनसोल जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मंगलवार को मिली जानकारी के मुताबिक, मृतकों में एक महिला भी शामिल है। मृतकों की पहचान गीता बाउरी, सुरेश बाउरी और टिपु बाउरी के रूप में हुई है। वहीं घायल मजदूरों के नाम सुभाष मल्लिक और गोविंद बाउरी बताए जा रहे हैं। प्रशासन को आशंका है कि अब भी एक से दो लोग मलबे अब भी फंसे हो सकते हैं। उन्हें निकालने के लिए 'पोकलेन' मशीनों की मदद से तेजी से राहत और बचाव कार्य चलाया जा रहा है। मौके पर भारी संख्या में पुलिस बल और सीआइएसएफ की तैनाती की गई है।

महाराष्ट्र : 29 नगर निकायों के लिए कल होगा मतदान

मुंबई, 13 जनवरी (भाषा)।

महाराष्ट्र में 29 नगर निकाय चुनावों के लिए मंगलवार को प्रचार समाप्त हो गया। सभी की निगाहें मुंबई में बीएमसी के लिए होने वाले बड़े मुकाबले पर टिकी हैं, जहां भाजपा के नेतृत्व वाला महायुति ठाकरे बंधुओं की चुनौती का सामना कर रहा है। नगर निकायों के 893 वार्ड में फैली 2,869 सीटों के लिए मतदान 15 जनवरी को सुबह 7.30 बजे शुरू होगा और शाम 5.30 बजे संपन्न होगा। कुल 3.48 करोड़ मतदाता 15,931 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला करेंगे। मतगणना 16 जनवरी को होगी।

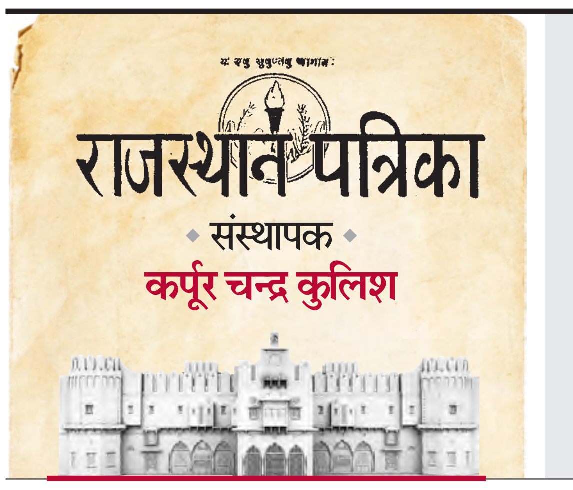

इसरो के सम्मुख चुनौतियों के बीच उम्मीद की किरण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के 'वर्कहॉर्स' ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यानी पीएसएलवी की हालिया विफलता चिंताजनक है। चिंता इसलिए जरूरी है क्योंकि पिछले नौ महीने में इसरो के दो मिशन विफल हो गए। वे भी ऐसी संस्था के, जिसने दुनियाभर में अपनी सटीकता व कम लागत के लिए लोहा मनवाया है। इतना अवश्य है कि इसे सिर्फ विफलता के रूप में देखना इसरो की 32 साल की गौरवशाली यात्रा के साथ अन्याय होगा, जिसमें सफलताओं का शानदार रिकॉर्ड भी है।

इस मिशन की विफलता केवल एक रॉकेट का गिरना ही नहीं है। पहली बार अंतरिक्ष एजेंसी किसी विदेशी ग्राहक के लक्ष्य को पूरा करने में विफल रही है। यह पहली बार था कि निजी स्टार्टअप कंपनियों द्वारा निर्मित पेलोड ले जाने वाला कोई वाणिज्यिक उपग्रह मिशन विफल हुआ। यह उपग्रह सामरिक दृष्टि से भी अहम रहने वाला था। एक तरह से सीमा सुरक्षा के लिए हमारी 'आंख' तो बनता ही, मिट्टी के प्रकार बताकर कृषि क्षेत्र में भी क्रांति लाने का काम इसके जरिए होने वाला था। हमारी सैन्य निगरानी क्षमता बढ़ाने के लक्ष्य पूरे करने में अब विलंब की आंशका भी बनी है। विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण न हो पाने से इसरो के वैश्विक कमर्शियल मार्केट पर भी असर पड़ सकता है। अंतरिक्ष में अनुसंधान प्रक्रिया का दौर एक सतत प्रक्रिया है। ऐसे में कभी सफलता और कभी विफलता का सामना होना स्वाभाविक है। इसमें दो राय नहीं कि हमारे वैज्ञानिक लगातार मेहनत के जरिए बेहतर नतीजे लाने में कामयाब होते रहे हैं। इसीलिए भारत, अंतरिक्ष के क्षेत्र में बड़ी तेजी के साथ अपनी ताकत बढ़ा रहा है और यही वजह है कि इसरो की वैश्विक विश्वसनीयता भी बढ़ी है। किसी भी देश के लिए अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में मिलने वाली उपलब्धियां वैश्विक प्रतिस्पर्धा में तो आगे लाती ही है, राष्ट्र गौरव का भाव भी बनता है। हमारे वैज्ञानिक इस दिशा में सतत प्रयास कर भी रहे हैं। पीएसएलवी सी-62 की विफलता के बीच गंभीर तथ्य यह भी है कि अब हमारी अमरीकी नौवहन प्रणाली पर निर्भरता बढ़ेगी। पीएसएलवी को फिर से उड़ान भरने में कम से कम छह माह का समय लगने वाला है। जाहिर है इससे हमारे कई दूसरे मिशनों की गति भी धीमी हो सकती है।

बहरहाल चंद्रयान-1, मंगलयान और आदित्य जैसी सफलताएं देने वाली संस्था से देश की उम्मीदें बहुत ऊंची हैं। इतिहास गवाह है कि इसरो ने पहले भी कई बार विफलताओं को चुनौती के रूप में लिया है और अपनी विफलता के बाद दोगुनी ताकत के साथ वापसी की है। यह चुनौती अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए नए सुधार का अवसर है। इसरो को अपनी तकनीकी प्रक्रियाओं की गहराई से समीक्षा करते रहना चाहिए। इससे ही 'वर्कहॉर्स' का 'भरोसेमंद' होने का तमगा और मजबूत होगा। उम्मीद है कि इसरो इस झटके से उबरकर अंतरिक्ष में तिरंगे को शान से फहराने की तैयारियों में जुटेगा।

उत्कर्ष का पर्व : जीवन का प्रयोजन केवल उपभोग नहीं, दूसरों का हित साधते हुए आगे बढ़ना है

मकर संक्रांति: लोक चेतना के उत्तरायण का उत्सव

गिरीश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा
@patrika.com

यह पर्व केवल ऋतु-परिवर्तन का संकेत बार नहीं, बल्कि धर्म, कर्म, दान, तप, उत्तरायण और मोक्ष-चिंतन के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यह संक्रांति दूसरी संक्रांतियों से विशिष्ट है, क्योंकि यही वह क्षण है जहां से उत्तरायण का आरम्भ माना जाता है।

संक्रांति का अर्थ होता है संक्रमण और 'पर्व' (पोर!) जोड़ या संधि को कहते हैं। याद करें, अंगुली के भी पोर होते हैं और बांस के भी। पोर वह जगह है, जहां जोड़ होता है। मकर संक्रांति का अवसर प्रकृति की लय में एक विशेष किस्म के संयोजन के क्षण को रेखांकित करता है। भारत की सांस्कृतिक परंपरा में यह एक अत्यंत प्राचीन खगोलीय सौर पर्व है। इस दिन सूर्य लगभग 23.5 डिग्री दक्षिण से उत्तर की ओर गति करता है। चूंकि भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है इसलिए इस समय पृथ्वी सूर्य के दायीं तरफ रहती है। यह पर्व पौष के महीने में उस तिथि को मनाया जाता है जब सूर्य देव धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश कर उत्तरायण में अवस्थित होते हैं। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, परंतु कर्क एवं मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से विशेष फलदायी माना जाता है।

मान्यता यह भी है कि इस तिथि को सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। चूंकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, इसलिए यह तिथि 'मकर संक्रांति' के नाम से प्रसिद्ध हुई। संक्रांति के बाद से दिन भी बड़े होने लगते हैं। मकर संक्रांति के आगे के छह महीने बड़े शुभ और शादी ब्याह आदि मांगलिक कार्यों के लिए उत्तम माने जाते हैं। यह पर्व अक्सर 14 या 15 जनवरी को पड़ता है। इसके बाद सूर्य उत्तर दिशा की ओर अग्रसर होता है। इसीलिए इस पर्व को 'उत्तरायण' भी कहते है। वैज्ञानिक तौर पर देखें तो इसका मुख्य कारण पृथ्वी का निरंतर 6 महीनों की अवधि बीतने के बाद उत्तर से दक्षिण की ओर चलना है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह वह अवसर है जब कृषि-चक्र का नया चरण शुरू होता है। दिन-रात्रि संतुलन की ओर आगे बढ़ते हैं। शीत से ऊष्मा की ओर संक्रमण होता है। इसी अर्थ में इसे प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ मानव जीवन की लय का पर्व कहा जाता है। इस अवसर पर किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद देकर आशीर्वाद मांगते हैं। इसलिए फसलों एवं किसानों के त्योहार के रूप में प्रसिद्ध है। भारत में यह मुख्य रूप से 'दान का पर्व' है। कहते हैं इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर वापस मिलता है। शुद्ध घी एवं कम्बल के दान का विशेष महत्व है।

पद्मपुराण में इस दिन तिलदान, गजदान, तथा वस्त्रदान करने का विधान मिलता है। संक्रांति के दिन प्रायः नदियों के संगम-स्थल पर मेला लगता है। गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गई है। तीर्थराज प्रयागराज में त्रिवेणी संगम, जहां गंगा, यमुना व सरस्वती तीनों नदियों का प्रवाह है, हर वर्ष एक माह तक चलने वाला माघ मेला लगता है। इस मेले का पहला स्नान मकर संक्रांति को ही होता है। बंगाल में गंगासागर में प्रति वर्ष संक्रांति के दिन विशाल मेला लगता है। कड़ाके की ठंड में भी लोग दूर-दूर से चलकर गंगा-स्नान के लिए आते हैं और भक्ति भाव से स्नान करते हैं। उत्तर भारत में खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी-दान का विशेष महत्व है। इस पर्व को उत्तर भारत में 'मकर-संक्रांति', तमिलनाडु में 'पोंगल', असम में 'माघ बिहू', पंजाब में 'लोहड़ी', गुजरात में 'उत्तरायण' और महाराष्ट्र में 'तिलगुल' कहते हैं। कर्नाटक, केरल तथा आंध्र प्रदेश में 'संक्रांति' और उत्तर प्रदेश तथा बिहार में यह 'खिचड़ी' के नाम से प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएं अपनी पहली संक्रांति पर कपास, तेल, नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गुल नामक हलवे के बांटने की प्रथा भी है। बिहार में दिन में दही चूड़ा और रात को उड़द की दाल और चावल की खिचड़ी खाते हैं। इस दिन लाई के लड्डू भी बनाते हैं। तमिलनाडु में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं। पहले दिन भोगी-पोंगल, दूसरे दिन सूर्य-पोंगल, तीसरे दिन मट्टू-पोंगल अथवा केनू-पोंगल और चौथे दिन कन्या-पोंगल। पहले दिन कूड़ा करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है और तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। अगले दिन सूर्य देव को खीर का नैवेद्य चढ़ाया जाता है और उसका प्रसाद सभी ग्रहण करते हैं। राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएं अपनी सास को बायना देती हैं। साथ ही महिलाएं सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर उसे दान करती हैं। इस अवसर पर कई जगह पतंग उड़ाने की प्रथा है।

गौरतलब है कि यह पर्व केवल ऋतु-परिवर्तन का संकेत बार नहीं, बल्कि धर्म, कर्म, दान, तप, उत्तरायण और मोक्ष-चिंतन के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यह संक्रांति दूसरी संक्रांतियों से विशिष्ट है, क्योंकि यही वह क्षण है जहां से उत्तरायण का आरम्भ माना जाता है। सूर्य के उत्तरगमन और प्रकाश-वृद्धि की अवधारणा बड़ी पुरानी है। सूर्य को ऋत और धर्म का प्रतीक माना गया है। उपनिषदों में उत्तरायण को देवयान कहा गया है। अर्थात् उत्तरायण का पथ ज्ञान, प्रकाश और मोक्ष की दिशा है। इस तरह संक्रांति एक गहन आध्यात्मिक प्रतीक भी है। मकर संक्रांति संयम-पर्व, कृषि-पर्व, ज्ञान-पर्व और सामाजिक समरसता का पर्व भी कहा जाता है। यह पर्व भारतीय जीवन को प्रकृति, धर्म और अध्यात्म से जोड़ता है। यह सिर्फ पंचांग की तिथि ही नहीं, बल्कि मानव चेतना के उत्तरायण का उत्सव है। यह पर्व सिखाता है कि जीवन का प्रयोजन केवल उपभोग नहीं बल्कि त्याग करते हुए दूसरों का हित साधते हुए आगे बढ़ना है। वह यह संदेश भी देता है कि अपने सीमित स्व के घरौंदे को लांघकर दूसरों के कल्याण में ही वास्तविक विस्तार देकर हम उत्कर्ष कर सकते हैं।

प्रसंगवश

कानून की सख्ती ही बालविवाह की रोकथाम के लिए काफी नहीं

यह समझना होगा कि कम उम्र में विवाह कई जोखिमों से जुड़ा है

इसमें दो राय नहीं है कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ राजस्थान में बाल विवाह के मामलों में कमी आई है, लेकिन कानून-कायदों की सख्ती के बावजूद बाल विवाह को पूरी तरह से रोकना संभव नहीं हो सका है। सरकारी आंकड़े खुद इसकी गवाही देते हैं जिनमें कहा गया है कि वर्ष 2025 में सिर्फ नौ माह में ही समूचे प्रदेश में 866 बाल विवाह रोके गए। एक तरह से इन आंकड़ों को सरकारी मुस्तैदी से भी जोड़कर देखा जा सकता है, जिसके तहत बाल विवाह की रोकथाम के प्रयास किए जाते हैं।

चिंता की बात यही है कि आज भी अभिभावकों को पूरी तरह से इस बात के लिए समझाने के प्रयास नहीं हो पाए हैं कि बाल विवाह ऐसा सामाजिक दंश है जिसके नतीजे भयावह होते हैं। कम उम्र में बंधे रिश्ते न तो मजबूत जीवनसाथी की गारंटी देते हैं और न ही सुरक्षित भविष्य की। नतीजतन किशोरावस्था में ही जिम्मेदारियों का बोझ तो पड़ता ही है शिक्षा भी अधूरी रह जाती है। युवावस्था में पहुंचते-पहुंचते वैवाहिक संबंधों की विफलता का दुष्चक्र शुरू होता है सो अलग। जो बाल विवाह रोके गए उनमें बड़ी संख्या लड़कियों की थी, जिन्हें शादी की निर्धारित उम्र से पहले ही वैवाहिक बंधन में जकड़ा जा रहा था।

एक पक्ष यह भी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में परिपाटी का निर्वहन, गरीबी और बच्चियों की सुरक्षा की चिंता एवं सामाजिक दबाव भी बाल विवाह के लिए जिम्मेदार हैं। इसमें सबसे ज्यादा नुकसान बच्चियों को होता है। कम उम्र में गर्भधारण से मातृ एवं शिशु मृत्युदर बढ़ती है, कुपोषण और एनीमिया आम हो जाते हैं। लड़के भी इससे अछूते नहीं रहते, अधूरी शिक्षा और रोजगार की कमी पारिवारिक तनाव को जन्म देती है। इस अभिशाप पर अंकुश के लिए सबसे पहले मानसिकता बदलने की जरूरत है। माता-पिता को यह समझना होगा कि जल्दी शादी सुरक्षा नहीं, बल्कि जोखिम है। पंचायत, धार्मिक संस्थाएं और सामाजिक संगठन मिलकर बाल विवाह के खिलाफ खुली चर्चा करें, सफल उदाहरण सामने लाएं और शिक्षा को प्राथमिकता दें।

- महेश कुमार जैन
mahesh.jain1@in.patrika.com

बुक इनसाइट

कॉल मी इश्माएल

ब्रिटिश-चीनी लेखिका शियाओलू गुओ का उपन्यास 'कॉल मी इश्माएल' एक अलग तरह का साहित्यिक अनुभव देता है। यह किताब अपनी कहानी से ज्यादा लेखन-शैली और दृष्टिकोण के कारण चर्चा में है। लेखिका ने समुद्री जीवन और यात्राओं को बहुत सधे हुए, साफ और संवेदनशील शब्दों में प्रस्तुत किया है। भाषा बोझिल नहीं है, लेकिन उसमें गहराई है, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करती है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पुरानी समुद्री कथाओं को नए नजरिए से देखता है। आम तौर पर ऐसे उपन्यासों में पुरुष पात्रों की दुनिया दिखाई जाती है, लेकिन यहां लेखिका ने उस ढांचे को तोड़ा है। मुख्य भूमिका में एक अनाथ युवती है, जो समाज की बंदिशों से निकलने के लिए पुरुष का वेश धारण कर समुद्र की ओर निकल पड़ती है। लेखन में आजादी, पहचान और बराबरी जैसे विषय चुपचाप उभरते हैं। शियाओलू गुओ बिना उपदेश दिए, बहुत सहज तरीके से ये बातें कह जाती हैं। यह किताब साधारण लेकिन असरदार है। समुद्र, जहाज और यात्राओं का वर्णन बहुत वास्तविक लगता है।

फैक्ट फ्रंट

सी एनीमोन : फूल जैसा जीव

सी एनीमोन देखने में रंग-बिरंगे फूलों जैसा लगता है, लेकिन वास्तव में यह एक समुद्री जीव है। इसे हिंदी में समुद्री एनीमोन कहा जा सकता है। यह समुद्र की चट्टानों या कठोर सतहों से चिपककर रहता है और अपनी जगह से बहुत कम ही हिलता है। इसकी बनावट इतनी सुंदर और कोमल होती है कि पहली नजर में कोई भी इसे पौधा समझ सकता है, जबकि यह एक जीवित प्राणी है। सी एनीमोन का शरीर नलीनुमा होता है और इसके ऊपरी

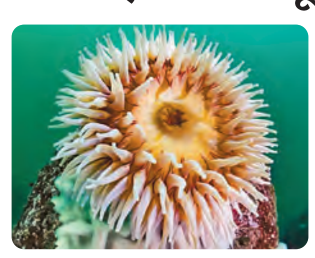

हिस्से में कई पतले, लहराते हुए स्पर्शक यानी टेंटेकल्स होते हैं। इन्हीं स्पर्शकों के बीच इसका मुंह होता है। ये स्पर्शक केवल सुंदरता के लिए नहीं होते, बल्कि भोजन पकड़ने और सुरक्षा के काम भी आते हैं। इनमें सूक्ष्म विषैली कोशिकाएं होती हैं, जिनकी मदद से यह छोटे मछलियों, झींगों और अन्य समुद्री जीवों को पकड़ लेता है। पकड़े गए भोजन को यह सीधे अपने मुंह में पहुंचा देता है। सी एनीमोन दुनिया के लगभग सभी महासागरों में पाया जाता है, चाहे वह उथला समुद्र हो या गहराई वाला क्षेत्र। इस समुद्री जीव का समुद्री जीवन में विशेष महत्व है।

जागरूकता पतंगबाजी को सुरक्षित बनाएं

पतंग की डोर नहीं, मौत की धार है चाइनीज मांझा

योगेश कुमार गोयल
स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार
@patrika.com

चाइनीज मांझा आज केवल पतंगबाजी का एक साधन नहीं, बल्कि एक ऐसा खामोश हत्यारा बन चुका है, जो हवा में अदृश्य रहते हुए सड़कों पर चलती जिंदगियों की गर्दन पर ब्लेड की तरह वार कर रहा है। इंदौर में 11 जनवरी को हुए हादसे में बाइक सवार 45 वर्षीय रघुवीर धाकड़ का गला चाइनीज मांझे से कट गया और इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। उसी दिन नीट की तैयारी कर रहे नरेंद्र जामोद भी इसी मांझे की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गए। ये दोनों घटनाएं कोई अपवाद नहीं हैं बल्कि उस लंबी शृंखला की ताजा कड़ियां हैं, जिसमें पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न हिस्सों में राह चलते लोग और बेजुबान पक्षी चाइनीज मांझे का शिकार बनते आ रहे हैं। इन घटनाओं ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि जब पिछले करीब पांच वर्षों से चाइनीज मांझे पर देशभर में प्रतिबंध है तो यह मौत का धागा खुलेआम बाजारों और गलियों में कैसे बिक रहा है।

बड़ा सवाल यह है कि जब चाइनीज मांझा प्रतिबंधित है तो यह बन कहां रहा है, इसकी सप्लाई चेन कैसी है और तस्करी के रास्ते कौनसे हैं? स्थानीय स्तर पर की जाने वाली कार्रवाईयों से छोटे दुकानदार तो पकड़े जाते हैं लेकिन इस अवैध कारोबार की जड़ें जस की तस बनी रहती हैं। कई राज्यों में इस मांझे के उपयोग पर सख्त सजा का प्रावधान है, फिर भी यह धड़ल्ले से बिक और इस्तेमाल हो रहा है। राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश सहित लगभग हर राज्य से ऐसे मामले सामने आते रहे हैं, जहां राहगीर घायल हुए या अपनी जान गंवा बैठे। कुछ दिनों तक हंगामा होता है, पुलिस अभियान चलाती है लेकिन जैसे ही मामला ठंडा पड़ता है, यह कारोबार फिर से पनपने लगता है। चाइनीज मांझे पर प्रतिबंध केवल राज्यों का फैसला नहीं है बल्कि इसे नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा पर्यावरण और जनसुरक्षा के मद्देनजर प्रतिबंधित किया गया है। एनवॉयर्नमेंट प्रोटेक्शन एक्ट-1986 की धारा-5 के तहत इसके इस्तेमाल पर पांच साल तक की सजा और एक लाख रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है।

कानून साफ कहता है कि इस मांझे की बिक्री और इससे पतंग उड़ाना अपराध है। इसके बावजूद जिस तरह से यह धागा लोगों की जिंदगी की डोर काट रहा है, वह कानून की कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक उदासीनता का प्रमाण है। चाइनीज मांझे को लेकर जागरूकता लाई जानी चाहिए। असल जरूरत आधे-अधूरे अभियानों की नहीं, बल्कि एक व्यापक और ईमानदार रणनीति की है। चाइनीज मांझे की सप्लाई चेन को तोड़ना, इसके निर्माण और आयात पर सख्ती से नजर रखना और दोषियों को उदाहरणात्मक सजा देना समय की मांग है। आज जरूरत इस बात की है कि समाज यह स्वीकार करे कि चाइनीज मांझा केवल एक अवैध वस्तु नहीं, बल्कि जानलेवा हथियार है।

न्यूयॉर्क में आधुनिक वास्तुकला का उदाहरण
वेसल हडसन याड्र्स

न्यूयॉर्क के मैनहैटन में हडसन याड्र्स के केंद्र में स्थित 'वेसल' ब्रिटिश डिजाइनर थॉमस हेथरविक ने डिज़ाइन की है। यह संरचना मधुमक्खी के छत्ते जैसी आकृति की तरह दिखाई देती है। लगभग 150 फुट ऊंचा वेसल 154 सीढ़ियों, 2,500 से अधिक पायदानों और 80 लैंडिंग्स से मिलकर बना है।

दृष्टिकोण जड़ों को याद रखने की जरूरत

आधुनिक होने का अर्थ पाश्चात्य होना कतई नहीं

अविनाश जोशी
स्वतंत्र लेखक एवं स्तंभकार
@patrika.com

आज के समय में 'आधुनिकता' शब्द का नाम लेते ही लोगों के मन में चमकदार जीवनशैली, भव्यता, ब्रांडेड परिधान, विदेशी त्योहार और डिजिटल सुविधाओं की छवि उभरती है। मानो आधुनिकता का अर्थ केवल पश्चिमी तौर-तरीकों को अपनाने से है। यह भ्रम हमारे समाज में गहराई तक फैल गया है। आधुनिक बनना अब संस्कृति त्यागने व पाश्चात्य जीवन की नकल करने का प्रतीक मान लिया गया है। परंतु प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में आधुनिक होने का अर्थ केवल पश्चिमी होना है? आधुनिकता का अर्थ अपने विचारों, दृष्टिकोण और जीवन में नवीनता लाना है, जो अपनी परंपरा में निहित हो।

आधुनिकता का पश्चिमी रूप भौतिक प्रगति पर निर्भर है, जबकि भारतीय आधुनिकता का स्वरूप आत्मिक और बौद्धिक प्रगति पर आधारित है। हमारे संत सबसे बड़े विचारक थे। ऋषि अगस्त्य पहली बार समुद्र पार कर दक्षिण भारत में सभ्यता का विस्तार करने वाले माने गए, वे जल प्रवाह और संतुलन के वैज्ञानिक सिद्धांत प्रस्तुत करने वाले थे। चरक और सुश्रुत ने चिकित्सा विज्ञान की नींव रखी, पतंजलि ने योग को संपूर्ण मनोविज्ञान के रूप में व्यवस्थित किया। यह सब आधुनिकता के आदर्श उदाहरण हैं- जिनमें ज्ञान, प्रयोग, विवेक और जीवन का संतुलन शामिल था। लेकिन हमने इन्हें भुला दिया और पश्चिम से आयातित हर चलन को अपनाना आधुनिकता समझ लिया। आधुनिकता का अर्थ कभी अपनी परंपरा को तिरस्कृत करना नहीं था। पर आज वातावरण ऐसा बन गया है कि परंपरा की रक्षा को पिछड़ापन और पश्चिमी बनावट को प्रगतिशीलता समझा जाता है। भारत का इतिहास बताता है कि यहां की संस्कृति सदैव स्वीकार करने वाली रही है। आधुनिकता का यही स्वरूप भारतीय दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है जो अच्छा हो, उसे स्वीकार करो; जो अपनी आत्मा से मेल न खाए, उसे विनम्रता से छोड़ दो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता को तकनीक, वस्त्र और व्यवहार तक सीमित न रखें, बल्कि अपने नैतिक मूल्यों, आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना के साथ जोड़ें। यदि बच्चा आधुनिक शिक्षा ग्रहण करता है पर अपनी परंपरा का आदर नहीं करता, तो उसकी आधुनिकता अधूरी है। आज का भारत यदि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर विज्ञान, तकनीक और वैश्विक नागरिकता की दिशा में आगे बढ़ता है, तो वह दुनिया को नई दिशा दे सकता है। क्योंकि सच्ची आधुनिकता वही है जो परंपरा से पोषित होते हुए भविष्य की ओर देख सके। आधुनिकता वह है जो समय की चाल के साथ चले, पर अपनी आत्मा की धुन न भूले। इसलिए अब हमें निर्णय लेना होगा हम पश्चिम के बनाए आधुनिकता के सांचे में खुद को ढालेंगे या अपनी सांस्कृतिक धारा को साथ लेकर एक नई आधुनिकता का निर्माण करेंगे। सच्चा आधुनिक वही है जो अपने अतीत से शक्ति ले और भविष्य को दिशा दे।

आपकी बात

सकारात्मक लोगों से मिलते रहें

गंभीर बीमारी होने पर रोगी को कभी अकेला न छोड़ें और उसके सामने सकारात्मक विचारों को ही प्रकट करें। गंभीर बीमारियों से मुक्त होने वालों के वीडियो दिखाएं जिन्होंने हिम्मत न हारकर बीमारी को हराया हो।

- शंकर गिरि, हनुमानगढ़

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'गंभीर बीमारी में डिप्रेशन न हो, इसके लिए क्या प्रयास किए जा सकते हैं?' अन्य प्रतिक्रियाएं ऑनलाइन भी देखें।
https://shorturl.at/kQtv5

आज का सवाल

क्विक कॉमर्स की 10 मिनट में डिलीवरी पर रोक को आप कैसे देखते हैं?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

पर्यावरण राजस्थान को अरावली क्षेत्र में पर्यावरण सुरक्षा का स्थायी मॉडल प्रस्तुत करने की जरूरत है

दूषित हवा से ग्रीन एनर्जी तक: प्रदूषण के खिलाफ सौर संकल्प

राजेन्द्र राठौड़
पूर्व नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधानसभा
@patrika.com

भारत में आज जिस तेजी से विकास की रफ्तार बढ़ी है उसी गति से हमारी हवा में जहर भी घुलता जा रहा है। कभी जीवन का प्रतीक मानी जाने वाली 'सांस' आज मौत का कारण बनती जा रही है। हवा में प्रदूषण का स्तर भयावह रूप ले चुका है। अब जैसे-जैसे सर्दी बढ़ रही है वैसे ही हवा की गुणवत्ता खराब से बहुत खराब श्रेणी में पहुंच रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 90 फीसदी से ज्यादा आबादी प्रदूषित हवा में सांस ले रही है और निम्न व मध्यम आय वाले देश इससे सबसे अधिक प्रभावित हैं। हाल में लैंसेट की नई रिपोर्ट 'काउंटडाउन ऑन हेल्थ एंड क्लाइमेट चेंज' आंकड़ों में सामने आया है कि वर्ष 2022 में वायु प्रदूषण के कारण भारत में 17 लाख से अधिक लोगों की मौत हुई है, जो वर्ष 2010 की तुलना में 38% अधिक है। इनमें से 44% मौतों की वजह जीवाश्म ईंधनों (कोयला, पेट्रोल और गैस) का इस्तेमाल करना है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की ओर से हाल में जारी 'भारत की जलवायु 2025' रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2025 देश का वर्ष 1901 से लेकर अब तक का 8वां सबसे गर्म साल रहा है। इसी कारण से विभिन्न मौसमी घटनाओं में देश में 2760 मौतें हुई हैं।

यह भी चिंताजनक है कि हाल में येल यूनिवर्सिटी, अमरीका की ओर से जारी ईपीआइ रैंकिंग रिपोर्ट, जिसमें वायु गुणवत्ता, स्वच्छ जल, जैव विविधता, कार्बन उत्सर्जन और मानव स्वास्थ्य सहित 50 से अधिक संकेतकों के आधार पर देशों का आकलन किया जाता है, उसमें भारत का 180 देशों में 176वां स्थान आया है। जो यह संकेत है कि भारत में जनसंख्या घनत्व, तीव्र शहरीकरण और ऐतिहासिक विकास असंतुलन जैसी चुनौतियां रही हैं। ईपीआइ के अनुसार डेनमार्क और फिनलैंड जैसे देशों ने दशकों पहले सख्त पर्यावरण कानून लागू किए। जबकि भारत को विशाल जनसंख्या, विकासशील अर्थव्यवस्था और शहरीकरण के दबाव के साथ आगे बढ़ना पड़ा। समय की मांग है कि राज्य सरकारों को अब दूरदर्शी निर्णय लेकर न केवल सौर ऊर्जा में लगातार निवेश करना होगा बल्कि ऊर्जा के लिए कोयले पर निर्भरता कम कर पर्यावरण संरक्षण में मॉडल राज्य बनना होगा तथा देश में वर्ष 2070 तक नेट जीरो उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार के साथ एक संतुलित और व्यावहारिक रणनीति के तहत आगे बढ़ना होगा।

राजस्थान आज देश में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में उभरकर सामने आया है। प्रदेश की स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता अब 35 हजार मेगावाट से अधिक हो चुकी है जो देश की कुल सौर ऊर्जा क्षमता का लगभग 27 प्रतिशत है। देश की 1 लाख मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता में से लगभग 31 हजार मेगावाट का योगदान अकेले राजस्थान का है। इसी प्रकार पीएम कुसुम योजना के अंतर्गत स्थापित ऊर्जा क्षमता पिछले 2 सालों में 122 मेगावाट से बढ़कर 2629 मेगावाट सौर क्षमता स्थापित की जा चुकी है। इस योजना से 2 लाख 83 हजार से अधिक किसानों को दिन में बिजली मिल रही है, जिससे डीजल पंपों पर निर्भरता घटी है। इसी प्रकार पीएम सूर्यघर योजना के अंतर्गत राजस्थान में एक लाख 20,162 रूफटॉप सोलर संयंत्र लगाए जा चुके हैं, जो ग्रीनहाउस गैसों को कम करने में भी योगदान दे रहे हैं।

प्रदेश में फैली अरावली पर्वतमाला का संरक्षण उत्तर भारत के पर्यावरण संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है। अरावली पर्वतमाला उत्तर भारत के लिए एक प्राकृतिक ढाल की तरह कार्य करती है। यह दिल्ली-एनसीआर में फैलने वाले प्रदूषण, धूल और मरुस्थलीकरण को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सुप्रीम कोर्ट ने 20 नवंबर को जारी आदेश पर रोक लगाते हुए अरावली में खनन गतिविधियों पर रोक लगाई है तथा एक्सपर्ट कमेटी गठित किए जाने के भी निर्देश दिए हैं।

आज जरूरत है कि राजस्थान अब अरावली क्षेत्र में वन्य जीव संरक्षण, हरियाली और सौर ऊर्जा का संतुलित विकास करके पर्यावरण सुरक्षा का स्थायी मॉडल प्रस्तुत करें। सौर ऊर्जा, पौधरोपण और प्राकृतिक संरचनाओं के संरक्षण की संयुक्त नीति ही आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा, बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षित भविष्य देने की मजबूत नींव बन सकती है।

पत्रिका फाइनेंस

निवेश का मतलब भविष्य का अनुमान लगाना नहीं, बल्कि आज सही कीमत चुकाना है। हर दिन ट्रेड करना निवेश नहीं, बेचैनी है।
सेठ क्लारमैन अमेरिकी हेज फंड मैनेजर

इन शेयरों की कीमत 100 रुपए से कम, फिर भी काफी महंगे

कंपनी	शेयर प्राइस	पी/ई रेश्यो
एचएफसीएल	66	346.7 गुणा
एनटीपीसी ग्रीन	91	128.4 गुणा
एसजेवीएन	72	50 गुणा

(प्रति शेयर कमाई के मुकाबले शेयरों की कीमत (प्राइस टू अर्निंग रेश्यो)

पेज-1 से जारी...

खोखली निगरानी

लाखों लोग वोटर लिस्ट में घुस गए। बंगाल में तो करोड़ों निकलेंगे। यहां भी वही होने वाला है। क्या यह देश की सुरक्षा का प्रमाण है।

वैसे तो आज लोग त्रस्त हैं माफिया से- हर क्षेत्र में। घुसपैठ की यह समस्या क्या माफिया अथवा तस्करी नहीं है? क्या इसमें सत्ता और पुलिस का पूर्ण सहयोग नहीं है? हालत यह है कि बिना आधार कार्ड कोई शहर में रह रहा है और उसका पूरा परिवार सुरक्षित भी है। सरकार उसको भी उतना ही राशन-पानी दे रही है- जितना देश के नागरिक को देती है। शिविर में जगह नहीं देना तो मात्र जनता की आंखों में धूल झोंकना ही है। प्रशासन की देशभक्ति पर गर्व करना चाहिए?

बात सिर्फ बढ़ते अपराधों की ही नहीं, घुसपैठिए परोक्ष रूप से देश-प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी चोट पहुंचाते हैं। स्थानीय लोगों को रोजगार या फिर उचित मेहनताना नहीं मिलता तो उसके लिए भी ये लोग जिम्मेदार हैं जो कम पगार पर भी काम करने को तैयार हो जाते हैं। जब अवैध रूप से लोगों की बसावट होगी तो आबादी का दबाव भी बढ़ना तय है। आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ाने की एक वजह बढ़ती घुसपैठ भी है। पार्क व दूसरे सार्वजनिक स्थल समाजकंटकों के शरणगाह भी इसीलिए बनते नजर आते हैं।

क्या पुलिस नहीं जानती कि मानव तस्करी के साथ स्थानीय माफिया का सहयोग कौन कर रहे हैं? इनमें अपराधी कौन-कौन हैं? लड़कियों को भगाने के लिए 'कमाई' कौन कर रहे हैं? क्या पुलिस केवल माफिया और देश के दुश्मनों को ही आश्रय देने वाली बन जाएगी?

हर जगह देख लो- जेडीए अतिक्रमण ध्वस्त करती है- मीडिया में छाई हुई है। क्या घुसपैठियों की अवैध बसावट की ओर रुख करती है कभी। हमारे जनहित विरोधी जनप्रतिनिधि भी दबाव डालते होंगे। कोर्ट के आदेश भी नकार दिए जाते हैं। शेष क्या रह गया? जनता के नौकर जनता को ही उजाड़ने में व्यस्त हैं। यही कलियुग है क्या? क्या इन्हीं को समेटने कल्की रूप में नए अवतार प्रकट होंगे? आज तो मानो पृथ्वी ही यमलोक का पूर्ण परिचय दे रही है। सृष्टि का कटु सत्य है कि रावण के वंशजों को भी सजा पानी ही होगी। जो अन्न पेट में जाएगा, वह तो अपना काम करेगा।

गरीबों को राहत देने के बजाए उनके दुःख दर्द बढ़ाने वाले हर फरमान के पीछे मनमानी और भ्रष्टाचार की बू आती है। बड़ा काम घुसपैठियों को रोकने का ही नहीं बल्कि जो घुस आए हैं उन्हें वापस उनके ठिकाने भेजने का भी होना चाहिए। जमीनी स्तर पर सख्त निगरानी व्यवस्था नहीं हुई तो आधार कार्ड की अनिवार्यता भी खोखली ही बन कर रहने वाली है।

जिस तेजी से भ्रष्टाचार बड़ा हो रहा है, धन बटोरा जा रहा है। लोकतंत्र की खरीद-फरोख्त बढ़ रही है- दुर्घटना, रोग, मौत के भी आंकड़े बढ़ रहे हैं। बढ़ते भी रहेंगे। पुलिस से न्याय की अपेक्षा है। प्रकृति पर न छोड़ा जाए तो देश स्वर्ग बन जाएगा।

पेज वन का शेष...

अफसरों की ...

संशोधन के खिलाफ शीर्ष कोर्ट में जनहित याचिका दायर कर संवैधानिकता को चुनौती दी गई थी, जिसमें मुख्य चुनौती नवगठित धारा 17ए के खिलाफ थी। कोर्ट ने सुनवाई पूरी कर 6 अगस्त, 2025 को फैसला बाद में सुनाने को कहा था।

राजस्थान-एमपी में 'पत्रिका' ने बनाया था मुद्दा, सरकारें हटी थी पीछे

राजस्थान व मध्यप्रदेश में ***अफसरों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच के लिए सरकार से पूर्वानुमति संबंधी प्रस्तावित विधेयक को 'काला कानून' बताकर 'पत्रिका' ने जनता के बीच मुद्दा बनाया था।*** राजस्थान में तो तत्कालीन भाजपा सरकार ने अध्यादेश तो जारी किया लेकिन पत्रिका के मुद्दा बनाने के बाद विधानसभा में पेश विधेयक वापस ले लिया गया। ***मध्यप्रदेश सरकार ने तो कानून बनाने के प्रस्ताव स्तर पर ही कदम पीछे खींच लिए थे।***

ट्रंप का ...

भारत ईरान को बासमती चावल, चाय, चीनी, दवाइयां, बिजली उपकरण व इमिटेशन आभूषण निर्यात करता है जबकि वहां से सूखे मेवे, केमिकल आयात करता है। वैश्विक व अमरीकी प्रतिबंधों के बाद भारत ने ईरान से तेल खरीदना पहले ही बंद कर दिया है।

कोर्ट ने टैरिफ रद्द किया तो बर्बाद हो जाएंगे : ट्रंप

ट्रंप के टैरिफ लगाने के अधिकार को चुनौती पर अमरीकी सुप्रीम कोर्ट बुधवार को फैसला सुना सकता है। इस पर ट्रंप ने चेतावनी दी है कि सुप्रीम कोर्ट ने उनके खिलाफ फैसला देकर टैरिफ रद्द किया तो गड़बड़ जो जाएगी और देश के लिए एकत्र किया गया टैरिफ वापस चुकाना लगभग असंभव हो जाएगा, देश बर्बाद हो जाएगा। यह पता लगाने में ही कई साल लग जाएंगे कि खरबों डॉलर किसे लौटाने हैं।

निर्यातक बोले - ज्यादा असर नहीं... निर्यातकों के संगठन एफआइईओ के प्रमुख अजय सहाय ने कहा कि नए अमरीकी टैरिफ का भारत पर ज्यादा प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा क्योंकि हम पहले से ही अमरीका के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) के ईरान पर प्रतिबंधों का पालन कर रहे हैं और खाद्यान्न व दवाओं जैसी अनुमत वस्तुओं का व्यापार किया जा रहा है।

आदेश

ग्राहक की गलती नहीं तो बैंक को 10 दिन में लौटानी होगी रकम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी) ने कहा है कि खाताधारक की गलती या लापरवाही नहीं होने के बावजूद खाते से रकम निकाली गई है तो बैंक को दस दिन में रकम वापस करनी होगी।

शीर्ष उपभोक्ता आयोग ने भारतीय रिजर्व बैंक के 2017 के सर्कुलर के प्रावधानों को स्पष्ट करते हुए यह फैसला दिया है। आयोग के अध्यक्ष जस्टिस एपी शाही, सदस्य भरत कुमार पांड्या की पीठ ने एक मामले में बेंगलूरु की महिला खाताधारक के हक मे फैसला देते हुए राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के फैसले के खिलाफ बैंक की अपील खारिज कर दी।

बॉम्बे हाईकोर्ट

नायलॉन मांझे के इस्तेमाल पर होगा 25 हजार रुपए का जुर्माना

मुंबई@पत्रिका. नायलॉन मांझे से होने पर घातक दुष्प्रभाव को देखते हुए बॉम्बे हाईकोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। हाईकोर्ट की नागपुर बेंच ने निर्देश दिया कि नायलॉन मांझे से पतंग उड़ाते हुए पकड़े जाने पर 25 हजार रुपए का जुर्माना देना होगा। इसके अलावा किसी विक्रेता के पास ऐसे मांझे का स्टॉक पाए जाने पर 2.5 लाख रुपए का जुर्माना देना होगा।

एआइ आधारित बाल सुरक्षा टूल 'रक्षा' लॉन्च

नई दिल्ली @ पत्रिका ब्यूरो. भारत ने बच्चों के खिलाफ अपराधों की रोकथाम के लिए दुनिया का अपनी तरह का पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधारित टूल 'रक्षा' लॉन्च किया है। यह टूल बच्चों की ट्रैफिकिंग, बाल विवाह और बाल यौन शोषण व दुर्व्यवहार से जुड़ी सामग्री (सी-सीम) की पहचान और रोकथाम में मदद करेगा।

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी तथा वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने 'प्रॉस्पेरिटी फ्यूचर्स चाइल्ड सेफ्टी टेक समिट' में इस टूल का शुभारंभ किया। यह सम्मेलन भारत सरकार के इंडिया एआइ इम्पैक्ट समिट 2026 का आधिकारिक प्री-समिट कार्यर्‍म था। जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन द्वारा विकसित यह टूल देशभर के बाल-संबंधित डेटा का विश्लेषण कर संवेदनशील क्षेत्रों का रियल-टाइम मानचित्रण करता है। इसके जरिए संगठित अपराध में शामिल गिरोहों की निगरानी, स्रोत व गंतव्य बिंदुओं की पहचान और ऑनलाइन बाल यौन शोषण सामग्री से जुड़े हीट जोन का पता लगाया जा सकेगा। मंत्री जितिन प्रसाद ने कहा कि बच्चों के लिए सुरक्षित और समावेशी डिजिटल भविष्य सुनिश्चित करना सामूहिक जिम्मेदारी है। वहीं भुवन ऋभु ने 'रक्षा' को तकनीक के सहारे मजबूत बाल संरक्षण प्रणाली की दिशा में भारत का ऐतिहासिक कदम बताया।

म्यूचुअल फंड्स भारतीय शेयर बाजार में भारी उटापटक के बीच निवेशकों का फंड मैनेजरों पर बढ़ा भरोसा

निवेशकों ने फ्लेक्सीकैप के जरिए खेला 'सुरक्षित' दांव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. छोटे निवेशकों में इस बात को लेकर असमंजस बढ़ रहा है कि उतार-चढ़ाव वाले शेयर बाजार में कहां निवेश किया जाए। ऐसे में वे पोर्टफोलियो के फैसले फंड मैनेजरों पर छोड़ना ज्यादा सुरक्षित समझ रहे हैं। इसी वजह से फ्लेक्सीकैप फंड्स में निवेश तेजी से बढ़ा है, क्योंकि इनमें बाजार के हालात के हिसाब से फंड मैनेजर के पास बड़े, मझोले और छोटे शेयरों में निवेश की आजादी होती है। 2025 में फ्लेक्सीकैप फंड्स में निवेश 98% बढ़कर 80,997 करोड़ हो गया, जो 2024 में 40,962 करोड़ था। इसके उलट, सबसे ज्यादा रिस्की थीमैटिक-सेक्टोरल फंड्स से निवेशकों का मोहभंग हुआ। निवेश 75% घटकर 38,144 करोड़ रह गया, जो 2024 में ₹1,55,000 करोड़ था।

8.50% रिटर्न दिया फ्लेक्सीकैप फंड्स ने औसतन 2025 में, ***थीमैटिक-सेक्टोरल फंड्स का 11% निगेटिव रिटर्न***

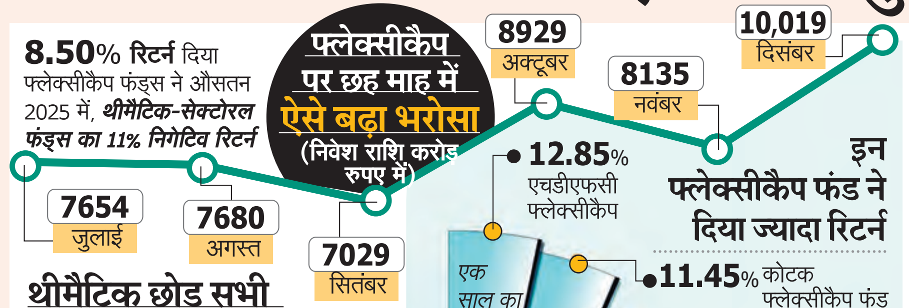

थीमैटिक छोड़ सभी फंड्स में बढ़ा निवेश

फंड श्रेणी	2024	2025	इजाफा
फ्लेक्सीकैप	40,962	80,997	98%
मल्टी-एसेट	42,568	47,056	10.5%
स्मॉलकैप	32,223	52,321	62.3%
मिडकैप	34,303	49,939	45.6%
लार्जकैप	19,414	25,481	31.2%
सेक्टोरल	1,55,000	38,144	-75%

(निवेश राशि करोड़ रुपए में)

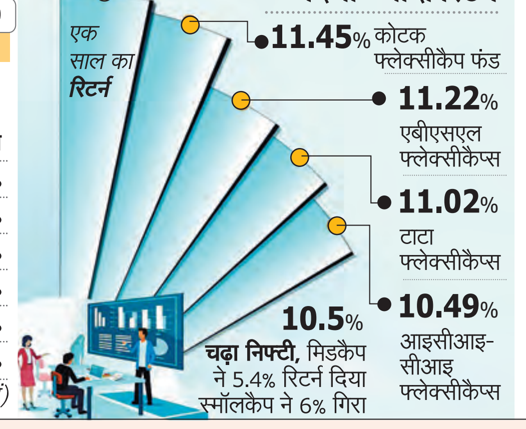

एसआइपी बना ग्रोथ ड्राइवर

मिरे एसेट के निखिल गुप्ता ने कहा, बाजार में लगातार उतार-चढ़ाव के कारण रिटेल निवेशक अब पहले से ज्यादा सतर्क हो गए हैं। निवेशक अब ऐसे फंड्स पसंद कर रहे हैं, जहां पैसा लगाने में संतुलन हो और जोखिम एक ही सेक्टर या कुछ गिने-चुने शेयरों तक सीमित न रहे। एसआइपी से 2025 में 3.34 लाख करोड़ रुपए निवेश हुआ। म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में आना वाला हर 5वां पैसा एसआइपी के जरिए आया। एसआइपी का एयूएम 16.63 लाख करोड़ रुपए है, जो म्युचुअल फंड इंडस्ट्री के कुल एसेट का 20.7% है। एसआइपी स्टॉपेज रेशियो 85% पर पहुंच गया। दिसंबर में 60.46 लाख नए एसआइपी शुरू हुए।

एसबीआइ

आइएमपीएस से राशि भेजना होगा महंगा

मुंबई@ पत्रिका. एसबीआइ के ग्राहकों के लिए ऐप-इंटरनेट बैंकिंग के जरिए तत्काल भुगतान सेवा (आइएमपीएस) महंगी होने जा रही है। आइएमपीएस के जरिए 15 फरवरी से ज्यादा रकम भेजने पर चार्ज देना होगा। बैंक ने साफ किया कि 25,000 रुपए तक आइएमपीएस से ऑनलाइन से पैसे भेजना पहले की तरह मुफ्त रहेगा, लेकिन इससे ज्यादा धनराशि भेजने पर शुल्क लगेगा। आइएमपीएस के जरिए एक लाख रुपए तक भेजने पर 2 रुपए शुल्क और जीएसटी लगेगा। एक से दो लाख रुपए पर 6 रुपए सेवा शुल्क और जीएसटी लगेगी। वहीं, दो से पांच लाख रुपए ट्रांसफर करने पर 10 शुल्क और जीएसटी देना होगा।

अमरीकी दबाव

रूस से तेल खरीदारी दिसंबर में 29% घटी

मुंबई@ पत्रिका. रूस से कच्चा तेल खरीदने के मामले में भारत दिसंबर 2025 में तीसरे स्थान पर आ गया। भारत का रूस से कुल हाइड्रोकार्बन आयात 2.3 अरब यूरो रहा, जो नवंबर के 3.3 अरब यूरो से कम है। तुर्की भारत को पीछे छोड़ते हुए दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन गया, जिसने रूस से दिसंबर में 2.6 अरब यूरो के हाइड्रोकार्बन खरीदे। भारत के रूसी तेल आयात में मासिक आधार पर 29% की गिरावट हुई। इस कटौती की वजह रिलायंस इंडस्ट्रीज रही, जिसने दिसंबर में रूस से आयात 15% घटाया।

बदलेगा ग्लोबल ट्रेड गेम? ईरान में अशांति-टैरिफ से भारतीय बासमती चावल निर्यात पर असर

यूरोपीय देश भूल सकते हैं ईरान का रास्ता, हिलेंगे चीन-खाड़ी देश, भारत पर भी असर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. अमरीकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने मंगलवार को ऐलान किया कि ईरान के साथ ट्रेड करने वाले देशों पर अतिरिक्त 25% टैरिफ लगाया जाएगा। अगर यह फैसला लागू हुआ तो भारत समेत दुनिया के कई देशों पर इसका असर पड़ेगा। इन या तो इन देशों को ईरान से कारोबार बंद करना पड़ेगा या अमरीका में इन्हें ज्यादा टैरिफ चुकाना होगा। चीन, यूएई के साथ भारत-पाकिस्तान जैसे कई एशियाई देश और जर्मनी-इटली, तुर्की जैसे कुछ यूरोपीय देश ईरान के साथ कारोबार करते हैं, ऐसे में ट्रंप के इस फैसले का असर इन देशों पर पड़ेगा। चूंकि इटली-जर्मनी जैसे ईयू के देश बड़ी मात्रा में अमरीका को एक्सपोर्ट करते हैं, ऐसे में ये देश ईरान का रास्ता भूल सकते हैं।

सबसे बड़ी दुविधा चीन और यूएई के सामने है, जिनका ईरान के साथ भी बड़ा व्यापार है और अमरीका के साथ भी। ऐसे में इनके लिए किसी एक को चुनना भारी पड़ रहा है। भारत के साथ भी ऐसी ही स्थिति है। इस बीच ईरान में चल रहे विरोध प्रदर्शनों के चलते भारत के चावल एक्सपोर्ट पर असर पड़ना शुरू हो गया है। इससे घरेलू कीमतों में गिरावट आई है। निर्यातकों को पेमेंट में देरी, अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ रहा है। इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन ने निर्यातकों से ईरानी कॉन्ट्रैक्ट्स पर जोखिमों का फिर से आकलन करने और सुरक्षित पेमेंट सिस्टम अपनाने का आग्रह किया है।

अमरीका का 25% टैरिफ... ईरान से कारोबार पड़ेगा महंगा

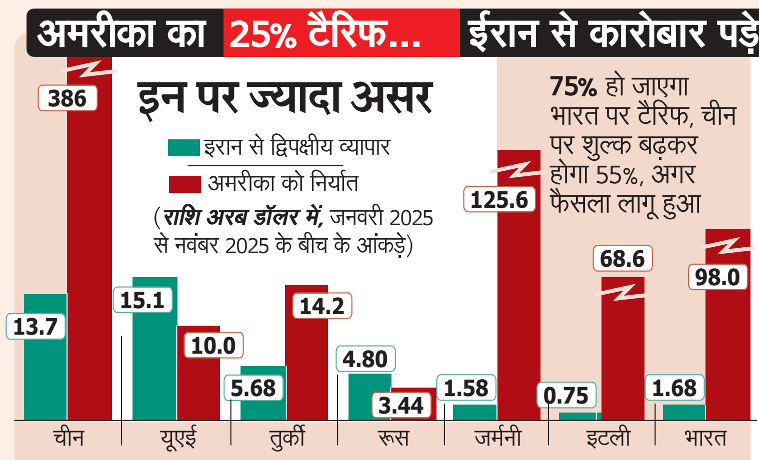

75% हो जाएगा भारत पर टैरिफ, चीन पर शुल्क बढ़कर होगा 55%, अगर फैसला लागू हुआ

टैरिफ का भारत के कुल निर्यात पर असर नहीं

माह	अमरीका को निर्यात	इजाफा	देश का कुल निर्यात	इजाफा
जून	8.30	23.5%	35.14	00%
जुलाई	8.01	20%	37.24	7.3%
अगस्त	6.86	2.4%	35.10	6.73%
सितंबर	5.46	-12%	36.38	6.8%
अक्टूबर	6.30	-8.6%	34.38	-11.8%
नवंबर	6.98	22.6%	38.13	19.4%

(निर्यात राशि अरब डॉलर में, सालाना इजाफा)

आने वाले दिनों में यह साफ होगा कि कौन-से देश अमरीका का साथ चुनते हैं और कौन ईरान के साथ

इतना सस्ता हुआ बासमती चावल

भारत ने 2025-26 में अप्रेल-नवंबर के दौरान ईरान को 46.81 करोड़ डॉलर का 5.99 लाख टन बासमती चावल निर्यात किया। ईरान भारत के लिए बासमती चावल एक्सपोर्ट का सबसे बड़ा डेस्टिनेशन है। ईरान में अशांति से पिछले एक हफ्ते में ही बासमती चावल की किस्म 1121 की घरेलू कीमत 85 रुपए प्रति किलो से घटकर 80 रुपए हो गई है, जबकि 1509 और 1718 किस्मों की कीमतें 70 रुपए प्रति किलो से घटकर 65 रुपए प्रति किलो हो गई है।

वैश्विक व्यापार में नई अनिश्चितता

चीन ईरान का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। 25% अतिरिक्त टैरिफ से चीन पर सीधा आर्थिक दबाव पड़ेगा। नया टैरिफ यूरोप को ईरान के साथ अपने रिश्तों पर दोबारा सोचने को मजबूर कर सकता है। तुर्की की ऊर्जा जरूरतों पर असर डाल सकता है। यूएई ईरान का दूसरा सबसे बड़ा ट्रेड पार्टनर है। दुबई ईरानी सामान के लिए बड़ा री-एक्सपोर्ट हब है। इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान जैसे देश भी ईरान से व्यापार करते हैं।

अमरीकी टीम को झटका, पाक मूल के खिलाड़ी अली खान को भारत का वीजा नहीं मिला

अली खान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में सात फरवरी, 2026 से आइसीसी टी-20 विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट खेला जाएगा। इसमें अमरीका की टीम भी शिरकत करेगी, लेकिन इससे पहले अमरीकी टीम की मुश्किलें बढ़ गई हैं।

अमरीका की टीम में पाकिस्तान मूल के तेज गेंदबाज अली खान भी शामिल हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर दावा किया है कि उन्हें भारत का वीजा देने से मना कर दिया गया है। अमरीका ने अभी टीम घोषित नहीं की है लेकिन अली टीम में जगह बनाने के प्रबल दावेदार हैं।

गौरतलब है कि 35 वर्षीय तेज गेंदबाज अली खान का जन्म पाकिस्तान के अटॉक में हुआ था। जब उनकी उम्र 19 साल थी, तब उनका परिवार अमरीका चला गया था।

इन खिलाडियों को होगी परेशानी

एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत सरकार पाकिस्तान मूल के खिलाड़ियों को वीजा नहीं देगी। ऐसा हुआ तो अमरीका के अलावा कई टीमों को परेशानी हो सकती है। अमरीकी टीम में अली खान के अलावा शायन जहांगीर, एहसान आदिल और मोहम्मद मोहसिन पाकिस्तान मूल के हैं। इसके अलावा जिम्बाब्वे, कनाडा और इंग्लैंड की टीम में भी कई पाकिस्तानी मूल के खिलाड़ी खेलते हैं।

बदलाव : केंद्रीय मंत्री मांडविया ने की चर्चा

अब 10 मिनट में डिलीवरी नहीं, समय सीमा खत्म की

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

नई दिल्ली. देश में 10 मिनट में डिलीवरी करने की अनिवार्यता खत्म होने जा रही है। भारत सरकार ने डिलीवरी सर्विस कंपनियों को इसके लिए कहा है। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने ब्लिंककिट, जोमेटो व स्वीगी सहित अन्य कंपनियों से इस पर चर्चा की है। इसके बाद ब्लिंककिट ने सभी ब्रांड-सर्विस से यह फीचर हटाने का ऐलान किया है। अब जोमेटो व स्वीगी भी इसे हटाएंगे। इससे डिलीवरी करने वाले लोगों के लिए राहत रहेगी। मांडविया से चर्चा के बाद कंपनियों की क्विक सर्विस तो रहेगी, लेकिन दस मिनट की टाइम लिमिट खत्म हो जाएगी।

ये है असल वजह

इन कंपनियों के डिलीवरी बॉय जल्द प्रोडेक्ट पहुंचाने के चक्कर में दुर्घटनाग्रस्त होते रहे हैं। हैदराबाद में एक डिलीवरी बॉय की दुर्घटना में मौत के बाद यह मामला गर्मा गया था। इसके बाद गिग वर्कर्स की सुरक्षा को लेकर सवाल उठे थे। गिग वर्कर्स यूनियन ने भी इसकी मांग की थी। पूर्व में संसद में भी 10 मिनट में डिलीवरी का मुद्दा उठ चुका है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने रखी नींव

गांधीनगर में शुरू होगी देश की दूसरी बीएसएल-4 बायो कंटेनमेंट फैसिलिटी

कहा- खतरनाक वायरस की जांच में आत्मनिर्भर बनेगा भारत, विदेशों पर निर्भरता होगी खत्म

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

अहमदाबाद. केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को गांधीनगर में गुजरात बायोटेक्नॉलोजी रिसर्च सेंटर (जीबीआरसी) की बीएसएल-4 बायो-कंटेनमेंट फैसिलिटी की नींव रखी। उन्होंने कहा कि पुणे की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआइवी) के बाद यह भारत की दूसरी उच्च स्तरीय लैब होगी वहीं किसी राज्य सरकार की ओर से बनाई जा रही यह पहली लैब है। 140 करोड़ की आबादी में अब तक देश में केवल एक ही बीएसएल-4 लैब पुणे में थी, जिसकी वजह से सैकड़ों किलोमीटर दूर सैंपल भेजना पड़ता था। लेकिन नई बन रही लैब से हमें बड़ा फायदा होगा। 11 हजार वर्ग मीटर के विशाल कॉम्प्लेक्स में 362 करोड़ की लागत से देश की जैविक सुरक्षा का एक मजबूत किला बनने जा रहा है।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और विज्ञान व तकनीक मंत्री अर्जुन मोढ़वाडिया की मौजूदगी में शाह ने कहा कि दुनिया भर की बीएसएल लैब का अध्ययन कर बीएसएल-4 बायो-कंटेनमेंट फैसिलिटी तैयार की जा रही है। यहां पशुओं से होकर मानव तक पहुंचने वाले रोगों का भी अध्ययन करने की विश्वस्तरीय व्यवस्था होगी। उन्होंने कहा कि एक अध्ययन के अनुसार 60 से 70 प्रतिशत बीमारियां पशुओं से होकर इंसान तक पहुंचती हैं, इसलिए भारत ने वन हेल्थ मिशन के माध्यम से मानव और पशु दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का कार्यक्रम शुरू किया है। अब हमारे वैज्ञानिकों को खतरनाक वायरस के सैंपल जांचने के लिए विदेश पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। विदेश पर निर्भरता खत्म होने से जांच में तेजी आएगी और हम आत्मनिर्भर बनेंगे। बीएसएल-4 सभी जरूरतों की पूर्ति करेगी। हमें रिसर्च-बेस्ड परमानेंट सुरक्षा की दरकार है।

एंटी माइक्रोबियल रेसिस्टेंस समाज के लिए बहुत बड़ा संकट: गृह मंत्री ने कहा कि एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति विकसित हो रही प्रतिरोधकता हमारी सोसाइटी और पूरी मानवजाति के सामने बहुत बड़ा खतरा है।

यह एक 'साइलेंट डिजास्टर' की तरह है। एंटी माइक्रोबियल रेसिस्टेंस (एएमआर) पूरे समाज के लिए बहुत बड़ा संकट है। आने वाले दिनों में और आने वाली पीढ़ियों के लिए फटाइल ट्रांसमिशन का कारण भी बनता है। एएमआर से निपटने के लिए स्पष्ट रोडमैप, सही समय पर उपचार व अंतिम व्यक्ति तक जागरूकता पहुंचाना जरूरी है।

बायोटेक में आज 10 हजार स्टार्टअप: केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 2014 में भारत की बायो इकोनॉमी 10 बिलियन डॉलर की थी और वित्तीय वर्ष 2024 के समाप्त होने तक यह 166 बिलियन डॉलर तक पहुंच चुकी है। 2014 में बायोटेक क्षेत्र में काम करने वाले स्टार्टअप की संख्या 500 से कम थी, जो 2025 में बढ़कर 10 हजार से अधिक हो चुकी है। इस अवधि में बायो इंक्यूबेटर की संख्या 6 से बढ़कर 95 हो गई। वहीं 125 पेटेंट फाइलिंग की जगह हम 1300 तक पहुंच चुके हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की उपस्थिति में भारत सरकार के जैव-प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से गांधीनगर के गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर की बीएसएल-4 को राष्ट्रीय महत्व के केंद्र के रूप में अधिकृत करने के लिए गुजरात सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ लेटर ऑफ इंटेंट का हस्तांतरण भी किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और राज्य के विज्ञान व तकनीक मंत्री अर्जुन मोढ़वाडिया भी मौजूद रहे।

नीट-पीजी 2025 मेरिट नहीं, मजबूरी से खुला मेडिकल पीजी का दरवाजा

-40 अंक वाला भी बन सकेगा विशेषज्ञ डॉक्टर

विकास जैन
patrika.com

जयपुर. इसे मजबूरी कहें या जान-बूझकर सेहत से खिलवाड़, देश में अब -40 अंक लाने वाले अभ्यर्थी को भी विशेषज्ञ डॉक्टर बनने का मौका दिया जा रहा है। इस व्यवस्था के बाद देश की सबसे प्रतिष्ठित मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-पीजी-2025 एक बार फिर सवालों के घेरे में है।

नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंसेज (एनबीईएमएस), नई दिल्ली की ओर से मंगलवार को जारी नोटिस ने पूरे मेडिकल एजुकेशन सिस्टम की पोल खोल दी है। पीजी मेडिकल सीटें खाली न रहें, इसके दबाव में बोर्ड को कट-ऑफ इतना नीचे लाना पड़ा कि अब मेरिट नहीं, मजबूरी के आधार पर विशेषज्ञ डॉक्टर तैयार होने की तस्वीर उभर रही है।

टेबल के जरिए समझें काउंसलिंग के नियमों में परिवर्तन

नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंसेज ने हाल ही में जारी किया नोटिस

श्रेणी	पूर्व न्यूनतम योग्यता	पूर्व न्यूनतम कट-ऑफ	संशोधित न्यूनतम योग्यता	संशोधित कट-ऑफ
सामान्य/ईडब्ल्यूएस	50 परसेंटाइल	276	7 परसेंटाइल	103
सामान्य पीडब्ल्यूबीडी	45 परसेंटाइल	255	5 परसेंटाइल	90
एससी/एसटी/ओबीसी (पीडब्ल्यूबीडी)	40 परसेंटाइल	235	0 परसेंटाइल	-40

(कट ऑफ अंक 800 में से)

मरीज की सेहत से खिलवाड़?

मेडिकल विशेषज्ञों का मानना है कि कट-ऑफ को इस हद तक गिराना भविष्य में मरीजों की सुरक्षा से सीधा खिलवाड़ है। पीजी डॉक्टर ही आगे चलकर सर्जन, फिजिशियन और सुपर स्पेशलिस्ट बनते हैं। यदि प्रवेश का स्तर ही कमजोर होगा, तो इलाज की गुणवत्ता पर असर पड़ना तय है।

चिकित्सा जैसे गंभीर पेशे में ऐसा समझौता स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। सरकार को रोक लगानी चाहिए, इसके लिए जनहित याचिका दायर करने की तैयारी कर रहे हैं। **- डॉ. राजेंद्र कुमार शर्मा,** एक्टिविस्ट, चिकित्सा अधिकारी

रैंक वही, नियम बदले

एनबीईएमएस ने यह भी साफ किया है कि नीट पीजी 2025 की रैंक में कोई बदलाव नहीं होगा। यानी परिणाम वही रहेगा, लेकिन नियम बदलकर ज्यादा से ज्यादा उम्मीदवारों को काउंसलिंग में शामिल किया जाएगा।

तीसरे राउंड की काउंसलिंग होगी

नीट कट-ऑफ जारी होने के बाद अब जल्दी ही तीसरे राउंड की काउंसलिंग होगी। पहले ऑल इंडिया और फिर राज्य की काउंसलिंग का कार्यक्रम जारी होगा। **- डॉ. शशिमोहन शर्मा,** चेयरमेन, नीट पीजी काउंसलिंग बोर्ड, राजस्थान

व्यक्ति जीता है अपने अहंकार के बल पर। इसी आधार पर उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उसके आस-पास का वातावरण निर्मित होता है। उसका सामाजिक स्वरूप बनता है। उसके जीवन की दिशा तय होती है।

अपेक्षा मुक्ति ही सुख का सोपान

गुलाब कोठारी
प्रधान संपादक
पत्रिका समूह
@patrika.com

आप किसी से अपेक्षा रखते हैं कि वह ऐसा या वैसा व्यवहार ही करेगा। यदि वैसा नहीं किया गया, तो आप अपमानित महसूस करने लगते हैं।

जीवन में सुख की पहली सीढ़ी है- अपेक्षा से मुक्ति और इसका मार्ग है- दृष्टि का विकास। अपेक्षा भाव में व्यक्ति हमेशा अभावग्रस्त रहता है। वह कभी भी जीवन में संतुष्टि का अनुभव नहीं कर पाता। उसको हर क्षण किसी न किसी वस्तु की प्राप्ति की चाह बनी रहती है। प्रशंसा, धन, पद आदि सभी इसी अपेक्षा भाव से जुड़े हैं। इन अपेक्षाओं की पूर्ति में वह राग-द्वेष, हानि-लाभ, भय-अभय आदि द्वन्द्वों से युक्त होता जाता है। यही मूल में पुनर्जन्म का हेतु बन जाता है। कामनाओं की अनवरत शृंखला भी इसी के कारण बनी रहती है। अपनी समस्त कामनाओं को दूर करने का प्रयास आवश्यक है। तभी हम मुक्ति मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं। धर्म-ज्ञान-वैराग्य-ऐश्वर्य रूप विद्या भाव से जुड़कर राग-द्वेष आदि अविद्या भावों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अपेक्षा व्यक्ति की स्वयं से ही होनी चाहिए। यदि यह अन्य व्यक्तियों के साथ जुड़ती है तो वह जीवन में एकात्म भाव से नहीं जुड़ पाता है।

व्यक्ति जीता है अपने अहंकार के बल पर। इसी आधार पर उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उसके आस-पास का वातावरण निर्मित होता है। उसका सामाजिक स्वरूप बनता है। उसके जीवन की दिशा तय होती है। उसके मन में इसी के अनुरूप कामनाओं की उत्पत्ति होती है। कामना भी अनेक प्रकार की होती है। कुछ कामनाएं पूर्व कर्म फलों के अनुरूप होती हैं, कुछ वर्तमान जीवन के आधार पर पैदा होती हैं। कुछ कामनाएं व्यक्ति के संदर्भ में होती हैं। किसी कामना के साथ अन्य व्यक्ति भी जुड़ा हो सकता है। इसके अलावा मन, बुद्धि आदि के कार्य त्रिगुण से भी प्रभावित रहते हैं। ये कामना की दिशा तय करते हैं। कामना कुछ लेने की भी हो सकती है, कुछ करने की भी हो सकती है, कुछ देने की भी हो सकती है। मन में लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ, संकुचन जैसे भाव होंगे, तब व्यक्ति लेना चाहेगा। अहंकार भी अपेक्षा पर ही आधारित है।

जीवन में प्रायः ऐसा होता है कि हम कार्य के साथ ही परिणाम की अपेक्षा रखते हैं। परिणाम आने पर ही अपेक्षा हमारे मन पर सुखद या दुःखद प्रभाव छोड़ती है। जैसे, कोई सोच ले कि इस बार तो परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होऊंगा और वह नहीं हुआ तो पूरे वर्ष भर मन के किसी कोने में इसका प्रभाव बना रहेगा। किन्तु, यदि वह उत्तीर्ण हो गया तो विशेष प्रसन्नता नहीं होगी, क्योंकि उसके विचार से वह तो होना ही था।

व्यक्तिगत व्यवहार में भी यही बात लागू होती है। आप किसी से अपेक्षा रखते हैं कि वह ऐसा या वैसा व्यवहार ही करेगा। यदि वैसा नहीं किया गया तो आप अपमानित महसूस करने लगते हैं। इसी प्रकार आप किसी मित्र के घर यह सोचकर जाएं कि वहां जाते ही वह आपको खाने के लिए कहेगा। अगर उसने नहीं कहा तो आपको बुरा लगेगा कि इतने दिन बाद उसके यहां गए और खाने को भी नहीं पूछा। यदि पूछ लिया तो उसका सुख भी नहीं मिलेगा, क्योंकि वह तो आप मानकर ही चल रहे थे। इसके विपरीत, यदि आप बिना किसी अपेक्षा के अपने मित्र के यहां जाते हैं और वह खाने के लिए नहीं पूछता, तो भी आपको यह प्रश्न नहीं सताएगा कि मुझसे पूछा ही नहीं। आप मित्र से मिलने गए थे, मिलकर आ गए। यदि उसने पूछा या खाना खिलाया तो मित्र के व्यवहार से आप विशेष प्रसन्न होकर लौटेंगे। आप वही, मित्र वही, घटना वही, किन्तु प्रभाव भिन्न-भिन्न। इसका कारण है- आपके मन में विद्यमान अपेक्षा। इससे आपके मन में एक पूर्वाग्रह पैदा हो जाता है और उसी के अनुरूप आप परिणामों का आकलन करते हैं। वस्तुस्थिति को तटस्थ भाव से नहीं देख पाते। अपेक्षा काल्पनिक विचार है। बिना एक यथार्थ के व्यक्ति कुछ सोच लेता है। स्वप्न देख लेने जैसा कार्य है। मैं किसी के घर मिलने जा रहा हूं। मार्ग में सोच लूं कि चाय तो उसके साथ ही पीकर आऊंगा। यही तो अपेक्षा का स्वरूप है। किसने कहा मुझे कि मैं चाय की अपेक्षा रखूं। अपनी बात करके वापिस क्यों नहीं आ जाता। यदि उसने चाय के लिए पूछा ही नहीं तो क्या होगा? मेरे अहंकार को ठेस लगेगी। आहत हो जाएगा। मन में क्षोभ होगा। चाय यदि पिला भी दी तो प्रसन्नता नहीं होगी। यह तो सोचा हुआ ही था। रास्ते चलते दुःख को न्योता देना ही हुआ। न चाय में दुःख है, न पिलाने वाला दुःखी कर रहा है। व्यक्ति स्वयं के मन में ही अपेक्षा पालकर सुखी-दुःखी होता रहता है। सुख-दुःख दोनों ही वास्तविक नहीं हो सकते। हमारी स्वयं की धारणाओं पर आधारित होते हैं।

आप जीवन में इस अपेक्षा का विस्तार भी देख सकते हो। जिस व्यक्ति से आप नाराज होकर दुःखी हुए, उसके प्रति नफरत पैदा हो सकती है। द्वेष जाग्रत हो सकता है। वह आपको स्वप्न में भी दिखाई पड़ सकता है। जैसे-जैसे आपके भीतर की पाशविक वृत्तियां आपके विचारों से जुड़ेंगी, वैसा-वैसा स्वरूप आपकी प्रतिक्रियाओं का उभरता चला जाएगा। हमें यह तो स्वीकार कर ही लेना चाहिए कि मनुष्य-शरीर में आने से पहले हम अनेक जन्म पशु रूप में ले चुके हैं। हमारे संस्कार भी हमारे साथ इस जन्म में रहेंगे। बस, निमित्त पाने की देर है।

gulabkothari@epatrika.com

काव्यांजलि...

यह पतंग भी क्या पतंग है

अजय अनुरागी

यह पतंग भी क्या पतंग है!
उड़ने का साहस चुनती है।
लोहा लेना सिखला देती
कागज से जो खुद बनती है।।

संग हवा के बढ़ जाती है
ठुमकी दे दो चढ़ जाती है
कागज की पतली कोरों से
तलवारों सी लड़ जाती है।

अपने बल पर इठलाती वह
अपनी डोरी पर तनती है।।
छोड़ धरा ऊपर जाती है
फर फर फर फिर गाती है

हल्की फुल्की काया उसकी
भारी भरकम हो जाती है।
सूरज से बातें करती है
सिर्फ हवाओं की सुनती है।।

गोत लगा हिचकोले खाए
डोर छूट हाथों से जाए
नील गगन की चढ़ी अटारी
अपने संग उड़ा ले जाए।

उड़न खटोले में बैठी वह
धरती को कब,
क्या गिनती है?

पतंगें और बच्चे

रंगहीन आसमान को
रंगीन बनाते हुए
उड़ रही हैं पतंगों की परियां
पतंगों को पकड़ने के लिए
उड़ रहे हैं बच्चे आसमान में
नाप रहे हैं धरती को
नन्हे कदमों से
छज्जे- छतों को फलांगते हुए
गलियों - सड़कों को
अपने कंधों पर टांगते हुए
भाग रहे हैं पतंगों के पीछे
बेझिझक, बेहिसाब।

कहानी...

निमेष आज कई पतंगें काट बेहद मगन था। उधर बिटिया उसकी चिरौरी कर रही थी, 'पापा अब मैं पतंग उड़ाऊंगी।' और निमेष उसके नन्हे हाथों में चरखी थमा पतंग को हाथों से ऊपर थाम उड़ाने लगा।

बांहों में जिंदगी सिमट आई

रेणु गुप्ता
patrika.com

आज मकर-संक्रांति है। फिजा में 'वो काटा... वो काटा...' की आवाज के साथ-साथ कानफोड़ू फिल्मी गाने गूंज रहे थे। हर ओर बेपनाह खुशी का आलम था, लेकिन मणिका के भीतर सन्नाटा छाया हुआ था। पंद्रह बरसों पहले की मकर संक्रांति वह कभी नहीं भूल पाएगी। उस दिन का एक-एक लम्हा उसे आज तक यूं याद था, मानो वह कल की ही बात हो।

अंतर्मन में विगत मानो कतरा-कतरा आंखों के सामने तैरने लगा। वो भी मकर संक्रांति का ही दिन था। सुबह से दोपहर हो आई थी, पति निमेष और सात बरस की बिटिया अन्नी को छत पर पतंगबाजी करते हुए। उसने निमेष और अन्नी के पसंदीदा पकवान दाल की पकौड़ी, गाजर का हलुआ, तिल के लड्डू और गुड़-मूंगफली की चिक्की बनाकर सीढ़ियों से निमेष और अन्नी को आवाज दी, 'निमेश... अन्नी नीचे आ जाओ। खाना बन गया है',लेकिन ऊपर कोई सुनवाई नहीं हुई। वह तनिक झल्ला कर ऊपर गई और दोनों को पुकारा, 'निमेष भई, नीचे चलो न, सब कुछ बन गया है।'

'मणिका प्लीज, सब कुछ ऊपर ही ले आओ ना। देखो न, वो लाल रंग की पतंग से पेच लड़ा रहा हूं। प्लीज... ।' निमेष ने उसकी मनुहार की और वह उसे मना न कर सकी। तीनों ने छत पर स्वादिष्ट पकवानों का लुत्फ उठाया। दोपहर ढलने को थी। निमेष आज कई पतंगें काट बेहद मगन था। उधर बिटिया उसकी चिरौरी कर रही थी, 'पापा अब मैं पतंग उड़ाऊंगी।' और निमेष उसके नन्हे हाथों में चरखी थमा पतंग को हाथों से ऊपर थाम उड़ाने लगा। अपनी पतंग को ऊपर उड़ते देख अन्नी बेहद आनंदित थी। तभी मणिका उससे बोली, 'बिट्टो, अब नानी के घर चलकर पतंग उड़ाना। नानी का कई बार फोन आ चुका।' तीनों तैयार हो कर मणिका के मायके जाने के लिए बाहर आ गए और निमेष ने अपनी मोटर साइकिल स्टार्ट की।

'पापा... पापा... मैं आज आगे बैठूंगी। मुझे उड़ती हुई पतंगें देखनी हैं।' 'ठीक है बेटा, बैठ जाओ।'

कुछ ही पलों में बाइक हवा से बातें करने लगी और अपने सामने आसमान में पतंगें उड़ती देख अन्नी खुशी से चहकने लगी, 'पापा... वो देखो, मिकी माउस वाली हरे रंग की पतंग कितनी सुंदर है।'

'हां, बिटिया, बहुत प्यारी पतंग है।'

'पापा, मुझे भी बिल्कुल ऐसी कार्टून वाली पतंगें चाहिए।' अन्नी ने ठुनकते हुए कहा। 'ठीक है, बेटा। चलो, अभी दिलवा दूंगा।' 'हे... मेरे पापा वर्ल्ड के सबसे अच्छे पापा हैं, लव यू पापा,' कि तभी अगले ही लम्हे अन्नी की चीख हवा में गूंजी। निमेष और मणिका की नसों में खून बर्फ हो गया। उनकी लाडली लहू-लुहान गर्दन के साथ नीचे झूल गई। उसका गला वहां उड़ती एक पतंग के मांझे से कट गया था। आनन-फानन में निमेष पास के अस्पताल पहुंच गया, लेकिन अन्नी का अत्यधिक खून बह गया था। डॉक्टर्स कुछ न कर पाए।

मणिका और निमेष बेबस अपनी आंखों के सामने अपने जिगर के टुकड़े को धीमे-धीमे मौत के मुंह में जाता देखते रहे। अस्पताल में तीन दिनों तक जिंदगी और मौत के बीच झूलते आखिरकार डॉक्टर्स ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया। अन्नी की जिंदगी की पतंग कट गई। ठीक उसी वक्त अस्पताल के दूसरे छोर पर दस बरस का दीपू अपने हृदय में गंभीर खराबी की वजह से मौत से लड़ रहा था। उसे फौरन हृदय प्रत्यारोपण की आवश्यकता थी। अस्पताल के एक सीनियर डॉक्टर ने अन्नी के माता-पिता से अनुरोध किया, 'अगर आप अन्नी का दिल हमारे एक हार्ट पेशेंट दीपू को दान दे दें तो आपकी बिटिया दीपू के रूप में हमेशा आपकी आंखों के सामने रहेगी।'

भरे हृदय और भीगी आंखों से उन्होंने अपनी सहमति दी और उससे संबंधित औपचारिकताएं पूरी की।

सफल हृदय प्रत्यारोपण के कई दिनों बाद आज पहली बार मणिका ने भावविह्वल हो दीपू को अपने कलेजे से लगा लिया। अपनी अन्नी की धडकनें महसूस कीं। उसे लगा, उसकी अन्नी, उसकी जिंदगी, उसकी बांहों में सिमट आई। बरसों से कलेजे की गहराइयों में सांप की तरह कुंडली मारे बैठा दर्द उसकी आंखों की राह बह निकला था।

खारे मोती झरते रहे, लेकिन अंतर्मन में टीस भरा उछाह ठाठें मारता रहा। वह एक बार फिर जी उठी थी।

क्लासिक पुस्तक...

भेंट हुई, वार्त्ता हुई, 'भेंट-वार्त्ता' न हो सकी

आज मनोहर श्याम जोशी की ज्यादा पहचान 'कसप' और 'कुरु कुरु स्वाहा' जैसे उपन्यासों और 'हम लोग' तथा 'बुनियाद' जैसे धारावाहिकों की पटकथा के लेखक के रूप में है। लेकिन मैं उनकी जिस एक कृति का सबसे ज्यादा प्रशंसक हूं वह है 1983 में प्रकाशित उनकी साक्षात्कार पुस्तक 'बातों-बातों में।' इस किताब में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और बाबा नागार्जुन के दो लंबे साक्षात्कारों के अलावा अमृतलाल नागर, हृषिकेश मुखर्जी, इंदिरा गांधी, पी.सी लाल (एयर चीफ मार्शल) और सैम मानेकशा से साक्षात्कारों के साथ-साथ एक लंबा और बेहद दिलचस्प लेख दिल्ली के साहित्यकारों पर है। याद किया जा सकता है कि जब ये साक्षात्कार लिए गए थे तब आज जैसी तकनीकी सुविधाएं नहीं थीं, इसके बावजूद जोशी जी ने लंबी मुलाकातों को जिस प्रामाणिकता के साथ और अपने अभिव्यक्ति कौशल से चित्रात्मक बनाते हुए प्रस्तुत किया है उसका सुख इन्हें पढ़कर ही लिया जा सकता है। हजारी बाबू से लिए गए इंटरव्यू का वर्णन 'भेंट हुई, वार्त्ता हुई, मगर भेंट-वार्त्ता न हो सकी' शीर्षक से यहां है और यह वर्णन भी बहुत रोचक है। हजारी बाबू और नागार्जुन से लिए गए साक्षात्कार एकदम अलग-अलग स्वाद देने वाले हैं। यहां इन दोनों बड़े लेखकों के व्यक्तित्व और सोच को समग्र रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'राजधानी के सलीब पर कई मसीहे चेहरे' में दिल्ली के तत्कालीन लगभग सभी प्रमुख लेखकों की जबरदस्त टांग खिंचाई है। इस लेख में साक्षात्कार का थोड़ा-सा पुट है। बिना किसी हिचक के कह सकता हूं कि अपनी भाषा में साक्षात्कारों की ऐसी कोई अन्य किताब नहीं है। यही इसे क्लासिक बनाती है।

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
लेखक व आलोचक

लघुकथा...

कटी पतंग

चांदनी बस में बैठकर मुंबई पहुंच चुकी थी। आज उसके चांद ने उसे साथ रहने के लिए गांव से बुलाया था। दिनभर समंदर के किनारों उसका इंतजार करती रही।

अचानक उसने आसमान की ओर देखा एक पतंग कट कर उसकी तरफ आ रही है। कुछ बच्चे उसको लपकने के लिए दौड़ रहे थे। जैसे ही जमीन पर गिरने को हुई उसे एक साथ कई हाथों ने नोंच लिया। कटी पतंग की दशा देखकर वह मन ही मन बुदबुदाने लगी, 'मैंने अपना घर छोड़कर कहीं गलत तो नहीं किया। वह इधर-उधर नजर दौड़ाती रही। चांद उसे दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। वह फोन मिलाती तो आवाज आती, ये नंबर अभी सेवा में नहीं है। 'सुबह तक सेवा में था अब क्यों नहीं। कहीं चांद बदल तो नहीं गया...।' वह फिर उदास मन से बुदबुदाई।

सूरज डूबता जा रहा था। उसके चांद का कोई अता-पता नहीं था। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और गांव के लिए आखिरी बस छूट न जाए, वह बस स्टैंड की तरफ दौड़ पड़ी।

गोविन्द भारद्वाज

भारत की पहली महिला गायिका...

गौहर को विरासत में मिला गायन का हुनर

गौहर जान

गौहर जान देश की पहली व्यावसायिक गायिका हैं, जिनकी आवाज को रिकॉर्ड किया गया। 8 नवंबर 1902 को उन्होंने पहली रिकॉर्डिंग की। उनका योगदान भारतीय संगीत और रिकॉर्डिंग उद्योग के इतिहास में मील का पत्थर है। उनका वास्तविक नाम एंजेलिना योवर्ड था।

गौहर भारत की पहली रिकॉर्डिंग सुपरस्टार थीं। वे 1900 के दशक की शुरुआत में ही एक गायिका और नर्तकी के रूप में प्रसिद्ध हो गई थीं। उन्होंने ग्रामोफोन कंपनी के लिए हिंदी, बंगाली, तमिल, फ्रेंच, अंग्रेजी सहित 10 से ज्यादा भाषाओं में 600 से ज्यादा गाने रिकॉर्ड किए। गौहर ठुमरी, दादरा, कजरी, भजन जैसी शैलियों में माहिर थीं। वे असाधारण प्रतिभा और शाही अंदाज के लिए जानी जाती थीं। ग्रामोफोन कंपनी द्वारा रिकॉर्ड किए उनके गाने बहुत लोकप्रिय हुए। उस जमाने में उनकी तूती बोलती थी और अंदाज पूरी तरह अमीरों वाला था। वे महफिलों में जाने के लिए वे अपनी निजी ट्रेन का इस्तेमाल करती थीं और अपनी कला के लिए मोटी फीस लेती थीं। वे एक गाने को रिकॉर्ड करने के लिए 3,000 रुपए तक का शुल्क लेती थीं, जो उस दौर में एक बहुत बड़ी राशि थी। वह शानदार जीवन जीती थीं। उनके पास सोने-चांदी के बर्तन और जेवर थे और वह महंगी कारों की शौकीन थीं।

उनका जन्म 26 जून 1873 को आजमगढ़ में हुआ था और 17 जनवरी 1930 को मैसूर में उनका निधन हो गया। गौहर जान की मां विक्टोरिया भी एक प्रशिक्षित गायिका और नर्तकी थीं। गौहर ने गायन और नृत्य का हुनर विरासत में अपनी मां से ही पाया। उनके माता-पिता के अलगाव के बाद, मां-बेटी ने इस्लाम धर्म अपना लिया। विक्टोरिया मलका जान बन गईं और एंजेलीना गौहर जान। उनकी मां उन्हें 1883 में कोलकाता ले आईं, जहां गौहर ने अपनी संगीत और नृत्य की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। उन्हें विशेष रूप से ठुमरी और दादरा जैसी उप-शास्त्रीय शैलियों को लोकप्रिय बनाने के लिए जाना जाता है। उन्होंने इन शैलियों को दरबारों से निकालकर आम लोगों तक पहुंचाया। उनके जीवन पर आधारित कई पुस्तकें लिखी गई हैं और एक मराठी नाटक भी बना है।

बोधकथा...

तकदीर में लिखा

एक गुरुकुल था। वहां पर सभी शिष्य अनुशासन से रहते थे। पढ़ते थे और तरह तरह के खेल भी खेलते थे। गुरुकुल में एक दिन चर्चा के दौरान गुरु सत्येंद्र नाथ अपने शिष्यों को बता रहे थे कि छात्रों यह जीवन एक अनोखा चित्र है। इस जीवन में तीन चीजें बहुत उलझी होती हैं, दिल, दिमाग और किस्मत। दिल कुछ चाहता है। फिर दिमाग उसे पाने के लिए रास्ता तलाश करता है, पर होता वही है जो तकदीर में लिखा होता है। सुबोध नामक युवक को यह बात समझ नहीं आ रही थी। गुरुजी उसे एक फलदार बगीचे में लेकर गए। वहां पर एक बंदर जामुन के पेड़ पर चढ़ाई करना चाहता था, लेकिन बागबान का मोटा डंडा उसे कुछ भी नहीं करने दे रहा था।

एकाध बार उसने प्रयास किया मगर विफल रहा। भूख बढ़ती जा रही थी।

तभी उस बगीचे में एक बुजुर्ग केले का गुच्छा लेकर आए और बंदर के सामने रख दिया। बंदर की खुशी का पारावार न था। उसने खुशी-खुशी हाथ आगे बढ़ाकर और छीलकर, छक कर, गरदन हिलाकर केले खाए। यह प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर सुबोध ने गुरुजी की बात को स्वीकार किया।

माइंड गेम...

पतंग

नीचे दिए लेखकों की पतंग पर कविताएं तलाशिए।

1. संजय चतुर्वेदी
2. नील कमल
3. मनोज शर्मा
4. राजकुमार केसवानी
5. नेहा अपराजिता
6. ज्योत्स्ना मिलन
7. शंकरानंद
8. उद्भ्रांत
9. नंद चतुर्वेदी
10. शरद रंजन शरद
11. अनिरुद्ध उमट
12. अरुण देव
13. विनय सौरभ
14. हरि मृदुल
15. अशोक कुमार पांडेय
16. बाबूषा कोहली
17. प्रभात
18. नरेश मेहता
19. राकेश रंजन
20. आलोक धन्वा

1.तीन तिरछी पट्टियों वाली पतंग 2.एक चिड़िया 3.म्यूजियम में एक पतंग थी 4.चरखील 5.कटी पतंग 6.पतंग उड़ रही थी 7.ये दिन और ये पतंग 8.पतंग 9.आशा और उमंग की पतंग 10.गदबेर में पतंग 11.अली मियां 12.आकाश, पतंग और धरती 13.बीच की उम्र 14.तो कैसा रहे 15.धूल, गंध और पतंगें 16.भरोसा 17.अटके काम 18.पताका 19.चांद में अटकी पतंग 20.उनके रक्त से ही फूटते हैं पतंग के धागे।

शॉर्ट रीड — *एक अच्छा साहित्य मनुष्य की आत्मा को झकझोर देता है और उसे नई दृष्टि देता है- रवींद्रनाथ टैगोर*